

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा सीरीज नंबर ५

विश्वहितवोधिदायक श्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः

सुगृहीतनामधेय श्रीमन्नेमिचंद्रसूरीश्वरगुम्फितं

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम्



संपादक

आचार्य विजयक्षमाभद्रसूरिः

प्रकाशक

शाह् रायचंद गुलाबचंद मु० अच्छारी, पोष्ट भिलाड (गुजरात)

प्रिक्तम मंत्रत् १९९७

गीरमं. २४६१

द्रमवी मन १९४०

Published by Shah Raychand Gulabchand, Aachari Station Bhilad, B. R. & C. I. Ry.

Printed by Ramchandra Yasa Shedge, at the Niranya Sagar Press, 26-28,
Kolbhat Street, Bombay.

प्राप्तिस्थानम्—आचार्य श्रीविजयदानसूरीश्वर जैनग्रन्थमाला गोपीपुरा-शु० सुरत. पोस्टेज पेकिंग खर्च चार आन

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा ग्रन्थाङ्क नं. ५
श्रीमन्नेमिचन्द्रसूरीन्द्रगुम्फिनं

कुसुम-
पूजायां
कुसुम-
शेखरकथा

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम् ।

विश्वहितवोषिदायकश्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः ।

जयइ जुगाइजिणिंदो परिविलसिरसभवसरणचउरुवो । वागरिउं पिव मुहृदाणसीलतवभावणाधम्मै ॥ १ ॥ सो
जयइ जिणोणंतो देसणंदंसणुणो सया जत्तस । केवलरविकिरणा इव तममवर्णिता विग्रमंति ॥ २ ॥ सिरिवद्धमाग-
सामिं नमामि कणयाभदेहदित्तीए । कुणमाणं पिव भुवणं सधंपिय अत्तणो तुळं ॥ ३ ॥ सम्मत्तनिबलत्तं किरियाए जीए
होइ तं कहइ । जह निबंभि हु पट्टु सिद्धिसाहयं तं करेभि अहं ॥ ४ ॥ तो आह तिजयनाहो नरिंद निसुणेषु तत्त
निबलया । जायइ जिणपूयाए भत्तीए तिसंज्जविहियाए ॥ ५ ॥ जिणपूया पावहरी जिणपूया जायए भवंतकरो । जिण-
पूया सघाणवि कहाणमणीण भंडारो ॥ ६ ॥ अवहरइ दरिइत्तं पणामए तिजयलच्छिविच्छदं । जिणपूया कीरंती पणा-
सए सबडुरियाइं ॥ ७ ॥ कुसुमक्खयफलजलधूवदीवनेवज्जावामत्तिम्माया । पूया जिणोसराणं सा अट्टविहा विणिहिट्ठा
॥ ८ ॥ वरपरिमलेहिं कुसुमेहिं पूयए जो जिणे सवहुमाणं । पूयापत्तं जायइ जिणप्पसाया गुरुणवि सो ॥ ९ ॥ जो
जिणपयपउमपुरो पूयत्थं खिवइ अक्खए खियं । सासयसोक्खे मोक्खम्मि अक्खओ होइ सो पत्तो ॥ १० ॥ एक्के-
णावि फलेणं जिणरत्तो जो उवायणं कुणइ । ता तप्पसायओ लहइ सो धुनं सबसिद्धिसिहिं ॥ ११ ॥ पत्तगएण जिणिंदं

जो सच्छस्सावसीयलजलेण । पूरुं सो तेणेवय पक्खालइ नियमलं नियमा ॥ १२ ॥ जो घणसारं अग्रं च दहइ
विणअंगधूवणनिमित्तं । सो घणसारो जायइ अगुरु घणवो वि जरसा पुरो ॥ १३ ॥ जो मंगलपईवेण पूरुं सभिसा-
लजिणचंदं । सो दीवसिद्धा वज्जलुती सग्गसिद्धिं रमइ ॥ १४ ॥ जे निरवज्जं भोजं नेवज्जे जिणवरस्सं जच्छंति ।
भोचूण ते अ(S)णवज्जाइं ल(भ)वसुहाइं सिवं जंति ॥ १५ ॥ जो सुहवासिद्धिं जिणेसरस्स पूरुं पायसयवत्तं । सो सुहवासं
मि सया सिवालए सासओ वसइ ॥ १६ ॥ एयाओ अट्ठवि कुणइ जो सया भत्तिवभरो भवो । सो अट्ठकम्मगुको
संपज्जइ सासओ सिद्धो ॥ १७ ॥ सधाहिंवि असमत्थो एकाएवि पूरुं जइ जिणं जो । ता सोवि भावंसुद्धीए
पावए सिद्धिसंगं ॥ १८ ॥ एयाव राय कहियाव दुब्भ पूयाव एय जिणुत्तम्मि । भणइ निवो पणयपट्ट सीमंतयरइय-
करकोसो ॥ १९ ॥ जयनाइ साहसु मां मण्ठकोज्जालावलगणस्स । दिट्ठते अट्ठाणवि पूयाणिण्हि कयपसाया
॥ २० ॥ जंपइ जिणेसरो सुणसु राय कयअप्पमत्तमणविच्ची । संपइ साहिज्जंते दिट्ठते वट्ठ पूयासु ॥ २१ ॥ इह
दुग्गवेव दुग्गयपढाय दानरय चंदेयक्खा । सोहससार अकिंनण रणसूर धर्णावहा पुरिसा ॥ २२ ॥ होउं कमेण एके-
कपूयकरणेण गरयरयाणो । सिरिंदुसुमसेहरखयकिंत्तिफेल्सारजलसारा ॥ २३ ॥ सिरिंधूवसुंदरो तह भुवणपई-
वो पईवसिहवत्तो । भुवणप्पमोयगो गंधंबधुरो सिवपुरिं पत्ता ॥ २४ ॥ कुलयं । कुसुमेहिं जेण पूरुं जिणेसरं पाविया
महारिद्धी । तं कुसुमसेहरकणं कहिज्जमाणं निसामेइ ॥ २५ ॥ पुरमत्थि एरियमहापद्दाविरायंतरयणपायारं ।
रयणप्पायारं नाम गुरुविमाणं सुरपुरं व ॥ २६ ॥ रयणीसु जत्थ ससिरयणचंदसालागलंतसलिलेण । भवणाइं
नीरयाइं भवंति मुणिमाणसाइं व ॥ २७ ॥ तत्थत्थि दत्थिहयरहजोहोहपसाहियाहियसमूहो । विलसिरयणाभरणो
रयणाभरणोत्ति नरनाहो ॥ २८ ॥ आयधियासिपडिफलियतरणिकिरणवलीकलियकाओ । पयडपयावप्पसरोह जो

रणे रीण दुनिरिक्खो ॥ ३९ ॥ सवतेउत्तरुणीपहुत्तपयवीपउट्टिया जाया । तस्मत्थि द्दत्थिमंथरगदमणा रयण-
मालत्ति ॥ ३० ॥ चित्तव चित्तवासा अमुक्कपासा सक्कीयछायत्त । निययपयइय सया जा दुम्भोया मणायंयि ॥ ३१ ॥
ताणत्थि तारतारुन्नललियलायन्नपुन्नसधंणी । अंगीकयसयलकला कन्ना रयणावली नामा ॥ ३२ ॥ पीयाण सुराए
इव दिट्ठाएवि जीए होइ उम्माओ । तरुणाण विवेईणवि अविवेईणं तु का गणणा ॥ ३३ ॥ मा जत्थ जत्थ कीला-
करणकए जाइ रुवविजियई ॥ गच्छंति तत्थ परद्वमा सेवयत्त नरा ॥ ३४ ॥ कइयावि मयंकुमुही महीजुया
सा सुहासणासीणा । सियलत्तचलिरचमरालंकरिया निगया नगमा ॥ ३५ ॥ यत्ता य मत्तमहुयरनामे सिमिर-
हुमस्मि आरामे । दंढूण मयणभयणं उत्तिन्ना जा विमइ तत्थ ॥ ३६ ॥ ना नियइ रंगमं ड्यगवक्कत्तभदानगट्ठियं एहं ।
रायकुमारं मयणं व निगयं भवणगब्भाओ ॥ ३७ ॥ करकलियेकलिकमलं नियत्तवनिंयंविणीजणियमयणं । मुमि-
णिद्धमुद्धदीहच्छिजोणह्मवलीकयगगनं ॥ ३८ ॥ तं पेच्छिउं मयच्छी चित्तउ हो एम दीमइ मल्पा । अज्जमुयत्त
धरो सिंगारी चारुत्तारुत्तो ॥ ३९ ॥ नूणं पञ्चक्खोजिण एमो धम्मो द्दमाउ संजायं । जं मज्जा अणिनिमत्तं नद्धमत्ति
निरंतरायसुहं ॥ ४० ॥ पुब्बमवुप्पन्नमहापुंन्ना रायेण तीणं फलियं । वृत्तिअ अंगसंगं उमम जा पाविही बाला ॥ ४१ ॥
सच्चिय जयप्पवित्ता विलसन्तमुवन्नरयणरमणीया । जा मुद्धियत्त लहिही करगट्ठणमिमम मुहयम्म ॥ ४२ ॥ सच्चिय-
उत्तमगमणा विज्जभमरहिण सुपत्तरसजाए । रमिही इमस्म जा माणसे नया रायहंसिज ॥ ४३ ॥ इय चिंतनी जाया-
समसज्जासयेयंकंपकलियंगी । पक्खलियपया पविसइ अविइण्हं तं पलोयंती ॥ ४४ ॥ वरदाणपरंयि मनं
मुत्तुमिमा नियइ अन्नमइनेहा । इय चिंतिय कुविण्णव कामेण सरेहि पट्ठया मा ॥ ४५ ॥ मयेण नट्ठिजंती थिर-
सरलसिणिद्धवंधुरच्छीहिं । सच्चिया असरिसरुवहरियहियण्ण कुमरेण ॥ ४६ ॥ एयाए अहो रुवं मोहइ मणमवि

पसंतमोहाण । गुरु रायायत्ताणं मह सरिसाणं तु का वत्ता ॥ ४७ ॥ सोच्चिय गुरुरायधरो सोच्चिय सरसो इमाए बालाए ।
सङ्गसङ्गमं जो लिहिही दुसिणंगरागोब ॥ ४८ ॥ सो चैव चारुवन्नो पवित्तगुरुत्तसियगुणमहघो । एयाए मयच्छीए
हियए हारोब जो वसिही ॥ ४९ ॥ इए चित्तंतो संतो मयणायत्तो ठिओ कुमारोवि । सूरचरिओवि कायरनरनियर-
निवरिसणं जालो ॥ ५० ॥ धवलइ कुमरं बाला नियच्छिजोण्हाए सोवि रायसुयं । पङ्गुवरंति सिग्घं गरुया रइओव-
यारम्मि ॥ ५१ ॥ तं पेच्छरी कुमारी पत्ता पासंचि कामपडिमाए । सविणयपणामपुबं पूयं काउं समारद्धा ॥ ५२ ॥
परिपूयंती मयणं पुणो पुणो पेच्छरी कुमरवयणं । दंसइ मयणस्सव तं दइयमिमं देहि मज्झति ॥ ५३ ॥ पूयाए जाइ मयणे
तदिही निवसुण्णुरायेण । रुवंतरं वट्ठं पइक्खणं कामकुमराण ॥ ५४ ॥ पुच्छइय मयणिंयं नाम नियसहिं को वयंसि
एस जुवा । तीए कुमारयइयावहाउ नाऊण कहियं से ॥ ५५ ॥ सहि सुणसु कुसुमसुंदरनयेरे निययपयावजिय-
तरणी । कुसुमावयंसयनिवो भजा कुसुमस्सिसरी तस्स ॥ ५६ ॥ पडरगुणपवरनयरं ताण सुओ कुसुमसेहरो नाम ।
संयलकलाकलियतणू नियजोवणरमणिमहरणो ॥ ५७ ॥ भत्तस्स विणीयस्सवि नीइपरस्सावि तस्स नरवइणा ।
केणावि कारणेणं पराभवो विरइओ दूरं ॥ ५८ ॥ तं अवमाणं काऊण माणसे अद्धरत्तसमयम्मि । परिमियपरिवार-
जुओ चलिओ देसंतरे कुमरो ॥ ५९ ॥ इह पत्तो वित्रातो तुह जणएणं अणिच्छमाणोवि । गंतुं पच्चोणीए रिद्धीए
पवेसिओ एत्थ ॥ ६० ॥ संमाणिऊण भणितो मा गच्छसु वच्छ अच्छसु इहेव । जं मज्झा तुब्बा जणओ मित्तो अघंतगोरवो
॥ ६१ ॥ ठाउमणिच्छंतोवि हु निवोवरोहा इहट्ठिओ स इमो । अणमिमयं पि न गरुया दक्खिन्नपरा परिहरंति ॥ ६२ ॥ तं
सोउं रायसुया चित्तइ जुत्तो इमंसि अणुराओ । नवरं एसो रत्तो नो वा संपइ न याणामि ॥ ६३ ॥ कुमरेणुत्तो थइयावहो
अरे मंतियं किमेयाए । तेणुत्तं निवकत्रासहीए तुह पुच्छियं चरियं ॥ ६४ ॥ कुमरनिरिक्खणलुद्धा निवत्तियकामपडिम-

पूयावि । तन्मवणपेच्छणलला महइ वेळं ठिया वाला ॥ ६५ ॥ चारं चारं चलसुत्ति सोविट्ठीहिं विन्नविजंती । पक्क-
लियकमं तं पेच्छिरी गया जाणमारुहिं ॥ ६६ ॥ गच्छंती कुमरेणं पलोइया सोवि तीण सच्चिविओ । अपुरत्ते जंताइं
घरिं को तरइ नेत्ताइं ॥ ६७ ॥ नयणपहमइफंताए तीण अरइ कुमारमणुपत्ता । लहइभिय अचयासं कइयावि अणिट्ठ-
भज्जावि ॥ ६८ ॥ रंभंषि तविओए उज्जाणं पिइवणं वुक्कसरं । कलयंतो कुमरो तुरियं तुरयमारुहिय संचलिओ
॥ ६९ ॥ नयरपवलिं पविट्ठो सुणइ समावलियलोयहलवोलं । नियइ य गुरुतरुवरपुरमालारुइं मभयलोयं ॥ ७० ॥
किमिमंति कयवियक्को पेच्छइ सुत्रासणं गयाहिवइं । पाइतं पासाए मारंतं तुरय-नर-करहे ॥ ७१ ॥ चरणागरिसिय-
संकलसरेण नियडयखडक्खडाए य । गलगज्जिण य जणं जो जाणावन्तो व थावेइ ॥ ७२ ॥ मा महमारपंत्ता भूमी
मुच्छिज्जउत्ति कलिउं व । सिंचंतो गुरुफुकारसिफारासारसलिलेण ॥ ७३ ॥ चलकन्नवालचालियससहरसिय-
चारुचमरजुयलेण । जो वीयइ दंतसुहासणट्ठियं रायलच्छि य ॥ ७४ ॥ दंहुं सुहासणट्ठियनिवतणयं थाविओ
करि तो । सा ज्झंपाए समुत्तिन्ना नियडेणत्ये थिरो को वा ॥ ७५ ॥ पीणपओहरगुरुतरनियं चभरमंथरमगइए ।
नासिउमतरंती सा गहिया करिणा कुरंगच्छी ॥ ७६ ॥ दूक्खित्ताए पवणप्सारिओ तीण कुंनलकलाओ । समयगय-
कडतड्डुणीणभसरनियरोव रेहेइ ॥ ७७ ॥ वियसियसिरीसकुसुमोहसमहियफ्फासलसेणं व । गाइं गणण निय-
करदंडेणालिगिया वाला ॥ ७८ ॥ करिणा हरिणंकुही मुसुही विहिया विहाइ गयणयले । नियकुंभतत्थगण व
पीणतं दहुक्कमेण ॥ ७९ ॥ मा मह भणण एसा मुच्छिज्जउ इय विभाविकुण करी । तं नीयइव चलकन्नवालजुयताल-
वंदेहिं ॥ ८० ॥ तं दंहुं रायसुओ झडित्ति मुत्तुं तुरंगमं वेगा । उट्ठाइओ गयं पइ हंफंतो कफमसरेण ॥ ८१ ॥ रे रे
दुड्ड गयाहम मोत्तुं नारिं वलेसु मह समुहं । जइ सत्तमत्थिय इय सुयकुमरालावा भणइ कुमरी ॥ ८२ ॥ मह कीडिय-

कप्पाए कळे भुवणोवयारकरणखमं । नररयण मा विणाससु अत्ताणं करिकयंताओ ॥ ८३ ॥ सुयंकुमरीविभवणो सो जंपइ तंभि भुवणगब्भम्मि । वससि तओ रक्खिस्सं चइउं पाणेवि तं नियमा ॥ ८४ ॥ मह करगयावि चाट्ठणि करेइ कुमरस्स इय विभावेउं । कुविण व करिणा सा खित्ता दूरं गयणमग्गे ॥ ८५ ॥ विज्जाहरिं व गयणे गच्छंति तं पलोइरो कुमरो । जाओ पमत्तचित्तो तो संगहियो गइं देण ॥ ८६ ॥ मिलसु नियवल्हाए तुमंभि इय चित्तिउं व कुविण ॥ करिणा कुमरो वि नहे खित्तो तीए पंडतीए ॥ ८७ ॥ मरिही एसा एव्हइरु रायनिवडियत्ति कलिऊण । परिसत्ता करुणाए नेहेण व कुमरो तेन सा गाढं ॥ ८८ ॥ आलिंगियाए तीए पढइ अहो निवसुओ निराहारो । थीफासलालसाणं अहो गइंए न संदेहो ॥ ८९ ॥ तेण सा गाढं ॥ ९० ॥ आलिंगियाए तीए पढइ अहो निवसुओ निराहारो । थीफासलालसाणं अहो गइंए न संदेहो ॥ ९१ ॥ तो पलवंतो लोगो अतरंतो एरंथतरंभि वेगागएण नहयरनरेण एक्केण । तहुगमवि अवरंडिय नरनयणागोयेरे नीयं ॥ ९२ ॥ तं सोउं आडलितो चलितो राया निरिक्खणे लगिउं खयरमग्गे । गंतूण कहइ रत्तो कुमारकुमरीणमवहरणं ॥ ९३ ॥ अपत्तत्तप्पडत्ती दुरयरमहिं पलोइउं बलितो । रुयइ रुयावित्ताणं । पेरियतरलतुरंगो परियडइ पुरस्सं चउपासं ॥ ९४ ॥ हा वच्छे हा वच्छे हहा अतुच्छे हहा विणयदच्छे (क्खे) । हा सुकुमाले बाले अवंहरिया यलोगो सहमागंतुं गुरुसरेण ॥ ९५ ॥ हे देव निहतो तं बालं पुत्तं तथा हरेऊण । कंनंभि अचहरंतो खंयंभि खारं खिवसि खुइ ॥ ९६ ॥ हा केण तं कहसु ॥ ९७ ॥ हे देव निहतो तं बालं पुत्तं तथा हरेऊण । कंनंभि अचहरंतो खंयंभि खारं खिवसि खुइ ॥ ९८ ॥ अतेउरपउरजेणं राइणीं मह सहा वि सुत्रा तुह विरहे कुसुमसेहरकुमार । एरिसडुह (दे) सणत्थं पवसंतो तं मए धरिओ ॥ ९९ ॥ एवं पलवंताणं ताणं तइए दिणे तरणिउदये । तह तथा तहिं रुन्नं । जह नयणजलासारो वित्थरितो वरिसयालोव ॥ १०० ॥ पणंतो य महीवइणो सखेयरो निवसुयावि तं नमइ । आपुच्छिय खयरविमाणगेणं पत्तो कुमरीजुतो कुमरो ॥ १०१ ॥ रायाह कुमर साहसु हरणागमाणा निययडुत्तं । तो तं कुमराणाए कहिउं कुसलाइं ताइं निविट्ठाइं निवपुरतो ॥ १०२ ॥ रायाह कुमर साहसु हरणागमाणा निययडुत्तं । तो तं कुमराणाए कहिउं कुसलाइं ताइं निविट्ठाइं निवपुरतो ॥ १०३ ॥ देवत्थि दियवरम्मि व वेयहे गुरुगिरिम्मि मणिभवं । नयरं रहनेउरचक्कवाल नामं मणिभि-
लगो खयरचक्की ॥ १०४ ॥

रामं ॥ १ ॥ तं परिपालइ विज्ञाहराहिवो नयणवेग अभिहाणो । गह्विद्ययभरसिरिकिरिणवेगन्यरिदं अंगरुहो ॥ २ ॥
 दाहिणनंदीसरगरुयवेगवलिण तेण सबवियं । अन्नोन्नं परिसत्तं पडन्तमिदधीपुरित्तयुलं ॥ ३ ॥ अगंतरुवरमणीरमणं
 पइ रइयबुद्धिणा तेण । तहुगमवि अवहरिदं नीयं सेले विसालगो ॥ ४ ॥ तो धंभणीण विज्ञाणं भंभिउं पुरिसमाह रमणि
 सो । मं अणुरत्तं भत्तं भत्तारं सुब्बु मन्नेसु ॥ ५ ॥ तीउत्तं तं सुपुरिस भाया मह नियसहोयरसरिच्छो । ता उभयभवविरुद्धं
 तुमए नो किंपि वत्तधं ॥ ६ ॥ अवरं च न सायत्ता अहं जतो जणायदिन्निया कन्ना । वीवाहिज्जइ सेच्छा जुत्ता न भयारि-
 साणंपि ॥ ७ ॥ तुग्हारिस्सवि उत्तमकुलुभवा जइ मुयंति मज्जायं । ता वंधव अरुलीणण पावहारीण का यत्ता ॥ ८ ॥
 किं नियपियासरीराउ मह सरीरम्मि समहियं किंपि । दिट्ठं जं भाय तुमं संपइ जंपसि अवत्तनं ॥ ९ ॥ वित्थरइ
 जरा परिगलइ जोव्वणं जाइ जीवियंति । किं नाम सासयं तुह देहे जमकज्जसज्जोसि ॥ १० ॥ मुत्तंतपुरीमवसावसे
 दुग्गंधमलविलीणंमि । मह देहे किं सारं जं रायरसे तुहुफरिसो ॥ ११ ॥ एह्यंतरंमि चउनाणनायनिगपुत्तपाववुत्तंतो ।
 तबोहत्थं सिरिकिरिणवेगसूरी तहिं पत्तो ॥ १२ ॥ तेणुत्तं भो सावय किं तुज्ज कुलफमो इमो जमिमं । पारद्धं
 तुमए निदणिज्जमुत्तमनराण जतो ॥ १३ ॥ लज्जिज्जइ जेण जणे मइल्लिज्जइ निगकुलफमो जेण । कंठट्टिणवि जीए
 कुणंति न कयाइ तं सुयणा ॥ १४ ॥ किं पुत्त पिइपियामदपमुदेहिं वयं कयं हवइ जेसिं । ते इव निम्मज्जाया तुमं च
 पावप्पिया हुंति ॥ १५ ॥ अवरं च इमा भइणी सहोयरा तुह मुणेमि नाणेण । जं रयणप्पायाराहिवरयणाभरणभूवइणो
 ॥ १६ ॥ तं अंगरुहो जेहो एसावि सुया कणिट्टिया तस्स । वच्छ मए तं हरिओ निवभवणा मासमेत्तवओ ॥ १७ ॥
 कुमरीवयणविरत्ते चित्ते पिइसिक्खणेण संवेगो । लग्नो खेयरवइणो पासियवत्थम्मि रंगोउ ॥ १८ ॥ तो तेण पाय-
 जुयले लग्गेऊणं खमाविया भइणी । उल्लंभिउं कुमारं पणमिय सूरीण विन्नत्तं ॥ १९ ॥ पट्ट मोहमहाहूवे अविचेयजले

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्

॥ ४ ॥

निमज्जिरो तुमंग । नियवणवरत्ताए लद्धरिओ हं दयानिहिणा ॥ १२० ॥ परिभोगो इयराणवि पररमणीए पयच्छए नरयं । किं पुण नियभण्णीए आजम्मं पूणिज्जाए ॥ २१ ॥ ता पणु कंताए समं नियरजं अप्पिऊण जणयस्स । संगहि- गसघविरईं तुह चरणाराहओ होहं ॥ २२ ॥ ठायवं तुब्भेहि रहनेउरचक्कवालनयरम्मि । इय जंभिय गुरु कुमरी कुमरजुओ सो गवो सपुरे ॥ २३ ॥ दुग्गमवि सम्माणेवं वत्थाएरेहिं खयरवलकलिओ । इह पत्तो तुम्ह सुतो सो हं इय साद्धियं तुम्ह ॥ २४ ॥ ता ताय अहं जाओ दुप्पुत्तो तुम्ह जं मए दिन्नं । नियविरहेणं कुमरीहरणेण य दारुणं दुक्खं ॥ २५ ॥ इय जंपत्तो भणितो निवेण मा पुत्त खेयमुण्हसु । दोसो न अम्म दोण्हवि किं तु इमं दुक्कयकम्मफलं ॥ २६ ॥ पुषभवे तवचरणं कयं मए किं तु संतरायं तं । जं तुह सरिसो पुत्तो जातो हरिओ य मिलिओ य ॥ २७ ॥ जायं कन्नाहरणं कन्नाहरणं परमफाळाणं । जस्सप्पभावतो मे सुचिरेणवि पुत्त मिलिओ तं ॥ २८ ॥ इय जंपिऊण गाढं जणणाल्लिगितो सुतो तयणु । जणणीए नवो तीयवि अवरेडिय चुंविओ भाले ॥ २९ ॥ खेयरवइणा वुत्तो जणतो तं गिण्ह ताय मए रज्जं । परिवज्जियसावज्जं पघज्जं पुण अहं काहं ॥ १३० ॥ तं भणइ पिया परिणयवयस्स मज्झवि य जुज्जाए दिक्खा । काहं नाहं विरहं दण्हिं पिय तए समं जाय ॥ ३१ ॥ दोण्हंभि सम्माणं कुमरिं परिणाविऊण कुमरस्स । दिन्नं तं रज्जं तो पत्ता सघेवि वेय्थे ॥ ३२ ॥ तत्थवि अहिसिंचिय कुसुमसेहं खयरारायजम्मि । खेयरनरनाहेहिं गहिया दिक्खा गुरुसयासे ॥ ३३ ॥ पणमित्तु कुसुमसेहराया पुच्छइ गुरुं कहह भयवं । मए पुषजस्समुक्कयं जं जाओ हं खयरनत्ती ॥ ३४ ॥ आह पट् आयन्नसु रयणवईए पुरीए तं राय । कम्मयरो आसि अईवहुगओ दुग्गदेवोत्ति ॥ ३५ ॥ कइयावि नाणनिसणाभिहाणसूरीहिं भयपरिसाण । साहिप्पंतं निसुयं जिणिंदपूयद्दगं तेण ॥ ३६ ॥ तद्दहि ॥ फलकुसुमक्ख- यजलधूवदीवनेवज्जवासनिम्माया । कीरइ एसा अट्ठप्पयारपूया जिणिंदाण ॥ ३७ ॥ सघाओवि असत्तो कावं सयवत्तपसु-

हसुमेहिं । पूयइ जो जिणचंदे सो सामी हवइ सुमणण ॥ ३८ ॥ माणुसभवेवि नूणं जिणपूया पुत्रपगरिसपभावा ।
अंगपि कुसुमपरिमलमुगिरइ सयावि सत्ताण ॥ ३९ ॥ किं बहुणा भोत्तुणं असुरगरामरपट्टहरिद्धीतो । सिद्धिं पि धुवं
पावइ पाणी जिणनाहपूयाए ॥ ४० ॥ इय आयन्त्रिय चावन्नदेवउलियाजुयम्मि पत्तो सो । कीरविहाराभिहजिणहरम्मि
मणिकणयधडियम्मि ॥ ४१ ॥ जाईसरेण जं कीरपक्खिणा भणिय पुत्तजयसेणं । कारवियं नायजियधणेण बहुमाण-
सारेण ॥ ४२ ॥ जं चउदिसिपडिर्विवियपाडलकलियाहिं भमिरभमराहिं । नियइय भावरिउणो कोवारुणनयणनिय-
रेण ॥ ४३ ॥ आभाइ निरब्भनिसिप्पडिर्विवियतारतारपपरं । जं भत्तिनिभरामरविरइयसियकुसुमवरिसं व ॥ ४४ ॥
तम्मि पविसिय नायज्जिण दव्वेण गहिय कुसुमाइं । आणंदुलइयतणू पूयइ सो रिसहजिणनाहं ॥ ४५ ॥ तप्पुत्रप-
भावेणं रिद्धिं भोत्तुं भवम्मि तम्मि ततो । जातो तं खयरवई इय कहियं राय तुह चरियं ॥ ४६ ॥ तं सोउं
जाईसरणनाणविन्नायपुव्वभवचरिओ । रायाह जह पट्टहिं कहियं दिट्ठं मएवि तदा ॥ ४७ ॥ तो रयणाभरणमुणी भणइ
मुणिदं कहेह मह भयवं । किं सुयसुयाण विरहो वहुथोचदिणाणि जाओ मे ॥ ४८ ॥ आह पट्ट आरामियपुत्तो कणकिन्न-
नामगामम्मि । आसी अंड(व?)यनामो कीरसुओ गोविओ तेण ॥ ४९ ॥ तो तं अविणंत्तं कीरजुयलमचंतदुक्खियं जायं ।
करुणं कूयइ अंसूणि मुयइ मुच्छियणुकलं ॥ ५० ॥ जणएणुत्तं पुत्तय मुंचसु तणयं सुयाणभिर्णिहपि । मा पुत्तविउत्ताणं
इमाणमच्चाहियं होही ॥ ५१ ॥ तो तेणमइक्केतेसु नवमुहुत्तेसु सुयसुओ मुक्को । तो संजातो तोसो कीरीकलियस्स कीरस्स
॥ ५२ ॥ समयंतरंमि कम्मवि अवहरिया सारसीसुया तेण । तो तज्जणणि दुहियं दट्ठं सहसत्ति सा मुक्का ॥ ५३ ॥
कइयावि मासखमणे आरामे तंमि संतियं साहुं । निचंपि पज्जुवासइ भत्तिभरनिजभरो संतो ॥ ५४ ॥ भोयणकरणत्तिविट्ठेण
तेण तत्येव मासपारणए । पडिलाहितो मुणी सो सद्धासहिधेण परमन्नं ॥ ५५ ॥ तप्पुत्रपभावा सो अमरो होउं तुमं

निबो जातो । कीरजुण्णं वि भमिचं भवस्मि सयुवज्जिउं(अं) सुकगं ॥५६॥ कीरो जाओ हं किरणवेगखयराहिवो सुइं वि तु
मे । किरणावलित्तिं कजा जाया नवरं अपुत्तो हं ॥५७॥ जा अंब(ड) ण्ण हरिया सारसिया तीए सरतडे जणणी । बाणेण
लोइएणं विज्जा खवगेण रागविया ॥५८॥ पंचपरमेद्धिमंतो रिन्नो से तेण तण्ण सा सग्गे । अगरत्तसिहिं भोतु संजातो
तुह एसो पुत्तो ॥ ५९ ॥ नाहयंलच्छिणं गए दिट्ठो सगिण्ण मासमेच्चवओ । कीरएणुत्थापावोवण्ण तुह सो गए हरिओ
॥१६०॥ पडिवज्जो पुत्ततेण नयणवेगोत्ति तण्ण कल्लमाओ । समयंभि तस्स रजं दाउं दिग्खा गए गहिया ॥६१॥ नंदी-
सरवल्लिणं हरिया तुह कन्नया तओ तेण । अवयभवसयुलजियसारसियाहरणपाववसा ॥ ६२ ॥ अट्टारसन्नधियाहिं
अट्टारसवच्छराणि सुयविरहो । जाओ ताद रिपसतिगं सुगाए साह अप्पपावेण ॥ ६३ ॥ ता सुगुणि कोउउप्पाइयं पि इय
तुक्खयायगं पावं । रागहोसवसकयं तं पुण वियरए भवोहहुइं ॥६४॥ इय कहियं तुह चरियं तो रागरिसीवि जाइसर-
णेण । तं नाउमाह एवं जह पटु तुब्भेहिं कहियंति ॥ ६५ ॥ नवदिक्खिगयुगिजुत्तं नगिऊण गुरुं निबो कइवि दिवसे ।
भोतुं खेयररजं रयणप्पायारमणुपत्तो ॥६६॥ नीईए ततथ पालइ रजं शुंजइ पियए साह भोए । निगंभि कुणइ तित्थप्पभावणं
पूयइ जिणिंदि ॥६७॥ दंडिप्पवेसिणं कइयावि तु जणयमंतिण राया । नमिउं विन्नत्तो देव तुह पिया गिणिहरी दिक्खं ॥६८॥
रजापिहोत्ति केणइ हणिजिही एस इय विभावेउं । पिउणावमानिओ तं न चेव पटु रागहोसेहिं ॥६९॥ ता तुम्हे पिउरजस्सि-
रिमाणंतु अलंकरए पटुणो । कारणकयावमाणणविसए खेओ न जुत्तो जं ॥ १७० ॥ तं निसुणिऊण राग्माणिऊण तं तेण
संजुओ राया । ततथ गओ पयपणओ पिउणा आळिंनिओ गाढं ॥ ७१ ॥ संभासिय ससिणेहं निवेसिओ नियपए तओ
रक्षा । गीयत्थयुरुसासे रिद्धीए कयं वयगहणं ॥७२॥ पालई सो रजातिगं नरखेयररायरइयपयसेवो । नंदीसाराएठाणेसु

जाइ सासयजिणे नमिं ॥ ७३ ॥ उवभुंजिऊण रज्जेसु तिसुवि लच्छि पभूयकालं सो । रयणावलीसुयं कुसुमपरिमलं
नाम ठविय पए ॥७४॥ गुरुनयणवेगपासे घेनुं दिक्खं कलत्तकलिण्ण । उप्पन्नकेवलेणं पत्तं मोहरम्मि नखइणा ॥७५॥
कुसुमेहिं जहा रइया पूया एण भूमिनाहेण । परमाणंदसुहृत्थं कज्जा अन्नेण वि तहेव ॥ ७६ ॥ -ॐ- कुसुमपूजा ॥-
५ ५ ५ ५ ५ एतो हु कुसुमपूजाफलमि तिरिउत्तमतेहो कहिओ । अगवपूजा रइ अगगभित्तिस निग्गेह ॥ ७७ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५

मसिणियधुसिणरसेणव अरुणारुणरयणभवणकिरणेहिं । रंजंती दिसिचयणाइं कित्तिकलिया पुरी अलिय ॥७८॥ मणि-
कुट्टिमसंकंताहिं जीए निसि निण्हिणीउ मुद्धातो । विलयाओ वेळविज्जंति मोत्तियाइं ति ताराहिं ॥ ७९ ॥ ससहरज्जो-
ण्हाभरसरिसकित्तिपच्चभारभरियभुवणययलो । निम्मलकित्ती नामेण नखइं विलसए तथ ॥१८०॥ चामररेणेकेणं इय-
रेणुवभामियासिजणिण । फरणव चिइणं धरिण्ण रणंमि जो सहइ ॥ ८१ ॥ पट्टमहादेरीपयपट्टत्तमुहाइ तत्त मिय-
सीला । लीलायमाणदेहा कित्तिसिरीनामिया दइया ॥८२॥ अशब्दुयस्तरुवं जीए रुवं पलोइं दूरं । अरइं परिगलिया
रइं वि सह तरुलोण ॥८३॥ तीए समत्थि गुरुअत्थिसत्थपविउन्नअत्थवित्तारो । पुत्तो अक्खयकित्ती नामेणं कम्म-
णावि सया ॥ ८४ ॥ तेयस्सी दित्तिपट्टुइं ईसरसिरसेहो ससहरोण । पत्तमरसियमइं सया मुत्ताहुय जो सहइ ॥ ८५ ॥
निम्मलकलाकलावं परिकलयंतत्त तत्त पुणरुत्तं । जंति दिणाइं निरंतराणिउपयसेणापमत्तस ॥ ८६ ॥ सहित्तो कयाइ
समवयसिगारियरायउत्तमित्तेहिं । आरुहिय तुरंगं तुरयवाहियालीण संपत्तो ॥८७॥ पुत्तमभिमारिणाहिं (?) चालिय तुरयं
निवारिउं मित्ते । दाऊण कसायायं सो मुक्को तेण वेगेण ॥ ८८ ॥ विरइगगुरुवरवेओ हओ नत्तो जाप तुरदेमन्नि ।
मित्तेहिं ततो तुरया कुमरपहे पेरिया तुरियं ॥८९॥ महम्मगम्मि महीण इति इमे नो नहत्ति कलिउं । सत्तसणि मगुप-
इतो कुमरतुरंगो नहयलेण ॥ ९० ॥ गुरुपवगनयणमगजवइणा वेगेण जाइ नगणवळे । कुनरुत्तओ रयेणं जेउं पिय

रविरहदुर्गो ॥ ९१ ॥ उग्रीवाणं सं गेच्छिराण पीडा भक्षण भवति । परिभाविडं व तुरओ तन्नयणागोयरे पत्तो ॥ ९२ ॥
 रायंगरुहे हरि ए हियहितो इव समगपरिवारो । कायवविमूढमई पत्तो रायंतियं क्षति ॥ ९३ ॥ संहइ कुमारहरणं तं
 सोचं शुच्छिओ महीनाहो । तवेलमेव जाओ निच्छेदो चत्तपाणोव ॥ ९४ ॥ चंदण रसछडासेयवससुवलद्धचेयणसहावो ।
 रुयइ सकरणं पागयनरोव अंतेवरेण जुतो ॥ ९५ ॥ हा हा कुमार हा भुवणसार हा रइयरम्मसिंगार । हा विहलिय-
 अब्भुद्धार हा हहां समरदुधार ॥ ९६ ॥ हा जाय जाय हा विहियनाय हा धरियरायमज्जाय । हा हा पररमणीभाय हा
 हहा भुवणविक्खाय ॥ ९७ ॥ को उच्छेणे धरिऊण मह काम कुमार कोमलकरेहिं । संवाहंतो काही आणंदमहूसवुक्करिसं
 ॥ ९८ ॥ कुंडलसरलुत्तरियाकंकणकेऊरमणिमयाभरणे । रंजिजतो दाही दाणे को वंदिर्विदाण ॥ ९९ ॥ इय पलवते
 संतेवरे निवेमंतिणा विमलमइणा । कुमारनिरिक्खणकज्जे तुरयाणीयं समाइहं ॥ २०० ॥ तं पि दुवालसजोयणमाणम्मि
 महियले परिब्भमिडं । नवरं कुमारवत्तामेतं पि न तेण संपत्तं ॥ १ ॥ तइयम्मि दिणे पसरंतसोयसंभारनिवभरे
 नयरे । कुमरो खयरविमाणाऊरिय गयणंगणो पत्तो ॥ २ ॥ नयणेहिं समं हरिसं वियासयंतो नरिंदलोयाण । पणओ
 जणणीजणयाण तेहिं आलिंगिओ गाढं ॥ ३ ॥ तो चेडीचक्कुया कुमारगुरूणं नया कुमारवहुया । आसिहिं ताण दुहा
 सुद्धंते संठिया गंतुं ॥ ४ ॥ जंपइ जणओ तुमए दिन्नो किं अम्ह पुत्त दुःखभरो । सो भणइ सुहदुहाणं दाया देवो न
 चेव अहं ॥ ५ ॥ रायाह सुहदुहाणं जं अणुभूयं तएवहरिण । तं साहसुत्ति तो कुमारसुमरिओ आगओ अमरो
 ॥ ६ ॥ तं दहुं मणिकुंडलकिरीडकेयूरकंकणाहरणं । विम्भियमणो नि(वो) पृई ऊण तंस्सासणं देइ ॥ ७ ॥ तथुव-
 विसिडं सो कुमारपेरिओ कहइ हरिणवुत्तंतं । पायालंमि पुरी अस्थि चमरचंचत्ति मणिभवणा ॥ ८ ॥ जीए सामारुण-
 सियमणिभवणपहाहिं संवलज्जन्ता । अमरा भमन्ति मयणाहिघुसिणचंदणविलित्तव ॥ ९ ॥ तथावडियजोवणसुरंगणा-

गणविलासदुल्लिओ । धुवंतचारुचमरो चमरो नामेण अमरवई ॥ २१० ॥ निवसंति तत्थ रवितेशचंदतेयाभिहा अमर-
कुमरा । रविचंदा इव भमिगा हरंति तेएण तिमिराई ॥ ११ ॥ निहालमाइसरीरालिंगनिच्छइयचवणसञ्भावो । जंपइ
रवितेओ मित्त चवणसमओ इमो मज्झ ॥ १२ ॥ तां मं पत्तनरत्तं पडिबोहेज्जसु पुमं अवसरम्मि । इय जपिउं चुओ सो
सुमरियजिणगुरुचरणकमलो ॥ १३ ॥ नयरम्मि धरासारे मणिमंदिररइयधरणिंसिगारे । जाओ राया सिरियणसुंदरो
नाम रम्मंगो ॥ १४ ॥ विलसंतरूवजोव्वणअभगसोहगसंगयंगीहिं । दइयाहिं समं विमए उवमुंजंतो गमइ कालं
॥ १५ ॥ कइयावि चंदतेएण मित्तदेवेण तत्स रयणीए । कहिओ सुरभवरइओ नरत्तपडिबोहवुत्तंतो ॥ १६ ॥ तं सोउं
जाईसरणनाणनयणेण दिट्ठपुव्वभवो । जंपइ राया तुमए पडिबन्नं पालियं फित्तु ॥ १७ ॥ पहु जोधगं नवं मणहरा
सिरी असमसुहयरा वि सया । रत्ताओ कंताओ भत्ता मित्ता अपुत्तो हं ॥ १८ ॥ ता अज्ज वि असमत्यो अप्पहियं
काउमाह अमरो वि । परमत्थविमूढमईण राय इय उत्तराई जओ ॥ १९ ॥ रोयजरजोयविणस्सिरस्स तत्तणियण-
मणहरस्सावि । का राय सारया जोव्वणस्स मोत्तुं तवच्चरणं ॥ २० ॥ चोरानलजलगयगहाइयहुविहअवायसज्जाए ।
धम्मढाणवयमंतरेण न सिरीए अत्थि गुणो ॥ २१ ॥ सरिसवसमसोक्खकरा सुरगिरिगुरुदुक्खदाइणो दूरं । अज्जा-
सचीए तणुक्खयं न किं दित्ति निव विसया ॥ २२ ॥ अंतो निन्नेहाणं पवंचरयणाहिं रंजियजणाणं । किं सारं कंताणं
मरणंतात्थहेऊणं ॥ २३ ॥ परदइयादवगहविरइयमेत्ती कुसुद्धहिययाण । किं वन्नोसि नरेसर सकज्जसज्जाण मित्ताण
॥ २४ ॥ परिपालिया वि परिपालिया वि अप्पियधणावि निव नूणं । पुत्ता न परिच्चाणं कुणंति नरए पउंताणं ॥ २५ ॥
भववासल्लासाणं हवंति आलंवणाई एयाई । अणुसरियसीहविच्चीण न उण आसन्नसिद्धीण ॥ २६ ॥ थिरजोव्वणाहिं
अणुराइणीहिं पर्यईए सुरहिगंधाहिं । विसए देवीहिं समं भोत्तूण चिरं न जइ तित्तो ॥ २७ ॥ ता गलिरजोव्वणाओ

क्षितिगरायाओ दुरहिगंगाओ । नारीओ अमुहभरियाओ विलसिरो किमिह लिप्पिहिसि ॥ २८ ॥ वसिचं समगसुह-
वत्थुणरिगछुगारसुरहिसुरलोण । वसियस्स अमुहगन्धे न विराओ तुह हहा मोहो ॥ २९ ॥ निगण्डिवणो निरिणो
जाओहं राय तुह हियं कदिचं । ता कुणसु जगप्पदिगं गा गज्जसु मूढ भवकुवे ॥ ३० ॥ इय सुगजवसगरसअमयवविससम-
अमरदेसणो राया । सिरविदइयकरकोसो संविगमणो भणइ अमरं ॥ ३१ ॥ पणु तुगण अगणव महमोहगहाविसं
हरेऊण । उप्पाइओ पयोहो उवयारपराडहवा गुरुणो (पाठांतर भवे गुरुणो) ॥ ३२ ॥ ता रुण्हि निण्हस्सं दिक्खं परिणावि-
वं दुदियभेगं । पावं रज्जाणि वरस्स सिता ता आणसु तयंति ॥ ३३ ॥ एवति भणिय अमरो पत्तो नयरीण चमरचंचाए ।
अगरविणोयपमत्तो रागवरं सरइ दसमदिणे ॥ ३४ ॥ अक्खययिकित्तिकुमारं हरिऊणं रयणसुंदरनिवस्स । अप्पसु
इअत्ति इय भणिय पेसिण्णुचरममरं सो ॥ ३५ ॥ इय पडिवज्जिय नयरीण कित्तिकलियाए इत्ति संपत्तो ।
कुमरे दुरंगनिचयं आवाहंतं पुरीण बहिं ॥ ३६ ॥ निदियमगरेण निवसुगइयरूवं तंगि निवसुओ नळिओ । तो गंतुं दुरपदे
गयणेण गओ हओ सहसा ॥ ३७ ॥ गरुयगिरिसरियनयराइं गयणमगेण एकमंतेण । अमरतुरएण तेरी सन्नविओ
उज्जाओ इंतो ॥ ३८ ॥ तं वहुं सो नहो मोत्तुमणवलंनणं नरिंदसुयं । अपंगि विणस्संते परोवयारी हएइ विरलो ॥ ३९ ॥
निवडइ रायंगरुहो रएण गयणंगणा निराहारो । सट्ठाणब्भट्ठणं गरुयाणवि होइ वा पणं ॥ ४० ॥ अवकंळिऊण धरिओ
निवपुत्तो वानरीए निवडंतो । सुहपुन्नपरिणईणं जंतो जीवो व नरयस्मि ॥ ४१ ॥ कोमलकिसलयनिचये निवेसिचं तं
जलासया सलिलं । चेत्तूण पत्तपुळण धोयर दासिह तन्नरणे ॥ ४२ ॥ खज्जरकयलिफलदाडिमाइ भोगविच पाइओ
सलिलं । तीण सिजदलरइण सञ्चारण रोविओ तयणु ॥ ४३ ॥ उहणपूगफलनागवेसिदलदावदछगिरिचुनं । आणिचु तीए
दिन्नं तंबोलं शुजइ कुमारो ॥ ४४ ॥ उवविसिय सम्भुही सा करकयकयलीदलेण कुमरतणुं । वीयंती अवलोयइ रायसुयं

साणुरायच्छी ॥ ४५ ॥ भंजइ अविरयमंगं समुब्रंती समुजरोमंचं । परिकंपिरंगजट्टी सज्जसासेयसुबहइ ॥ ४६ ॥
दड्डण वानरीविलसियं तयं सबमेव निवपुत्तो । असरिसिम्हयपरवसमणविची चित्तिउं लग्गो ॥ ४७ ॥ एहहदूरयरा
निवडिरं न मं वानरी जइ धरंती । ता नूण विवजंतो अहं विभिन्नट्टिसिंढाणो ॥ ४८ ॥ आसणपयसोहणभोयणाइं
तंबोलदाणपजंतं । अणुरत्तपियाए इव इमीए मह सागयं विदियं ॥ ४९ ॥ एयं तु महच्छरियं जमिमा मं साणुराय-
नयेहिं । मयणवियारविनडिया नियइ तिरिच्छीवि तरुणिव ॥ २५० ॥ तह वानराण जाई सया चला दोर विज्जुल-
इयब । एसा उ थिरप्पयई दूरं लक्खिज्जइ महिब ॥ ५१ ॥ ता निच्छयमेयाए चानरित्तम्मि कारणं किपि । इय
चित्तिय निवपुत्तो सप्पणयं तं पयंपेइ ॥ ५२ ॥ मह पाणे दाऊणं उवयारपरंपरा रुया तुमए । ता तुह सादामई कं
करेमि मह कहसु उवयारं ॥ ५३ ॥ रायसुओवि हु उवयारकरणपवणेवि तुह तिरिच्छीए । किमहं कानं दिन्ना ता
नियपाणावि तुम्भ मए ॥ ५४ ॥ तो कामवियारेहिं विनडिजंतीए तीए कुमारपुरो । गहिऊण गवलसंउं लिहिया गाहा
महीए इमा ॥ ५५ ॥ मह दाहिणं वियारिय ऊरं कट्ठिसु मूलियं नाह । नामेण कित्तिमालं मं निवकन्नं विवाहेसु ॥ ५६ ॥
तं वाइऊण ऊरु वियारिया निवसुएण छुरियाए । कट्ठिय मूलं वद्दा वणम्मि संरोहिणीमूली ॥ ५७ ॥ तो सा जाया
रयणीयरणाणा तहय हरिणसमनयणी । कंचणगोरी वणपीवरत्थणी नववया रमणी ॥ ५८ ॥ दट्ठण तमच्छरियं
उच्छलियअतुच्छकोउओ कुमरो । भणइ मयच्छि असद्धेयमत्तणो कत्तसु वुत्तंतं ॥ ५९ ॥ सा आह नाह निमुणसु
अत्थि जहत्थे पुरे धरासारे । सिरियणसुंदरनिवो तत्स अपुत्तस्स पुत्ती दं ॥ २६० ॥ नामेण कित्तिमाला कीलंती
सह सहीहिं भवणगे । खयरहमेण हरिऊणमेत्थ एकेण आणीया ॥ ६१ ॥ भणिया य मह महातेत्तयरचप्पित्स
भारिया भवसु । अविरुद्धमिणं जं कन्नया तुमं हमवि तुह रत्तो ॥ ६२ ॥ इय भोगत्थं अन्नभत्थिया वहुं सामदान-

दंडेहिं । जीवियनिरयेऽस्वाए वमन्निओ सो गए दूरं ॥ ६३ ॥ तो तेण वियारिय ऊरुयाए खिविऊण मूलियं विहिया ।
वानरिया हं संरोहिणीए वणमविय रोहवियं ॥ ६४ ॥ गंतूण नियट्टणे समेइ निबंणि पत्थिउं भणइ । जइ मं मन्त्रसि
एइयं ता साहसु गवलवनेहिं ॥ ६५ ॥ इय कुंठतस्स गयं दिणनवगं समिसाल खयरस्स । अज्जं तु सुकयकम्मणे
आगया मज्जा इह तुम्भे ॥ ६६ ॥ उप्पाइययेम्मंणि तु दाही गह तुम्ह दंसणं दुक्खं । जं सो खयरराया मायावी दुज्जओ
एही ॥ ६७ ॥ दहुं मइ गहिलत्तं मा काही किंणि तुम्ह सो गत्थं । ता पविसदं तरुगुम्भे आगंतुं जाव सो जाए ॥ ६८ ॥
आह नरनाहपुतो वहादिहो इयरदवचोरोवि । माणुसचोरस्स पुणो छुणामि सीसं सहत्थेण ॥ ६९ ॥ किं होइ वराएणं
तेण न वीहेमि हं जमस्सावि । इय जंपते कुमरे पत्तो सहसत्ति खयरोवि ॥ ७० ॥ पिच्छेउं नियरूवं कुमरिं कुमरंणि तीए
नियड्ढठिय । कोवकयभीगभिड्डी अवयरइ पयंविरो एवं ॥ ७१ ॥ रे दुट्ठ को तुमं माह पियाए पासे समागतो कहसु ।
कुमरेणुत्तं रे रमणिचोर कइ तुए पिया एसा ॥ ७२ ॥ तेणुत्तं एसा जइ महपिया तह कहेसि खग्गेणं । इय भणिरो
करवालं कथुं धाविओ खयरो ॥ ७३ ॥ हुंकारंतो कुमरोवि उट्ठितो वक्खिवित्तु असिधेणुं । दोन्निवि दट्ठोह्वा भिड्ढि-
उम्भडा जाव जुज्झंति ॥ ७४ ॥ ता अणुचरामरेणं कहिओ कुमरावहारुत्तंतो । रिजदंसण-नियनासणपजंतो चंदतेयस्स
॥ ७५ ॥ नूणमणवल्लो निवड्ढिऊण रायंगतो मओ होही । एय सविसाओ पत्तो कुमरसमीवे सुरो सहसा ॥ ७६ ॥ दट्ठूण
कुमरमारणसजियाघायं तयं खयरखेउं । बद्धो अमरेण अदिट्ठमोरबंधहिं सो झत्ति ॥ ७७ ॥ संमाणिऊण(निव)नंदणस्स
अवहरणकारणं कहिउं । भणितो खयरो जीवसि जइ होसि कुमारभिओ तं ॥ ७८ ॥ मरिसि धुवमज्झा तं सोउं सो
भणइ देहि मे पाणे । पट्ट तुह आणं काहं तो सो सुक्खो सुरवरेण ॥ ७९ ॥ अमरं कुमरं कुमरिं च पणमिउं खासिउं च
तेणुत्तं । चलह जइ रज्जमपिय कुमरस्स भवामि भिओ हं ॥ ८० ॥ तो सद्याणि वि सुरकयविमाणमाहविय झत्ति

पत्ताणि । वेयडुत्तरसेटीए गयणवल्लहपुरे ताणि ॥८१॥ उववेसिउं सहाए कुमरं खयरहिवेण रजसिरी । उवणीया भणिरेंण तं सामी सेवगो हं ते ॥ ८२ ॥ कुमरेणुत्तं विलससु नियलच्छि जं माएवि तुह दिन्ना । नवरं मए समणं अणुहवमाणो सिणेहभरं ॥८३॥ तं सोउं खयरिंदेण हिट्ठहियएण पूइउं अमरं । कुमरकुमरीण रइओ सम्माणो नियसिसिरिसो ॥८४॥ तो अमरो कुमरीकुमरखेरराहिववलेहिं संजुत्तो । चलिओ पत्तो य धरासारे नवरे गुरुरएण ॥ ८५ ॥ कुमरी अवहरण-ससोयलोयपिहियावणं तमिक्खतो । पत्तो विसन्नासिंगारहीणनिवलोयमत्थणं ॥ ८६ ॥ दट्ठुं अमरं कुमरीए संगयं नट्टसोयसंतवो । राया पूइय अमरं आलिगइ कन्नयं हिट्ठो ॥ ८७ ॥ काउं कुमारखयेरसराण सम्माणममरमुट्ठवइ । मित्त सुयावुत्तंतं हरणागमणाण मह कवसु ॥ ८८ ॥ तो अमरेण समगं कन्नाकुमराण हरणवुत्तंतं । कइउं भणिओ राया परिणावसु कन्नयं कुमरं ॥८९॥ ठविउं रज्जमि इमं अप्पहियं कुणसु गहियपव्वज्जो । इय भणिए जा चित्तइ विवाह-सामरिगयं राया ॥ ९० ॥ ता अमरेण ससचीए झत्ति मणियंभयावलीकलिओ । वीवाहमंडवो पंचवन्नधयमालिओ विहिओ ॥ ९१ ॥ रइया य हट्ठसोहा समंतओ देवदूसविसरेण । किंवाहुणा निवच्चितियममरेण कयं समगंगि ॥ ९२ ॥ गुरुरिद्धीए कुमरी दिन्ना कुमरस्स तेण परिणीया । करमोयणम्मि दिन्नं रज्जं सत्तंगमवि तस्स ॥ ९३ ॥ एत्थंतंरंमि उज्जाण-पालओ दंडिसूइओ पत्तो । पल्लवओ नामेण नमिउं विन्नवइ नरनाहं ॥ ९४ ॥ देवुज्जाणे कलकोइलाभिहे केवली समो-सरिओ । सोऊण तइ वियरइ राया पीइप्पयाणं से ॥ ९५ ॥ गुरुरिद्धीए सुरखेरिंदनवनिवइपरिगओ तुरियं । पत्तो उज्जाणे नमिय केवल्लिं तत्थ उवविट्ठो ॥ ९६ ॥ दट्ठण केवल्लिं नवनिवइं मुच्छाए महियले पडिओ । तिसिरकिरिया-समुवल्लवचेयणो पुच्छिओ रत्ता ॥ ९७ ॥ किं राय मुच्छिओ तं सो जंपइ केवल्लिं पलोएउं । मह जाइसरणसंसूयगा इमा आगया मुच्छा ॥९८॥ दिट्ठो नियपुव्वभवो हुंतो कासीभिहाण देसे हं । दुग्गयपडागनामो आजम्मदरिद्धिओ विप्पो ॥९९॥

देसेसु परियडंतो कयाइ उववासतिगसुसियदेहो । पत्तो मज्झण्हे कणयसालपुर-तिलयउज्जाणे ॥ ३०० ॥ दहूण तत्थ नवसालितंदुले विक्खिणंतए वणिए । आह अहं पइसंतो तिलंघणो देह ता किं पि ॥ १ ॥ तो तेहिं सालितंदुलपसइडुगं गुरुदयाए दिन्नं से । तं घेत्तूण पविट्ठो उज्जाणभंतरे जाव ॥ २ ॥ ता नियइ केवलिसुणिं जिणपूयफलं जणाण साहंतं । जो कुणइ जिणस्सट्ठवि पूया तो लहइ सो सिद्धिं ॥ ३ ॥ ताओ फलजलनेज्जदीवधूवक्खएहिं परमेहिं । वासेहिं खुसुमेहि य भणियाओ समयसन्धेसु ॥ ४ ॥ सबाओ वि असत्तो तं कुणइ जिणस्स अक्खएहिंवि जो । भोत्तुं सयल-सिरीओ सो अक्खयसोक्खमवि लहइ ॥ ५ ॥ तं सोउं सो धितइ न पुवजस्से मए कओ धम्मो । तेण न संपज्जइ मे भमिरस्स वि भेक्खमेत्तंपि ॥ ६ ॥ ता जिणपूयं सालीए फाउमज्जेमि सुकयसंभारं । जं भिक्खाभरणेणवि भविही महं लुहपरित्ताणं ॥ ७ ॥ इय चितिय भत्तीए नमिय सुणिं भणइ कहइ कत्थ जिणो । पूएमि जहा तो सावएण सो जिणहरे नीओ ॥ ८ ॥ जं कणयमयं मणिकिरणकिन्नवणराइविलसिरउवंतं । कंचणगिरिब कप्पदुमावलीवेडियं सहइ ॥ ९ ॥ तंमि पविट्ठो पेच्छइ पसंतरूवं जिणेसरं रिसहं । आणदअंसुजलकलियलोयणो भत्तिकंटइओ ॥ ३१० ॥ मणि-मयकुट्टिमिलमाणभालमभिनमिय सामिणो तेण । अक्खयढोयणपूया विहिया बहुमाणसारेण ॥ ११ ॥ दहूण तस्स भत्तिं नियगेहे सावएण से दिन्नं । निद्धण्हेभोयणं तदिणाउ सो सुत्थिओ जातो ॥ १२ ॥ तो कालगतो समभावसंगतो निवसुतो हसुप्पन्नो । दहूण केवलिमिमं जाईसरणं ससुप्पन्नं ॥ १३ ॥ निब्भगस्सवि मज्झं रिखी सुगुरूवएसनायाए । जिणपूयाए कयाए जाया इय साहियं तुम्ह ॥ १४ ॥ तं सोउं संजाओ जणस्स जिणपूयणम्मि बहुमाणो । रायावि सावरोहो दिक्खं गिण्हइ गुरूसयासे ॥ १५ ॥ पणमिय गुरूणो नवदिकिखए य संभासिऊण नवनिवइ । खेयरवइं च अमरो गओ सठाणम्मि कयकिओ ॥ १६ ॥ नवदिविक्खयमुणिजुयकेवलिफस्से नमिय नहरिदजुतो । पत्तो पासाए तत्थ सुत्थयं

रइय रज्जस्स ॥ १७ ॥ खेयरविमाणसेणाए तुम्ह चरणंतियं समणुपत्तो । नमिय निविट्ठो पुट्ठो नियहरणं कहसु वच्छत्ति ॥ १८ ॥ तो एय सुमरिओ चंदतेयअमरो समागतो सो हं । कहितो य हरणहेऊ जुत्तं तुम्हंपि द्वियकरणं ॥ १९ ॥ तं सोडं नरनाहो जंपइ भो अमर सुयणसिररयणं । निकित्तमोवयारी तमेव जो एवमुवइस्ससि ॥ ३२० ॥ नियमेण वयं काहं रज्जं दाउं सुयस्स इण्हिपि । इय जंपिरे नरिंदे सहसत्ति तिरोहितो अमरो ॥ २१ ॥ तो रत्ता नवनिवई अणिच्छ-माणोवि ठाविओ रज्जे । गीयत्थयुरुसयासे सयं तु अंगीकया दिक्खा ॥ २२ ॥ कइयावि हु सम्माणिय विमज्जिओ राइणा खयरचक्को । कज्जेसु ममाएसो देउत्ति परंपिय गओ सो ॥ २३ ॥ पइदियंहंपि पबुडुप्पयावपवभारदुस्सहो दूरं । रिउमंडलाइं राया परितावइ गिम्हतरणिच्च ॥ २४ ॥ कइयावि हु वेयेडु विलसइ विज्जाहरिंदवाहरिओ । रुइयावि धरा-सारे रज्जसिरि चित्तए गतुं ॥ २५ ॥ पयडइ नीइं पालइ पयाउ पूयइ जिणे गुत्तं नमइ । सावइ देसे एवं वंजंति निवस्स दिवसाइं ॥ २६ ॥ कालेण कित्तिमालादेवीए उदारकित्तिनाम सुओ । जातो संगहियकलो विवाहितो रायकन्नाओ ॥ २७ ॥ तं रज्जे अहिसिन्धिय गिण्हइ सपिओ वयं जणयपासे । कयतवचरणो उत्पन्नकेवलो सिद्धिमणुपत्तो ॥ २८ ॥ जह अक्खएहिं विहिया जिणिंदपूया इमेण नरवइणा । सिद्धिसुहकंलिणा तह कज्जा अण्णेणवि नरेण ॥ २९ ॥ अश्रत्तपूजा १५ ५ ५ ५ ५ ५ भणिओ अम्सयकित्ती अक्कायपूयाए संपयं तुव्मे । फलपूयाए निसामह फलनारं वागरिज्जंतं ॥ ३३० ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५

विष्णुरिय—भूरिकरदुरवल्लोयमणिमंदिरावल्लिकलियं । सूरुहकयावास व अत्थि सूरप्पहं नयरं ॥ ३१ ॥ अन्नोन्न-मिलियमणिगिहकरकिन्नहम्मि पक्खिणो नूणं । वित्थारियजालंमिव न जंमि पविसंति वंधभया ॥ ३२ ॥ सारयर-विकरपसरियपयावसंतावियाहिओ तत्थ । अत्थि प्पयावसारो नामेण निचो रणवसणी ॥ ३३ ॥ सधंगचंग-नियरूवगव्वनिज्जिणियअच्छराविसरा । तस्सत्थि हत्थिकुंभत्थलत्थणी जयसिरी जाया ॥ ३४ ॥ तन्नयणव्वभमरणं

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ १० ॥

आणंदं सुमणपत्तभरपरमो । फलसारी नामेणं दुमोब दून्नतो कुमरो ॥ ३५ ॥ कइयावि सहासीणे निवंमि
कुमराइरायमंतिजुद । झणहणिरकिंकिणिगणं विमाणमेग समणुपत्तं ॥ ३६ ॥ तम्मब्जाउ पसरंतमणिमयाभरणकिरण-
दुनिरिक्खो । रविरहरयणाओ रविच्च खेयरो इत्ति नीहरिओ ॥ ३७ ॥ पडिहारकयपवेसस्स तस्स संमाणपुव्वमवणिवई ।
खयरहिराय साहसु आगमणत्थंति जंपेइ ॥ ३८ ॥ सो आह ससहरसिओ वेयह्णो नाम वामदेवोव । गंगासिधुपरिगतो
अत्थि गिरी गरुयनयरसिओ ॥ ३९ ॥ नयनायरगुणनिजियसमगपुरपत्तवेजयंतिव । तत्थत्थि वेजयंती नयरी
मणीभवणकमणीया ॥ ४० ॥ गोरीपन्नत्तीपमुहसिद्धिजिजापभावदुजेओ । विजाहराया तत्थ अत्थि सिंगारसारोत्ति
॥ ४१ ॥ निम्मलनहकयसोहा पवित्तसन्भावभासियदिसोहा । तारावलिच्च जाया जाया तारावली तस्स ॥ ४२ ॥ तीसे
असेसमुवणेफभूसणं रूवरेहविलियरई । जाया मणुन्नकन्ना सिंगारतरंगिणी नाम ॥ ४३ ॥ सद्धिं सुहवण्णेणं कलाकलावेण
तारतारुणं । जायं तीसे सिंगारगारुगारपरिकलियं ॥ ४४ ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया मणिमत्तवारणासीणा ।
गयणे जंतं चारणमुणिदमिक्खिय गया मुच्छं ॥ ४५ ॥ चंदणरसच्छडासेयसिसिरकिरिओवलद्धवेयन्ना । संसुसही-
हिं सा पुच्छिया तुमं मुच्छिया किमिह ॥ ४६ ॥ आयन्नहत्ति जंपिय सा मुच्छाकारणं कहइ तांमिं । संसारसरूवंपि
अत्थि अरन्नं अदिट्ठंतं ॥ ४७ ॥ गुरुभूरिसादिसाहासहस्सअंतरियअंतरिक्खंमि । सावयभीउव जहिं पक्खिवइ
करे न सूरौवि ॥ ४८ ॥ पेच्छिजंतकुंगं दरिह्गामीण देवहरं व । जं विगयरायचित्तं विरायए केवलिकुलं व
॥ ४९ ॥ तरुणो व विलसिरवओ विसालतो सरसकमलनियरो व । तत्थपप्सरियसालो अत्थि वडो पुरनिवेसोव
॥ ५० ॥ बालायवदलनिम्मावियं व सवंगंपिगपहरोमं । अचंतंचलं जं तरुणीअणुरायरइयं व ॥ ५१ ॥ धरमाण-
मरुणवयणं मसिणिघघणुसिणरसविम्मिस्सं व । वानरजुयलं परिवसइ पायवे तस्मि घणनेहं ॥ ५२ ॥ जुयलं ॥

॥ १० ॥

फलपूजायां
फलसार-
कथा

कइयावि करहखरवसहसगडसेरहसहस्स—संजुतो । संपत्तो सत्थाहो नामेण धणावहो तत्थ ॥ ५३ ॥ आवासिओ
य वडविडवितडकए गडुरे गहीरम्मि । गुणिणीविमाणयाइसु जहजोगं सेसलोगोवि ॥ ५४ ॥ एत्थंतरंमि तवतेयभासुरो
रइयउत्तरासंगो । गिम्हतरणिच्च चारणसमणमुण्णिंदो ह्यतमोहो ॥ ५५ ॥ अंगीकयविरइरतो अनिरुद्धसुओ अविगहो
सययं । जयजणमणकयवासो सोहंतो कामदेवोच्च ॥ ५६ ॥ गयणंगणेण पत्तो तत्तो सत्थाहिवो सवहुमाणं । तं
नामिय निसीयावइ पट्टम्मि निसीयइ सयंपि ॥ ५७ ॥ दहुं तं नवजोच्चणमब्भुयरूवं भणेइ सत्थाहो । किं पहु तुह वेरगं
जं लहुण्णवि वयं गहियं ॥ ५८ ॥ आह पहू सत्थाहिव आयन्नसु अत्थि उडुलोगम्मि । बहुपुन्नपावणिज्जो सोहम्मो
नाम सुरलोओ ॥ ५९ ॥ जम्मि बहुरविकरदुरवलोयमणिमयविमाणहयतिमिरे । लज्जंतोघ न पविसइ कायपुरिसोच्च
सूरोवि ॥ ६० ॥ पुन्नप्पयरिसवसही निरुवमरूवो असीमइस्सरिओ । तं परिपालइ सक्को कयरिउगणमाणसयसको
॥ ६१ ॥ तस्सत्थि परममित्तो समस्सिरीओ समाणासिगारो । नामेण सरिरेणय विक्खाओ अमियतेओत्ति ॥ ६२ ॥
विलसिरतणुकंतिमई कंतिमई नाम सहयरी तस्स । दइयवियोगं सा विसयलालसा न सहइ खणंपि ॥ ६३ ॥ भणइय म
मोतुं तं मा गच्छसु सामि सकपपसम्मि । जं तुह विरहुकरिसो दूरं विहुरइ सरिरं मे ॥ ६४ ॥ पत्तमहाणंदा इव अमयदह-
संगसुहियदेहव । तुहसंगसंगया सामिसाल हं होमि नियमेण ॥ ६५ ॥ इय तव्वयणस्सवणा नियदेहाओ वि नियघणाओ वि ।
अठमहियं तं मन्नइ दइयं सो जीवियाओवि ॥ ६६ ॥ सुरलोयसभवासमविसयस्सासंगसत्तचित्तस्स । अन्नाओच्चिय
गच्छइ कालो से चत्तधम्मस्स ॥ ६७ ॥ समयतरंमि महइं वेलं ठाउं सुरिदपासम्मि । जा गच्छइ ता पेच्छइ न भारियं निय-
विमाणंमि ॥ ६८ ॥ कत्थ गया मे कंता कंतिमई इय विभावितं जाव । तच्चिरहविहुरिओ तं नाणेण पलोइउं लग्गो ॥ ६९ ॥
ता अंवरसिहरगिरिंदसंदवणदक्खमंडवतलम्मि । विसयासत्तं अवरामरेण साद्धं तमिक्खेइ ॥ ७० ॥ गुरुरोसावेगा

रतनेतपद्मभरसिंघियगगनहो । तदुगदएणनिमित्तं निसदुगुरुतेबलेसोल ॥ ७१ ॥ तो ताण मारणत्थं फाडं वेगं गतो
गिशिसिरे सो । नडाहं दुयं दोज्जिणि को ठाए पुरो पुजगरिखणो ॥ ७२ ॥ नहे दुगेवि वेरग्गवासणावासिओ विधिदेइ ॥
पेच्छ अहं देलविहो विवेणकलियोवि पायाए ॥ ७३ ॥ दुहविरहविहुरियाहं ठाडं चेह्मागि नो निमेसंभि । ताण भणिगाण
जायं अवसाणं परिससिगीए ॥ ७४ ॥ धिद्धी भिरत्थु इत्थीण ताण जाहिं विमोहिन्ना संता । महरामतव विवेइणोवि
गुहत्तणं जंति ॥ ७५ ॥ जिणचवणजस्मदियस्साकेवलनिघाणपद्यपूणओ । सुकयं समज्जियं नो मए पियामोहमूढेण
॥ ७६ ॥ जाण कए पाणापि दु तणगणणए सग्गा गणिजंति । तासिं एगं सरूवं ता धिद्धी धी सिणेहस्स ॥ ७७ ॥
चेप्पंति रुवजोघणविज्जाविनाणनानदविणेहिं । नो पावण्यईतो ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७८ ॥ विस्सासिऊण वाहंति
यासवित्तीए माए समं मूढं । अप्पंति पुण न अणं ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७९ ॥ वणंतु खयं विसया पज्जत्तं मज्जर
सद्यभज्जाहिं । जो हं अणप्पवसओ विठुंघणं एवमणुपत्तो ॥ ८० ॥ वेरग्गसंगओति दु न सत्तविरइद्यग्गस्स जोग्गो हं ।
ता इह लोयसुहस्सव चुत्तो परलोगसोक्खस्स ॥ ८१ ॥ ता एए भज्जादुक्करियसुमरणत्थं करेसि किंभि अहं । जं दहुं
परलोए वप्पज्जइ मज्जा पडियोहो ॥ ८२ ॥ इय चिंतिऊण तेणामरेण विफुरियकिरणयणेहिं । रोहणमिसिहंणिव रुदं
जिणमंदिंरं रइयं ॥ ८३ ॥ गीयत्थसूरिमज्जा(हत्थ)प्पइद्धियं तत्थ कारियं तेण । सिरिसहनाहंविनं जाणं व भवन्नतुतरणे
॥ ८४ ॥ ता संकेण सयं तत्थ अट्ठदिवसाहं ऊसवो विद्धिओ । इय अणुदिण जिणपूयणसज्जियसुकज्जो चुओ
अगरो ॥ ८५ ॥ वप्पओ वेयहे दाद्धिणसेणीए अवलनागाए । नगरीए विजयप्पहरायपियाए जयाए सुतो ॥ ८६ ॥
विज्जुप्पहोति पिज्जावियत्खणो सित्तमंगलीकलियो । चलिओ नहेण कइयावि कीलितं तं निरिं पत्तो ॥ ८७ ॥ दइह
जिणहरं जायजाइसरणो पयासइ सु(स)हीण । कुमरो अमरत्ते नियपियाकुसीलचचेरगं ॥ ८८ ॥ निंदइ दुस्सीलाओ

महिलाओ कहइ धम्मसत्त्वस्सं । भणइय भद्वं जायं जमल्लमिह कीलिउं पत्ता ॥ ८९ ॥ भज्जा दुग्गरियस्सरणकारण-
विरइयं जिणायणं । जायइ जेण विराया भवंतरे सव्वविरइं मे ॥ ३९० ॥ ता गिण्हिय मामन्नं निस्सामन्नं तवं चरि-
स्सामि । ता सित्ता खमियव्वं जं तुम्ह मए कयमजुत्तं ॥ ९१ ॥ तो संविग्गा ते व्विंति तुम्ह मगं व्वंयपि अणुसरिसो ।
तो सब्बे मा(मो)यावियजणया दिक्खं पव्वज्जंति ॥ ९२ ॥ कयवालकालवंभवयावि संजायवहुसुया सब्बे । ता गुरुणा विपज्जुहो
ठवितो जोगोत्ति सूरिपए ॥ ९३ ॥ सो सब्बथवि भवे पडिवोहंतो विहारमायरइ । अज्जं पुण नंदीमरजिणाव्विंवे
वंदिउं चलिओ ॥ ९४ ॥ इह पत्तो सत्थाहिव तुमए वेरगगकारणं जमहं । पुट्ठो तं तुह कहियं तं सोउं भणइ सत्थाहो
॥ ९५ ॥ पेच्छंति मयच्छीणं पहु सब्बेवि हु पभूयविलियाइं । नवरं कस्सवि जायइ न पडिवोहो जहा तुम्ह ॥ ९६ ॥
एयाउच्चिय भवसंभवसुहसत्त्वस्समेव मूढाण । रायरहियाण दूरं दुक्खपयं न उणमन्नयरं ॥ ९७ ॥ नूणं पहु
बहुक्कल्लण्ठाणमत्ताणमेत्थ मन्नामि । रत्तेवि जेण पत्ता तुम्भे ता कहइ सुहदेउं ॥ ९८ ॥ आह पहु भववासो आवासो
तिक्खदुक्खलक्खाण । ता पत्तं मणुयत्तं मा हारइ करइ अप्पहियं ॥ ९९ ॥ तं पुण सुं-देवंगुरुयन्मत्तजोण जायए
नियमा । ता रागहोसअद्रूसियंमि देवे मइं कुणइ ॥ १०० ॥ आराहइ निगंगं अणीहयं धम्मियं मुसीलगुणं । जम्मि
चराचरजीवाण रक्खणं कुणइ तं धम्मं ॥ १ ॥ जं वीयरायदोसेहिं दंसियं सुणइ तं सया तत्तं । जं चत्तारि वि
चउगइहराइं एयाइं भव्वाण ॥ २ ॥ जइ वि हु गुरुप्पमाया मिहिणो न कुणंति सव्वनिहिदम्मं । तहवि हु जिणपूया तेहिं
अट्ठहा भवहरी कुज्जा ॥ ३ ॥ तहाहि । जलधूवदीवनेवज्जकुमुमफलवासअक्खयसहावा । पूया अट्ठपयारा कीरइ
भवेहिं अरिहाण ॥ ४ ॥ इय जइवि वहुविहा सा तहवि हु सुमहुरसुत्तमफलेहिं । अवयविज्जउरईहिं विरइया वियरइ
सुहाइं ॥ ५ ॥ सुनरामरत्तसिवसुहफलाइं भत्तीए विरइया नूणं ॥ फलपूयकारण वियरए जेणिमं भणियं ॥ ६ ॥

पक्षेति फलं पुराणो जो ठवइ जिणस्स परमगतीणं । तस्स फलंति अनस्सं नरस्स सगल्लव विविसाव ॥ ७ ॥
तं सोढं सारथ तर्हं अतिभरणगगगुरुकानंनुसहो । अंगीकरइ सगवि दु जिणपूजाभिगहं धिणइ ॥ ८ ॥ साद्धागणेण साहा-
मणइ इय वैसाणं सुणेउणं । भणिगा भज्जा यइणं सुकरो धम्मो इमो अम्ह ॥ ९ ॥ जेणेह फळाहारो विदिणा अम्हान
निम्भितो पायं । संतिवय सुसफला इह रणे भूतिरुणोधि ॥ १० ॥ नृणं न किंणि सुकणं कज्जगहेहिं भवंतरम्मि पिणं ।
जायाइं तेण दोलि वि निदिगतेरिच्छज्जाइं ॥ ११ ॥ एतो वि दु नियचागछेदोससंजागपाय(य)पोसाण । अम्हानं छप्पती
कत्थइ भगिही न गणामो ॥ १२ ॥ ता सुलहफलेहिं तयं पुरुतु जिणं भवजलं तरिगो । साद्धामइ पयंपइ कुणह
इयं चउह पछणम्हि ॥ १३ ॥ पयंतरम्मि भणिजो गुरुणा सत्थाडिचो तयं जाओ । अंबरसिएरगिदिम्मि जिणिद-
पयवंदणनिमित्तं ॥ १४ ॥ तो आह सत्तवाहो पदु सो केत्तिगपहे गिरी कहइ । भणइ गुरु एसोविग आसणो
गगणगयसिंगो ॥ १५ ॥ सत्थाडिचो पयंपइ अहंणि पदु तत्थ आगशित्सागि । तो संनटिगा गुरुणो सपयिगणो
सारथवाहोणि ॥ १६ ॥ उत्तरिय दुमाओ दुयं कइदुगमनि सूदिणोणुगगणेण । गच्छइ तरच्छकरिद्धरिणिसगरसंनरउद
रणे ॥ १७ ॥ तंगज्जे तरणिभया पिंडीहूजोव धगगरो तेहिं । अंबरसिएरो नागेण सागलो सो गिरी दिहो ॥ १८ ॥
सामलसिद्धराणिगलत्तालदल अंतकछसिरभाज । जो नवणोव ईसिएतताडिसजुतो सहइ ॥ १९ ॥ तम्मि सीयर-
निवटिरनिज्जारणनीरसिक्करसगूह(वि)हवाए(?) । आरुळा गुरुसत्थाडि(य)चानरा(र)म्माआरामे ॥ २० ॥ तस्सग्गे
पिंगगणिप्पहाणिसंगिसागगारिसिगकं । रगिरहूरयणंव गियंति उदयसेलम्मि जिणभगणं ॥ २१ ॥ स्यणीसु जं गिरागइ
पडिनिंविग भूतिारयणगरं । केवल्लुत्ताजालयगिरइयसिंगारंगंव ॥ २२ ॥ पेच्छंति तत्थ उवसंतकंतमुत्तिं जिणेसरं
रिसहं । जहजोमं प्हवणयणथयणे कावं निवट(वि)हा(?)ते ॥ २३ ॥ वडूण जिणवरं यानराइं बहुमाणजायगुल्लयाइं । आणं-

द्वसपवत्तुपन्ननयणाई पणमन्ति ॥ २४ ॥ तो तेहि पक्कंगवरअंवनारंगवीजपूरेहि । कयलीफलदकवादाडिमेहि
गुं जिणिंदपुरो ॥ २५ ॥ पसरियभत्तिभरुभिज्जमाणरोमंचअंचियंगेहि । रइय वालं मुकं वीजपूरयं सामिकर-
कमले ॥ २६ ॥ जुयलं ॥ तत्तो अन्तो उहसियअसमआणंदमंदिरच्छीणि । भूपुटभालवटं नमंति तिहुयणपहुं
ताई ॥ २७ ॥ तो भत्तीए गुरुणं नमिउं जंपंति निययभासाए । पहु तुम्ह पसाएणं अम्हेहि समजिओ धम्मो ॥ २८ ॥ इय
भणइ गुरु धम्माओ नन्नं भुवणे वि अत्थि सारतरं । ता तिरियावि हु तुम्भे धन्नाइं जेसिमिय बुद्धी ॥ २९ ॥ इय
अणुसासिय वानरजुयलं आपुच्छिऊण सत्थाइं । नमिय जिणं अन्नत्तो गयणेणं विहरिया गुरुणो ॥ ३० ॥
उत्तरेइं सत्थाहो गओ जहाभिमयदेसमसडमई । पाविउ आउयंतं वानरजुयलं पि कइयावि ॥ ३१ ॥ मडिम्म-
परिणामजिनरत्तभावाहमेत्थ वेयडु । उप्पन्ना सो कत्थइ मज्झ पिओ तं न याणामि ॥ ३२ ॥ जह पुव्वजन्मसद्धम्म-
दायगो एस चारणमुणिंदो । जं दहुं संजायमह जाइसरणनाणमिणं ॥ ३३ ॥ मोत्तुं परमवदइयं सद्धम्मुच्छाहयं
पवंगं मे । न नंतरपरिणये मणो मणोरहमवि करेइ ॥ ३४ ॥ तं सोऊण सहीहिं सबं पि हु साहियं खयरपहुणो । ता
तेणवि बाहरिय सुयं उतुं उतुं इमं पुत्ति ॥ ३५ ॥ किंतु न नज्जइ चउगइभवगहणे सो कहिं पि उप्पन्नो । ता
मोत्तुमसगाहं अवरचरं (वर) सु तं वच्छे ॥ ३६ ॥ सा आह मज्झ अंगे लग्गइ सो सुहयरो अहव अग्गी । तं सोऊणं
जणओ जाओ चिंताउरो दूरं ॥ ३७ ॥ एत्थंतरं मि सुयंडुहिस्सरो दारवालमवणिवई । किमिमंति पुच्छिओ सोवि तस्स
तं सुणिय विव्रवइ ॥ ३८ ॥ पहु इणिहविय पत्तस्स सूरिणेणंतनाणमुप्पन्नं । तो केवलमहिममिणं कुणंति अमरा सबहु-
माणं ॥ ३९ ॥ तं सोइं भत्तीए खयरवई कन्नयाजुओ सत्थो । केवलपासे पत्तो पणमिय तं देसणं सुणइ ॥ ४० ॥
आह पहु संसारो धुवं असारो विणस्सरा रिद्धी । खणरायिणीउ रमणीउ गंतुं जीवियत्तं पि ॥ ४१ ॥ इय देसणावसाणे

खयरिंदो नमिय केवलि भणइ । पहु मह सुयांभवंतरपई कई कथ उप्पन्नो ॥ ४२ ॥ तो कहइ विमलनाणी फलपूया-
करणपत्तपुन्नभरो । मरिउं सो सूरप्पहुपुरायपयावसारस्स ॥ ४३ ॥ पुत्तो जाओ फलसारनामओ अत्थि चारुता-
रुन्नो । तं सोउं खयरवई पणयपहू मंदिरे पत्तो ॥ ४४ ॥ तो हं आलोचेउं सह भज्जासधमंडलीएहि । तुब्भ सयासे पत्तो
नियतणयाए चरनिमित्तं ॥ ४५ ॥ ता राय भणसु नियपुत्तयं जहा मह सुयं विवाहेइ । तं सोउं नरनाहो जंपइ खयरवई
एवं ॥ ४६ ॥ पाविज्जइ खयराहिव अणप्पपुत्तेहिं तुह समो सयणो । चिंतामणिसंजोगो जायइ किं मंदभग्गाण ॥ ४७ ॥
इयरं पि खयरकुम्महिं कल्लणसिरिं व को न ईहेइ । किं पुण भवंतरसरणजायनेहं तुहंगरुहं ॥ ४८ ॥ एत्थंतरे कुमारो
जाइसरणेण नायपुधभवो । जंपइ तह ताय तयं जह कहियमिमेण तुग्घ परो ॥ ४९ ॥ तं सोउं गुरुपरिओसपरितो
कुमारमाह नरनाहो । गंतुं खयरकन्नं विवाहिउं वच्छ आगच्छ ॥ ४५० ॥ इय जंपिय सम्माणियखयरवइं वत्थभूसण-
गणेण । पेसइ सह तेण सुयं राया चउरंगबलकलियं ॥ ५१ ॥ विज्जाहरिंदविज्जाबलेण पत्तो नहेण वेय्हे । विहितो
तस्स पवेसे महूसवो खयरजणेण ॥ ५२ ॥ सद्युत्तुमस्मि लग्गे घणाणुराया महाणुरायेण । परिणीया कुमरेणं सिंगारतरं-
णिणी कुमरी ॥ ५३ ॥ गुरुगोरवप्पहिंदो दिणदसगं तत्थ संठिओ कुमारो । पच्छा ससुरमनुत्रविय आगओ नियपुरे सपिओ
॥ ५४ ॥ पिउणा पुरप्पवेसे गुयस्स असगो महूसवो विहिओ । अत्थाणठियं जणयं नमिय निविहो तयाणाए ॥ ५५ ॥
नवरंगयनीरंगीअवगुंठियवयणपंकया बहुया । नयससुरा तस्सासीउहा अंतोउरे पत्ता ॥ ५६ ॥ अत्थाणठियं जणयं
सेवइ गोराप्पओससमएसु । न गुयइ कयाइ कुमरो कलाण पुणरुत्तमन्भासं ॥ ५७ ॥ काउं कयाइ रज्जाहिसेयपरभूसवं
कुमारस्स । गहियघउ निवो पत्तकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ ५८ ॥ नवनिवईवि नएणं पालेइ पयाओ दंडए दुहे । मन्नइ
महायणीए पूयइ पुज्जे खले चयइ ॥ ५९ ॥ पुद्गभवोवज्जियगुक्यकम्मसंभारभावतो सधे । खोणीवइणो तं देवयंव

आराह्यंति सया ॥ ४६० ॥ एगायवत्तधरणीवइत्तसंपत्तजसस्स । तस्सुप्पन्नो कइयावि पुत्तओ पट्टेवीए ॥ ६१ ॥
विहिउं वद्धावणयं नामं कुमरस्स कित्तिसारोत्ति । दिन्नं रत्ता सम्माणिऊण निस्सेसपुरलोयं ॥ ६२ ॥ परिवड्डिउमारद्धो
कमेणमज्झावयाणमुवणीओ । समहीयकलो जातो समलंकियजोव्वणो कुमरो ॥ ६३ ॥ परिणविओ य उव्वणजोव्वणकम-
णीयरायकुमरीओ । समयंसि तमभिसिंचिय रज्जे राया गुरुविराया ॥ ६४ ॥ नाणधरसूरिपासे गहिउं दिक्खं तवं तविय
तिक्खं । उप्पन्नंतनाणो पत्तो सो सिद्धिसंवंधं ॥ ६५ ॥ जह विहिया फलपूया फलसारेणं महामहीवइणा । अन्नेणवि
सिवसुहसिच्छुणा तहचैव कायवा ॥ ६६ ॥ -॥ फलपूजा ॥-

॥ ५ ॥ ५ ५ ५ फलपूयं अणुनरिउं फलसारे भूवईं इमो भणिओ । इण्हि जलपूयाइ जलमाररुह निसामेह ॥ ६७ ॥ ५ ५ ५ ५ ५
भूरिहिमनिम्मिओ इव पुंजियकप्पूरदलसमूहोव्व । रुपयमओ विसालो वेयड्डो नाम अस्थि गिरी ॥ ६८ ॥
रुपयमयम्मि तम्मि तमालकंकहिकयलिसंडाइं । दिट्ठारुणमरगयमणिसिहराइं पिव विरायंति ॥ ६९ ॥ तम्मि य
रहनेउंरचक्कवालानामं समस्थि गुरुनयरं । जम्मि तिमिराणभिन्नो लोओ मणिमहपहालोए ॥ ७० ॥ जत्थ गुरुमुत्तियाओ
हरिसहियाओ सुपयचक्कातो । सज्जासियसयवत्ता सईउ सरसी उव्वहसंति ॥ ७१ ॥ पणमंतखयरनिवइसिरपिंग-
मणिप्पहापिसंगयओ । जलहरसारो नामेण तत्थ खेयरवईं अस्थि ॥ ७२ ॥ नियट्ठाणवुद्धिजियजलहरावली जलहरा-
वलीनाम । तस्सस्थि हत्थिमंथरसंचारा सहयरी सारा ॥ ७३ ॥ तीए समस्थि जलरासिसिचिणिसूइयगहीरयावासो ।
जलसच्छप्पयईंचिय कुमरो नामेण जलसारी ॥ ७४ ॥ मयणोव्व अतणुरुव्वो समगजणविहियहिययवासो जो ।
कमलायरोव्व गुरुमित्तदंसणुलसियसुवियासो ॥ ७५ ॥ उत्तमकुलवयंसो वयंसजणसंगतोवि रायसुतो । कीलकए कया-
इवि पत्तो सायरगयगिरम्मि ॥ ७६ ॥ वेजजलचलणविधुट्ठगुरुमुत्तिमोत्तिचप्पयरो । सामे जम्मि दिणम्मिवि विभाइ

तारयसमूहोऽथ ॥ ७७ ॥ तस्मिन् समित्तो कुमरो आरामपरंपरं परिचममिरो । आयन्नह पक्काओ हक्काओ भिडंतसुहडाण
॥ ७८ ॥ के नाम इमे जुञ्जंति किंवि (वा ?) वेरस्स कारणमिमेसिं । पेच्छामो पुच्छामोति जंमिरो सो गतो तत्थ ॥ ७९ ॥
तो तेण ज्झत्ति दिट्ठा दोन्नि भडा दंतदट्ठनियउट्ठा । कयमीमभिडडिभाला रोसारुणलोयणकराला ॥ ८० ॥ समरारंभ-
रसमवसगलंतपस्सेयविंदुजालेण । रेणुप्पसमणकज्जे रणरंगं सिंचयंतव ॥ ८१ ॥ जुयलं ॥ मा जुञ्जह मा जुञ्जह ता मह
नियवेरकारणं कहह । इय कुमरवारियावि हु जुञ्जंति समच्छरा दोवि ॥ ८२ ॥ पररंति (पेरंति ?) अवसरंति य घडंति
विहडन्ति दिंति करणाइं । उम्मुक्कसीहनाया वगंति य खगवगगरा ॥ ८३ ॥ अन्नोन्नल्लप्पहरप्पवंचअन्नायखग-
घायहिं । दोण्हवि पडियाइं महीयलम्मि सहसत्ति सीसाइं ॥ ८४ ॥ ता तेसिं सीसाइं पमुक्कंकारपेक्कहप्पाहिं । अन्नोन्नं
उच्छलितं दंतैहिं डसंति अणुवेलं ॥ ८५ ॥ अवरोप्परासिदंप्पहारजजरियअंगुवांगाइं । जुञ्जंति कवंधाइंवि अच्छरिय-
कराइं कुमरस्स ॥ ८६ ॥ कुमरेणुत्तं भित्ता सीसकवंधाण रणरसुफारिसं । पेच्छह अतुच्छउच्छरियकारयं रोसवसयाण
॥ ८७ ॥ ते विंति देव सिंविणेवि नेव जं तंमि एत्थ सच्चविंयं । इय जंमिराण पडियं घड्डुगमवि पहरजज्जरियं ॥ ८८ ॥
सियदंतकोडितोडियअवरोप्पवरयणगंडखंडाइं । निजेट्ठाइं होउं तस्सीसाइंमि पडियाइं ॥ ८९ ॥ तो ज्झत्ति विंगकेसर-
सडाकडारियसमगगदिसियफं । तडिंजुजपिंजरीकयजयं व जायं सरहजुयलं ॥ ९० ॥ उक्खित्तकरप्पमुक्कफारफुत्कारसि-
क्करोसारो । वित्थारिज्जइ जेहिं दिणेवि तारयभरोव नहे ॥ ९१ ॥ अइघोरगज्जियारवरोदंतं पेच्छवं नरिंदसुओ ।
विन्दिहयहियओ जाओ मण्ण नट्ठा पुण वयस्सा ॥ ९२ ॥ तो भेरवभयजणयं सरहडुगंमि हु तिरोहियं सहसा । पेच्छइ
य पुरो वहुसूरकिरणभरसमहियं तेयं ॥ ९३ ॥ तं पेच्छिय विन्द्यतो चितइ कुमरो किंमिदयालमिमं । मइमोहधाउ-
खोहाणमहव मह किंमि अन्नयं ॥ ९४ ॥ इय धितंतो कुमरो जा थिरकयलोयणो तयं नियइ । ता तेयअंतरडियनर-

सरिसं पेच्छए किंपि ॥ ९५ ॥ नयणाणिमिसत्तप्पमुहलिंगवित्रायअमरसन्भावं । रइयकरकमलकोसो तं नमिय पयंपइ
कुमारो ॥ ९६ ॥ को पहु तुमं किमेवं मीसणरूवो ठिओ कहसु मज्झ । इय तेणुत्तो अमरो कुमरं पइ भणइ सुणसुत्ति
॥ ९७ ॥ अत्थि असमत्थसुहडं समत्थसुहडोहपत्तविजयंपि । जयसारं नाम पुं विजयावहरायलंकरियं ॥ ९८ ॥
तत्थत्थि वित्तसियकरवियरणसंजणियजणमणपमोओ । सम्मयसहितो चंदोव चंदतेउत्ति अत्थवई ॥ ९९ ॥ चंदप्पहा-
भिहाणा मणोहरा तस्स पिययसा अत्थि । चंदप्पहमइरा इव सरूवकयजणमणुम्माया ॥ ५०० ॥ बहुधणवईवि दूव-
जगाय सो कुणइ भूरिववहारे । कयकिचेहिं वि महिओ जलही रयणत्थि अमरेहिं ॥ ५०१ ॥ काउं कयाणयाइं कयाइं
पडणाइं पवहणे चडिओ । चलियो य मलयसिंघलकडाहकेसाइदीवेसु ॥ २ ॥ गच्छइ पोओ दूरा नीरभरं मच्छए
तरंगे य । फाडंतो तासंतो भंजंतो भूरिवेणेण ॥ ३ ॥ अनुकुलवायविहिमणविंभणप्पेरियंव जलजाणं । थेवेहिंवि
दिवसेहिं वंछियदीवेसु संपत्तं ॥ ४ ॥ तत्थ मणवंछियत्तहियजायवहुलाहपत्तपरिओसो । गहिउं सदेसजोगे कयाणए
तयणु वाहुडिओ ॥ ५ ॥ पवणप्पसराऊरिज्जमाणसियवडपयंडवेण । थोवदिणेहिंवि पत्तो पोओ जलरासिमज्झम्मि ॥ ६ ॥
एदंत्तरे अकालियवणपडलेहिं समगनहमगो । जीवोव अकज्जभवपावेहिं कलुसिओ दूरं ॥ ७ ॥ नहदप्पणे समुदो
संकंतो अह घणो जलहिसलिले । जणयंति विन्भमं दोवि सामला पेच्छिरनराण ॥ ८ ॥ झंपाए समुहसिरो सिंधुजले
निवडिऊण तडिपुजो । वडवानलोव रेहइ नहमंडलजंतजालोहो ॥ ९ ॥ अचंतथूलमलजलधारासारसलिलसंभारं । मुंचइ
मेहो मोयाविंउव जलहिं समजायं ॥ ५१० ॥ सामघणाली गयणे सामुकलियावली समुदम्मि । गजंतीओ पसरंति दोवि
गुरुगयवडाओव ॥ ११ ॥ नीतो दोइ घणो जलभरेण उहसइ तेण य समुदो । दोत्रिवि मिलिणनिमित्ता परोप्परं संचर-
तिव ॥ १२ ॥ एवं अकालभवमेहमंडलांडवरं पलोएउं । सबोवि पवहणजणो जातो कायवमूढमणो ॥ १३ ॥ रोरसमी-

रुक्मलिगातोदितगणियागणो सियवडोवि । पवटणचश्हियंणिव पडितो सह कुवखंभेण ॥ १४ ॥ गुरुक्खोलरोदावरोहं-
आवत्तगतभगणं । अणुभविक्कणं अब्भित्थिय गिरितडे विट्ठित्तो पोओ ॥ १५ ॥ अंगीकयगुरुक्खडा तरिया केवि तु
भवं व नीरनिहिं । अन्वरे व अगुरुक्खडा भवेद्य मग्गा सयुद्धम्मि ॥ १६ ॥ पवटणवड्वि वटुधणविणासदंसणधिसायधिव-
संगो । मग्गो अगाहसालिहे भववासे को रागा सुहिओ ॥ १७ ॥ तथणु जलभाणुसीए मयणागत्ताए निययदइओत्ति ।
आलिङ्गितो जहट्टियवटुं न नियत्ति रायंभा ॥ १८ ॥ आवाट्टिय सलिलाओ भोगत्थं तीए गिरितडे नीओ । सुहपरिणइए
जीवोद्य कट्टिओ नरयमज्झतो ॥ १९ ॥ सा तं दट्टुं न इग्गो भिवत्ति भीया गया जले द्धत्ति । सावायपरट्टाणे को चिट्ठइ
नायपरमत्तो ॥ ५२० ॥ सेलतलसिलासीणो पितेइ मज्जा चेव पडिक्खो । एस द्धयविहिंवितातो पुब्बल्लियदुक्कयवसयस्स
॥ २१ ॥ जं अमब्भयुराधणकणभरियंभि पवटणं विट्ठित्तियं मे । मरणंतद्वसणं सिंहुगल्लणाद्दग्गि संपत्तो ॥ २२ ॥ जं
जस्स जया जागए सुहमसुहं वा तयं तथा तेण । भेज्जमवलंविक्कणं सत्थिगं जेणिगं भणियं ॥ २३ ॥ जंजिय विट्ठिणा
ल्लिहियं तं त्थिण परिणमइ किं वियप्पेण । द्धय जाणिक्कण भीरा विट्ठुरेवि न कागरा दुत्ति ॥ २४ ॥ एवं विभावणागय-
निसायवसजायमणअचट्टंभो । अवलोइडं पवत्तो रमणीए पडयपणरो ॥ २५ ॥ गुरुसिद्धरगुद्दकंदरनियंनविज्जरसयाइं
पेच्छन्तो । भक्खंतो य फलाइं फग्गयदिवसाइं तत्थ ठित्तो ॥ २६ ॥ किच्छेणमवरदिवसे तग्गिरिसिद्धरंभि तुग्गमे चड्डिओ ।
अवल्लोयइ अइवदलं वणसंठं मेह्खंडं ॥ २७ ॥ अनिलतरलाओ जत्तो निवडंतो नजए कुसुमनियरो । सुक्कोदयडत्थ-
भवघणपडलाड व करयनिउरुंयो ॥ २८ ॥ जं मज्झट्टियकंचणगणिमगजिणभयणगिरणकपुत्थियं । कप्पहुमसंठंपिब सोदइं
आभरणगणजुत्तं ॥ २९ ॥ तंमज्झो गयणंगणयसिंणं जिणहं सुयवग्गं । मेरुंपिब अवलोयइ तलसंठियभद्दसालवणं
॥ ५३० ॥ आगाइ जस्स सिद्धरे संकंतानिलचला सियभयाली । गुरगिरिजिणपट्टाणपवत्तुजलपवहंपंतिव ॥ ३१ ॥

तस्मि पविट्टो सो नियइ निरुवमं रिसहसामिणो विवं । उम्मीलियभत्तिवमुहसंतरोमंचकुइतो ॥ ३२ ॥ नमइ य तं
भालतलगमिलियमहिमंडलो पहरिसेण । रइयकरजुयलकोसो नियइ य नाहं अणिमिमच्छो ॥ ३३ ॥ एत्थंतरम्मि एगो
चारणसमणो नहेण संपत्तो । कयतिपयाहिणो रिसहसामियं थोउमाडत्तो ॥ ३४ ॥ तिहुयणगुरुणो सिरिसहसामिणो
नमियंपायसयवत्तं । कयकरकोसो आणंदंअंचिओ संयवं काहं ॥ ३५ ॥ कणयच्छविणो अंसावलंविणो कसिणकुंतला तुन्भ ।
मंदरगिरिणो पंडगतमालतरुणो रेहंति ॥ ३६ ॥ जे सामिसाल तुह पयलीणा दीणावि ते नरा दूरं । भवताववज्जियंगा
विलसिरपउमालया हुंति ॥ ३७ ॥ मइसुयओहीमणपज्जाणि तुह केवलम्मि मग्गणि । तारनक्खत्तगहससिणोव सहस्स-
करतेए ॥ ३८ ॥ तं सामि समवसरणंमि सोहसे रइयरस्मचउरुवो । नारयतिरियनरामरचउगइजणवोहणत्थं व ॥ ३९ ॥
रायाणं रंकाण य धम्मयएसं तुमं समं दिससि । किं जयमुज्जोयंतो मेच्छकुलाइं चयइ सूरु ॥ ५४० ॥ तुह मिलणे मह-
जाओ बहुमाणवसेण रस्मरोमंचो । वणससयंमि कयंवत्स सव्वओ कुसुमनियरोव ॥ ४१ ॥ इय नीइचक्कसिरिनेमिचंदमुणि-
नाहनमियपयपउम । जह जाया तुह सिद्धी तं तह मज्जावि पहु पयच्छ ॥ ४२ ॥ इय थोउं रिसहज्जिणं उवविट्ठो तयणु
चंदतेओ से । पणमिय कयंजलिउडो उवविसिओ भणइ मुणिमेवं ॥ ४३ ॥ भयवं नरत्तनियअम्मजीवियव्वाण वसणठाणण ।
देवगुरुंदसणेणं मन्ने अजेव सहलत्तं ॥ ४४ ॥ ता पहु मह कहसु अवत्थममुच्चियं धम्ममह कहइ साहू । पूइजइ एस
पहू अट्टपगाराहिं पूयाहिं ॥ ४५ ॥ तहाहि । नेवज्जांगंधवखयदीवयफलसलिलकुसुमध्रुवेहिं । जिणपूया भत्तीण रइया
वियरइ सिवसुहाइं ॥ ४६ ॥ दूरे धणक्युन्धमववासण्णसुहाउ सत्तपूयाओ । एक्कावि मुहा लब्भा जलपूया हरइ संसारं
॥ ४७ ॥ जओ । जलभरियपत्तमेत्तो संसारमदोयही फुडं तस्स । जो ठवइ जिणस्स पुरो सीयलजलपूरियं पत्तं ॥ ४८ ॥
फलिहेण व सच्छेणं अमण्णव साउणा जिणवरिंदं । सीएणं सिसिरेण व जलेण अजति कयपुत्ता ॥ ४९ ॥ जेण जिणाउ न

अन्नं पूयापत्तं समस्थि तिजएवि । ता पूइऊणमेयं सहलं मणुयत्तणं कुणसु ॥ ५५० ॥ तं सोउं सो जंपइ नमिऊण सुणिं निवद्धकरकोसो । भयवमणुगगहिओ हं समयोचियधम्मकहणेण ॥ ५१ ॥ इय जंपिउं गओ गिरिनिज्जरणनिवायरुंद-कुंडम्मि । कयकमलपत्तपुडए गहिय जलं जिणहरं पत्तो ॥ ५२ ॥ दद्वणं भुवणगुरुं सुमरियपुव्विल्लिनियसिरिफुरणो । चित्तइ तइया नाहो जिणनाहो मज्झ जइ हुंतो ॥ ५३ ॥ ता हं नियसिरिवित्थरसमवत्थगणेण (?) नूणमच्चतो । इण्ह एयावत्थो करेमि एयंपि जलपूयं ॥ ५४ ॥ इय चित्तिय असमुल्लसियभत्तिपब्भारपुलइयसरीरो । पसरन्तभूरिआणंदअंसुदंतुरियपम्हच्छो ॥ ५५ ॥ सुंचइ पहुणो पुरतो जलपुडयं अत्तणो परिकलंतो । नरजम्मजीवियव्वाण सहलयं भुवणपणयस्स ॥ ५६ ॥ भणइ सुणी धन्नो तं पयडइ पुलओ तुहंतं भत्तिं । इति न दुडे पीए उगारा आरनालस्स ॥ ५७ ॥ सिवलच्छि-पेच्छियाणं उच्छाहो होइ एरिसोवम्मं । नहि सुकयसंगयाणं धम्मम्मि अणायरो होइ ॥ ५८ ॥ तेणुत्तं भयवं मे भवंतरे वि हु भवेज्ज तं चेव । देवगुरुधम्मतत्ताण देसओ विरइयपसाओ ॥ ५९ ॥ इय जंपिय तेण नओ गओ सुणी नहयलं अलं-करिउं । सोवि गुरुविरहविहुरो खणमेत्तमचेयणोव ठिओ ॥ ५६० ॥ नमिउं बहुमाणपुरस्सरं जिणं निगत्तो जिणाययणा । नियपुरगमणोवायं चितंतो गमइ दिणसेसं ॥ ६१ ॥ एत्थन्तरम्मि नहमगसंणिनगोहसाहिसिहरम्मि । अल्लीणा आगं-तूण पक्खिणो इत्ति भारुंडा ॥ ६२ ॥ ते माणुसभासाए नियवुत्तं कर्हिति पुत्ताणं । एक्केण जंपियमहं जयसारपुराड संपत्तो ॥ ६३ ॥ तप्पुरसमगवणिवगअगणीचंदतेयनामो जो । संमिन्नपवहणो सो मओ अपुत्तोत्ति जणवाओ ॥ ६४ ॥ निमुओ निवेण तो से गहितो निव्वुडिऊण घरसारो । जे जोयंति असंतंमि ते न किं संतमिह छिइं ॥ ६५ ॥ गुत्तंपि धणं कहियं कयत्थणाकंपिराए कंताए । अत्तंमि न णस्संतं कज्जं किं सयणदविणेहिं ॥ ६६ ॥ एयं आरामियजणक-हिज्जमाणं मए सुयं वच्छा । इय भारुंडपर्यपियसवणा सो चित्तइ ससोओ ॥ ६७ ॥ पेच्छ जहा मह लच्छी पसरंत-

सुवन्नतारसारावि । सिंघंषि खयं पत्ता गिम्हसमुम्भूरयणिव्व ॥ ६८ ॥ अत्थज्जणहुव्वुद्धी दिन्ना दिव्वेण मज्झ रूढेण ।
किं देइ करचवेडं कयाइ छुविओ विहिविलासो ॥ ६९ ॥ किविणण चक्कवट्ठी जाओहं सव्वहा जओ न मए । दव्वओ
विरइओ सुपत्तित्थेसु धणिणावि ॥ ५७० ॥ किं सायरतरणयणज्जणं विणा मज्झमासि न वहंतं । जं मे गया सिरी
जीवियंषि संदेहमणुपत्तं ॥ ७१ ॥ पत्तावि पलइविय अपुन्नवंताण निच्छियं लच्छी । किमभगगिहल्लीणा होइ थिरा
कामहुव्वेणू ॥ ७२ ॥ सुकुमालतणू पेस्मेकमंदिंरं विमलसीलकलियंगी । कह सहीही मह कन्ता कयत्थणं रायभडज-
णियं ॥ ७३ ॥ नूणं न मए रस्सो धम्मो विहिओ भवंसि पुव्विहे । जमहं विडंयणाडंवरं इमं इह भवे पत्तो ॥ ७४ ॥
तत्थ गमणुस्सुतोवि हु गच्छामि कहं उवायहीणोहं । कहमकमचंकमणो पंगू वंछियणं जाइ ॥ ७५ ॥ जइ जामि तत्थ
लच्छि ता निवधत्थंषि नूण वालेसि । गुरुविसवेगविलुत्तंषि चेयणं मंतवाइव ॥ ७६ ॥ इय तस्स धणविणासासुहि-
यस्स निसा ठिया पहरसेसा । पुत्ताण गमणठाणाणि कहिय गच्छंति भारंडा ॥ ७७ ॥ जो चलिओ तन्नयेरे पाए
सो तस्स दढयरं लग्गो । उट्ठीणो भारंडो मणनयणजवेण जाइ नहे ॥ ७८ ॥ नवरं सो विहिविलसियवसेण विच्छुट्ठि-
ज्जण तप्पाया । पडिओ समुदसलिले विमुहविही कुणइ नो किं वा ॥ ७९ ॥ मज्जेतेणं तेणं जिणगुरुचरणण सुमरियं
सहसा । तस्सणुभावओ मरिडमच्चुए सो सुरो जाओ ॥ ५८० ॥ कालेण चारणस्समणतगुरु तंमि चेव कप्पस्मि ।
जातो सुरो तहा पुव्वभवभवो ताण नेहोवि ॥ ८१ ॥ नाऊणं नियचवणं तेणुत्तो गुरुसुरो सुही एवं । पत्ते मणुयत्ते मं
पडिवोहेज्जसु तुमं भित्त ॥ ८२ ॥ पडिवन्नं तेण तयं तो सो चविज्जमेत्थ वेय्हु । खयरिदसुओ जाओ चलिओ य
पकीळिं एत्थ ॥ ८३ ॥ एत्थंतरे मए सुसुहसंगविमोहओ वहुविणेहिं । सरिया पुव्वभवहुगपडिवोहंभत्थणा तुज्झ
॥ ८४ ॥ तो मडधडसिररणसरहरुवप(पमईय)विरइयं पच्छा । नियसाहावियरुवं तुह विव्वमकारणे कुमर ॥ ८५ ॥

ता वच्छ अपदंशपिव नराण रजंपि होइ असुहाय । गिम्हनईनीरपिव झिजइ अणुदिवसमवि आउं ॥ ८६ ॥ नरनय-
णाणिसत्तन जोधणं नो कथाइ ठाइ थिरं । कलुसाराहावाउ सया बहुलनिसाओव मयच्छीओ ॥ ८७ ॥ किं बहुणा
संधं पि छु विणस्सारं भवसमुब्भवं वरु । सारयधणोघ सोयामणिघ जलबुद्धुतोहोत्र ॥ ८८ ॥ ता वीरयायदेवं पडि-
वजसु तं सारायसुद्धिता । पाविय वंछियफल्यं कप्पतरं सरइ को निन्नं ॥ ८९ ॥ निगंथंमि गुरुंमि गुरुबुद्धिं कुणसु मा
पुण सगंथे । पत्तम्मि सुयणसंगे मगइ किं कोइ खल्लोहि ॥ ९० ॥ सुत्तुमतत्ते अंगीकरेसु जीवाइयाइं तत्ताइं ।
को गुंजाओ गिण्हइ चइऊण महघरणनिहिं ॥ ९१ ॥ पडिवोहिउं तुममहं जाओ निरिणो नियम्मि पडिवन्ने । तं
सुणिय जाइसरणेण नियमवे पेच्छिय कुमारो ॥ ९२ ॥ जंपइ पणामपुछं पडिवनं पालियं तण साभि । तं मोतुं नन्नो
विहियणेवि परमोववयारी मे ॥ ९३ ॥ दण्हिं गिहधम्ममहं काहमरात्तोमि राद्यविरइण । किं गगगुहगयसज्जं कजे
काइं तरइ कल्लो ॥ ९४ ॥ उय तेणुत्ते तियसे राहसत्ति तिरोहिण गतो तेओ । अब्भंतरिण तरणिमि दुरवल्लोओ
पयावोद्य ॥ ९५ ॥ संपत्तामिचजुत्तो पत्तो नगरे गुरुफमे नसिउं । गिण्हइ गिहधम्मं कल्लोणे को पमायपरो ॥ ९६ ॥
रंकेण व रयणनिही वरविजो वाहिणद्य संपत्तो । सद्धंमो तेणं सो कयकिजं कलइ अप्पाणं ॥ ९७ ॥ उम्भत्तजोघणुद्दाम-
कागकमणीयाकयकंतीओ । नत्तरनिधंविणीओ पुत्तो परिणाविओ पिउणा ॥ ९८ ॥ तं अहिंसिचिय रजे पवजं गिण्हइ
खयरसाया । इहलोइयपारलोइयसुहकजे उज्जया गरुया ॥ ९९ ॥ जलसारखगरचकी परचकफमणइयमणुकरिसो । पालइ
परारंतपहो नियरजसिहिं सुइदोद्य ॥ ६०० ॥ लीलाण परिचलिरम्मि जम्मि माणिकमयविमाणेहिं । गयणयलमलंकिजइ
रायावि किंकिणिकलरवेहिं ॥ १ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे कुणइ संघबहुमाणं । जिणजत्ताव पवत्तइ मंदरनंदी-

सराईसु ॥ २ ॥ इय सद्धम्मं रज्जस्सिं च परिपालिऊण बहुकालं । नामेण रयणसारं कुमरं रज्जे ठवेऊण ॥ ३ ॥
नियजणयचरणमूले दिक्खं गहिऊण कयतवच्चरणो । पावियकेवलनाणो पिउणा सह सिद्धिमणपुत्तो ॥ ४ ॥ विहिया
जह जलपूया सिवसुहहेऊ इमस्स संजाया । तह जायइ खन्नस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ ५६ जलपूजा ॥ ५६

५६ जलपूया सिवसुहहेऊ इमस्स संजाया । तह जायइ खन्नस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ ५६ जलपूया ॥ ५६
५६ जलपूया सिवसुहहेऊ इमस्स संजाया । तह जायइ खन्नस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ ५६ जलपूया ॥ ५६

अथि फुरियमहानीलमणिसिलासालफलिहकविसीसं । सिखसुमियवणपरिवेडियं व नयरं महासालं ॥ ७ ॥
पडिंमिरमणिमित्तिपडिंविंयितरणिभासुरत्तेण । जं पेच्छिजं पि तीरइ न तस्स कत्तो रिपरिभूई ॥ ८ ॥ थिरमइपया-
वजियगुरुअहिमयरो जलनिहिन्न गंभीरो । चंदोन्न पवित्तकरो राया नयसुंदरोत्थि तहिं ॥ ९ ॥ बहुसंखमंडलगणपहार-
परजयपवित्तयाकलिओ । जो एक्कमंडलगणपहारपरजयपवित्तोवि ॥ ६१० ॥ तस्सतेउत्तरुणीपहुत्तपयमस्सिया पिया
अथि । नामेण कम्मणावि हु विजयवई सीलकुलभवनं ॥ ११ ॥ डज्जंतागुरुनवधूवसुंदरो धूवसुंदरो नाम ।
तीएत्थि हत्थिमंथरगई रईसोवमसरीरो ॥ १२ ॥ समराइओ सुसाहुन्न समणधम्मोव जो सुहयमुत्ती । सक्कमलच्छि-
विलासो गयकरवाहो महुमहोव ॥ १३ ॥ कुमरो कयाइ आरुहिय खंधरं गुरुकेणुरायस्स । छत्ततिरोहियतरणी तरुणी-
करचलिरसियचमरो ॥ १४ ॥ पुरओ पयट्टहयघट्टचडियनियमित्तपत्ति(पंति ?)संजुत्तो । पविसिय सहाए पणमिय पिउणो
पुरओ समुवविट्ठो ॥ १५ ॥ एत्थंतरम्मि रणवीराइणो दारवालविन्नत्तो । दूतो दुयं नारिंदं नमिउं विन्नविउमारद्धो
॥ १६ ॥ पहु पिहुपयावपावयपुल्लपरिपंधिसत्थसलहेण । गयनयरपहुरणवीरेण पेसिओ तुह सयासे हं ॥ १७ ॥
मह पहुणा तुह आणा पट्टविया जह पयच्छ पइवरिसं । मह करमह न पयच्छसि धरियधणू होसु ता समुहो ॥ १८ ॥
असरिससामत्थेणवि तेण तुमं नीइपुव्वयं भणिओ । को महुरोसहसज्जे रोए कहुओसहं देइ ॥ १९ ॥ ना हरिही रज्जं पि हु

जइ न धरसि तस्स सासनं सीसे । हरिणाहिवम्भि हरिणावमाणणा नणु अणत्थाय ॥ ६२० ॥ कहियं हियं तुह मए
तं कुणसु नरिंद जं मणोभिमयं । सम्पुरिसपयडियं पिहु निण्हति हियं न देवहया ॥ २१ ॥ छन्नोवि रायरोसो दूउत्तस्स-
वणओ ठिओ पयडो । किं उट्ठहिओ अगगी जालिजंतो न पज्जलई ॥ २२ ॥ भिवडिघडणा निवइणो समंभि विसमत्त-
मुवगयं भालं । धिज्जाइयस्स वत्थवंदपवमाणतरलणओ ॥ २३ ॥ भणियं निवेण रे दूय तुह पहू मइ करं गहिउ-
कामो । अहयं तु नियकरेणं रणे गहिस्सं सिरं तस्स ॥ २४ ॥ तं पेसिय तुह पिहुणा विरोहिओ हं धुवं सनासाय ।
निदायत्तमइदप्पडिबोहो किं सुहं वेइ ॥ २५ ॥ आणसु तं नियनाहं नाहं जं से सहिस्समवराहं । साहूणं सिंगारो
अविणयसहणे न निवईणं ॥ २६ ॥ दूएणुत्तं निव नियघरट्ठिओ जइ वहेसि भडवायं । तइ जइ समरुच्छंगेवि ता
तुमं चेव वीरवई ॥ २७ ॥ रायाह जाहि आणेहि नियनिवं दूय देससीमाए । जइ रणनिहसो दंसइ पोरुसकणयुब्भवं
वन्नं ॥ २८ ॥ इय जंपिय सम्माणिय विसज्जितो राइणा गतो दूतो । अंबत्तं कुवियावि हु उज्झंति नरेसरा न नयं
॥ २९ ॥ ताडाविया निवइणा रणभेरी भीरुभूरिभयजणणी । तो नयनिवेण कुमरेण पत्थिया समरगमणाणा ॥ ६३० ॥
नाऊण निब्बंध्यममच्चमंडलीजंपिण दिन्ना से । रणगमणाणा तो सो चलिओ चउरंगवलकलिओ ॥ ३१ ॥ गुरुगयघडासु
तुरयावलीसु रणइणिरकिंकिणिरहेसु । रायाणो सामंता मंडलिया चडिय संचलिया ॥ ३२ ॥ परिकलयंता बहुआउडाइ
आओहूणाय जोहोहा । कुमरं परिचारंता जंति पहे समरनिबडिया ॥ ३३ ॥ विरइयवहुप्पयाणयसयलंधियनियदे-
ससीमाए । पत्तो कुमरो रिउनरवईवि सवल्लो सदेसंते ॥ ३४ ॥ उवमुत्तसपहुगरुयप्पसायनिकयकयुज्जमा सुहडा ।
अन्निभडिया असमुच्छलियमच्छरुच्छाहसंजुत्ता ॥ ३५ ॥ हरिकरिरहचडिण्हिं हयगयसंदणठिया पडिक्खलिया । पय-

चारिणो वि रुद्धा समच्छरं पायचारीहिं ॥ ३६ ॥ वावहसेहमह्यभलीनारायसरपहारेहिं । भिज्जंता गुरुगयधडभ-
तुरया जन्ति जसगेहं ॥ ३७ ॥ अन्नोन्नं दंतोहिं तोडंति सिराहं मुक्कहक्काइं । निप्पसरअसिप्पहरे वियरंति य वगिर-
धडाइं ॥ ३८ ॥ नवरंगमेहंडवरसियछत्तेहिं मही जहिं सहइ । रत्तुप्पलइंदीवपुंडरियकयोवहारव ॥ ३९ ॥ खग्गाहय-
गयकुंभगनिगयाउ पडन्तमुत्ताओ । रेहन्ति खगपाणीयगलिगुरुविदुणोव जहिं ॥ ४० ॥ असिघायुच्छलियठियं गयस्स
जस्सन्तिगे मुहं करिणो । सो सहइ तेण दुकरोव सचउकुंभोव दुमुहोव ॥ ४१ ॥ एयारिसे रउदे रणम्मि रणवीरराय-
कुमरेहिं । पारद्धं पहरें परोप्परं करडिचडिपहिं ॥ ४२ ॥ लल्लक्कुक्कहक्काछलप्पहारेहिं दोवि पहरंति । भिंदंति य
अन्नोन्नं दंतप्पहरेहिं करिणोवि ॥ ४३ ॥ रिउकरिणा कुमरकरी निवाडितो दसणपहरज्जरिओ । पडिओ कुमरो गहिओ
य वेरिकरिणा करगोण ॥ ४४ ॥ उच्छालिओ य गयणे निवडन्ते निवमुए रिउनिवेणं । धरिओ खग्गो उद्धं (हेट्टं?)
जह भिज्जइ निवडिरो कुमरो ॥ ४५ ॥ निवडंतेणं तेणं रिउखगं वंचिउं तओ इत्ति । पयघाएणं पट्टीए पहणिउं पाडि-
ओ वेरी ॥ ४६ ॥ पडिओ सो करिपुरओ कोवमयंघेण तयणु तेणावि । दिन्नो पाओ सीसे दलियक्कवालो मओ राया
॥ ४७ ॥ दहुं वेरिविणासं असुरामरखेयेहिं परिमुक्का । कुमरसिरम्मि निवडिया अलिउलसुहला कुसुमवुट्टी ॥ ४८ ॥
अहियंमि हए गहिया कुमरेणमनायगा सिरी सयला । “को वा कुणइ पमायं लोहे अच्चमुयत्थस्स” ॥ ४९ ॥ मोत्तुं निय-
पहुत्तं रिउसामंता कुमारमणुसरिया । “लज्जंति जियंताणवि सत्ते विरलच्चिय मयाणं” ॥ ५० ॥ तो इत्ति समरवीरो
रिउत्तो कुमरमस्सिओ सरणं । “समयाणुवत्तणं सइ नीई किं पुण इय अवाए” ॥ ५१ ॥ कुमरेणावि विइन्नो तप्पिट्ठीए
निओ अभयहत्थो । “इयरम्मि वि निरणुसया किं पुण सरणागए गरुया” ॥ ५२ ॥ काराविय नियआणं दिन्नं तस्सेव
तज्जणयरज्जं । “असमाणाच्चिय निचं कोवपसाया महंताण” ॥ ५३ ॥ तेणवि सिंगारसिरिभइणि परिणाविओ नरिद-

सुओ । “पञ्चवयसिधो नो कालविलंबं कुणह गरुओ” ॥ ५४ ॥ चलिओ सदेससमुहो रायंगरुहो जयजियजसोहो ।
“सिद्धे कजे को वा वसइ सयओ विएसम्मि” ॥ ५५ ॥ कुमरेण समं नवनरवईवि चलिओ सकीयबलकलिओ । “नियप-
हुपयसेवकिय मूलं लच्छीए न पमाओ” ॥ ५६ ॥ आगच्छंतो कुमरो पत्तो वियडाडईए एफाए । हितालतालातीतमाल-
वडसालकलियाए ॥ ५७ ॥ जा उत्तमसोहंजणविसालअक्खा मणोहरपवाला । पाडलअहरा पधयपओहरा सहइ रमणिष
॥ ५८ ॥ विलसंतसरलचित्ता गुरुहयमाराय साहुसेणिष । भद्यावलिष संजायपत्तबोही असोया जा ॥ ५९ ॥ मज्झंमि
तीए वणसंडवेढियं गयणलग्गुरुसिहरं । सप्पायारंणि भयावहारयं नियह जिणभवणं ॥ ६० ॥ रेहन्तरुवदारं नरिंद-
मिव पत्तमूलरेहं जं । संपूरियसुयणासं लसिरामलसारसहियं च ॥ ६१ ॥ सधत्तो अनिलचला कंकेलितमालसाहिणो
जस्स । जिणरायभयुब्भन्ता रागहोसव कंपंति ॥ ६२ ॥ दट्ठण देवमंदिरमावासइ तत्थ निवसुओ सबलो । तम्मि
पविट्ठोशिय इत्ति मुच्छिओ पेच्छिऊण जिणं ॥ ६३ ॥ सिसिरकिरियाविरयणा संपावियेयणो ठिओ सत्थो । आपुच्छिओ
य मुच्छाए कारणं मंतिवगेण ॥ ६४ ॥ जंपइ कुमरो मह देवदंसणा जाइसरणमुप्पन्नं । सच्चियं तेण भवहुगमाय-
न्नह तयं तुब्भे ॥ ६५ ॥ पत्तरहराइयंमि सरेव आरामरम्मगमंमि । साहससारो नामेण आसि एणो तुरयचोरो
॥ ६६ ॥ गंतूण दूरेसे अत्थत्थी हरइ गुरुरयतुरंगे । विक्किह य दूरतरे “का वा लुद्धाण मज्जाया” ॥ ६७ ॥ नियभो-
गंमि निजुंजइ दविणं वियरइ य दीणवंदीणं । “मोत्तूण चागभोगे नन्नं लच्छिफलं अहवा” ॥ ६८ ॥ कइयावि कडीतड-
वद्धखगघेणू तुरंगहरणत्थं । पत्तो सुवासनामे गामे दिणपच्छिमे जामे ॥ ६९ ॥ मणपवणजवे विलसन्तलक्खणे
तेयतरलयाकलिए । पेच्छइ अतुच्छदुवादलाइं चरमाणए तुरए ॥ ७० ॥ तो सो चिन्तइ एयाण मज्झओ जइ हरामि
एफंमि । दालिइस्साजंमं ता देमि जलंजलिं नूणं ॥ ७१ ॥ इय विंतिपपओसे लग्गो मगंमि सो तुरंगण । “जो जक्खे

पत्तो स पमायं कुणइ किं तस्मिन् ॥७२॥ गामाहिवस्स गेहे गया हया सूरतेयनामस्स । दारेषिय सो रहिओ “परघर-
माविसइ को सहसा” ॥७३॥ पविसन्तगोउलुच्छलियरभरादिसदेहजही सो । तस्मि पविट्ठो “अण्णं न चोरजारा पया-
सन्ति” ॥७४॥ मं पेच्छिही महीए कोवित्ति विचिन्तिउं वडे चडिओ । “जइ होइ अप्परक्खा दक्खा तह संपयट्ठति”
॥ ७५ ॥ वडसंठिएण दिट्ठी पक्खित्ता तेण गेहमज्झस्मि । दिट्ठा य दीवउल्लोयपयडिया अंगणा एगा ॥ ७६ ॥ हरि-
णिंदलासमज्झा हरिणकुमुहीय हरिणसमनयणी । विहुमअहरा पीवरपओहरा कणयवन्नघरा ॥७७॥ तं पेच्छिऊणमस्साव-
हारओ चित्तए कयत्थो सो । नियरूवसिरी अहरीकयसिरी जस्सिमा भज्जा ॥ ७८ ॥ एत्थंतरस्मि दुद्धासु सयलसुरहीसु
सेरहीसुं च । वढेसु तुरंगेसुं जणप्पयारे ठिए विरले ॥ ७९ ॥ परिपालन्ते अस्सावहारिपुरिसस्मि ह्यहरणसमयं । मंदं
मंदं गेहाओ निगया सा मयंकमुही ॥८०॥ तं दहुं संचरिओ सो झत्ति वंडओवरिमसाहं । आगच्छंतिं तो नियइ वडतले
दारमगेण ॥८१॥ संपत्ता वडतलवियडअयडतडनियडविडभडसासे । तीए अवलोइओ सो नववयदिदहसंठाणो ॥८२॥
मयणाहिमांसलामोयमणहरो रइयरम्मसिंगारो । परिपीडियतूणीरो करकलियपयंडकोदंडो ॥ ८३ ॥ दट्ठण तयं उक्कं-
ठियाए तक्कंठवियवाहाए । आलिंणिऊण भणियं किं सुहय तुहेत्तिया वेला ॥ ८४ ॥ सो जंपइ सुयणु जणप्पयारपसमं
ठिओहि पालन्तो । “अह्वेरिसकज्जरओ पयडइ किं कोवि अत्ताणं” ॥८५॥ तुह मोहमोहियमई मयच्छि अहमागतो
गुरुररण । “लीलावईविलासावहियमणाणं कुओ धिरया” ॥ ८६ ॥ गयगमणि तुह कज्जे सुहुं कंतं सिरिं च इह पत्तो ।
“अहवा तं सब्बसं जंमि मणो निवुइं वहइ” ॥ ८७ ॥ सा आह कहं तुमए नाओ अपयासिओ वि संकेओ । तेणुत्तं
विंवाहरि आयन्नसु तुज्झ साहेमि ॥ ८८ ॥ गुरुरयतुरयं आरुहिय आगतोहमिह अप्पकजेण । सच्चविओ तुमएवि डु
वियसियकुवल्लयदलच्छीए ॥८९॥ हयकीलणच्छलेणं मयच्छि तं पेच्छिया मए सुइं । “तुह रुवस्स न तित्ती पत्ता जरि

एणव जलस्स” ॥ ६९० ॥ असमस्सिणेहसवस्सरसवसुफुल्लनयणकमलेहिं । अवलोइओ तए वि हु अहमणिमिसविब्भम-
धराए ॥ ९१ ॥ नाओ तुहाणुराओ मए तए वि हु ममाणुराओवि । “नयणेहिंविचिय नज्जइ अहवा हिययट्ठिओ भावो”
॥ ९२ ॥ एत्थंतरम्मि तुमए धम्मिस्स छोडिज्ज कुसुमाइं । खित्ताइं इह पएसे अमिलाणाइं पि तवेळं ॥ ९३ ॥ मं
पेच्छिरीए उवेळ्ळिज्ज केसेहि विरइया वेणी । आमीलिय नयणाइं मं पेच्छिय तं गया सगिहं ॥ ९४ ॥ नाओ मएवि
भावो जह मह दिओ इमाए संकेओ । कहमन्नह अमिलाणाइं एत्थ कुसुमाइं खित्ताइं ॥ ९५ ॥ केसेहिं निसितमंमि
तह नयणमिलीणेण सुत्तजणे । अहमाहुओति वियड्डुए नायं मए जेण ॥ ९६ ॥ “वंकमणिआइं कत्तो कत्तो अद्धच्छि-
पेच्छियाइं च । उस्ससियंमि मुणिज्जइ छइल्लज्जसंखुले गमे” ॥ ९७ ॥ ता रंमोर तुहत्थे एत्थ अहं आगओ तुह वियोगा ।
पज्जलियजलणजालजलिरंगो इव दिणं गमिडं ॥ ९८ ॥ सा जंपइ चउजामोवि सासि मह वासरो सहसजामो । तुह
विरहविहुर्युस्मायजायतावाय संजाओ ॥ ९९ ॥ अमयमओ पिय तं जं तुह मिलणे मे गओ विरहतावो । “किं सिसिर-
किरणजोण्ढाजोगो धम्मं न पसमेइ” ॥ १०० ॥ इय रस्मयेम्मसवस्ससुवहंतेहिं तेहिं तत्थेव । रइया रयकीला उल्लसंत-
मयमयणमचेहिं ॥ १ ॥ तविरइयरयविन्नाणविरयणा हरियहियवावारा । सा आह कुणसु तह नाह जह सया होइ मे
जोगो ॥ २ ॥ फुट्टइ हिययं दब्बइ सरिरयं जाह जीवियवंपि । मह तुह विरेह ताहमवि सहं तए आगमिस्सामि ॥ ३ ॥
तस्नेहमोहिओ सो जंपइ ता चलसु तयणु तीउत्तं । गहिडं नियामरणं इण्हिपि समागमिस्सामि ॥ ४ ॥ ता अप्पसु
नियक्खुरियं जह पेडं दारिडं तमाणेमि । जायइ खडक्खडा तालयस्स उग्घाडणे जेण ॥ ५ ॥ तेणावि खगधेणू समप्पिया
गहिय तं गया सावि । नवरं महइवेलाए आगया तस्स पासंमि ॥ ६ ॥ कूवयकंठनिविट्टस्स ज्झत्ति तीए समप्पिया
छुरिया । “सिद्धे कळे को वा परवत्थुं धरइ सकरम्मि” ॥ ७ ॥ सह अप्पणा इमंमि ह्मं पडु दिन्नं तुह समग्गमाभरणं । इय

जंपिरी तमप्पइ “किमदेयं वा सिणेहस्स” ॥८॥ संगोवियं समगं तेणवि तं वंधिऊण परिहाणे । “इयरं पि सुगगहीयं कुणंति दक्खा किमु न दवं” ॥ ९ ॥ भणियं च तीए पिययम तुह कजे मारिऊण दइयं पि । इह पत्तत्ति पयासइ पयईतुच्छत्त-
मित्थीणं ॥ ७१० ॥ तं सोउं सो सुहडो जंपइ एयं तए कयमजुत्तं । जं सो हओ “न गरुया पावपवत्तावि निक्करुणा” ॥ ११ ॥ परमणीपरिभोगो एकं वीयं तु तीए अवहरणं । तइयं धणावहारो तुरियमविणासिनरहणं ॥ १२ ॥ जइ हं नागच्छंतो ता हुंतं एकमवि न पावं मे । आगंतुं चत्तारिवि पावाइं मए कयाइं पिए ॥ १३ ॥ एक्कंकि पि समत्थं दाणे नेरइयदारुणहुहस्स । चउपावभरक्कंतो कहिं हयासो गमिस्समहं ॥ १४ ॥ नंदंतु नरा तेच्चिय चिरं न चित्तावि जाण संजाया । परमणिविसयविसया सीलालंकारकलियाण ॥ १५ ॥ हा हा हयविहिविहिओहमिह महापावमंदिंरं तुमए । कहमन्नह मं पत्ता एवंविहपावरिंछोली ॥ १६ ॥ गन्भाउ किं न गलिओ वालो मिलिओ न किं विडालीए । जमहम-
कज्जपरंपरपत्तं जाओ अणज्जमई ॥ १७ ॥ एवं वेरगवसा वागरमाणं निसामिय तयं सा । चित्तइ नूण विरत्तो एसो एरिसससुझावा ॥ १८ ॥ ता मह सवत्तिपुत्ताण गोससमयंमि साहिही नूणं । ते मं कयत्थिऊणं दुम्मरणेणं हणिस्संति ॥ १९ ॥ ता किं इमिणा मह रक्खिएण नियवेरिणत्ति चित्तेइ । “खणरायविरायन्तं पायं पयई महिलियाण” ॥ ७२० ॥
पहु मह खमसुत्ति पयंपिऊण खामणमिसेण तप्पाए । उप्पाडिऊण अयडे झडत्ति सुहं खिवइ पावा ॥ २१ ॥ तिवाणु-
राय(इ)णीविय संज्झव विराइणी दुयं जाया । “खणरायविरायत्ते महिलणहवा किमच्छरियं” ॥ २२ ॥ दट्ठूण भंडं अयडे पक्खित्तं हयहरो विचिंतेइ । “धिद्धी धिरत्थु इत्थीण गत्थसत्थेक्कमूलण” ॥ २३ ॥ उम्मीलिओ वि दूरं इमंमि सुहं इमाए अणुरातो । सहसच्चिय पणडो पवणाहयसरयज्जओव ॥ २४ ॥ जत्संगं अप्पिज्जिइ दिज्जिइ दुदेयसव्ववंपि । सो वि हु एवं हम्मइ “अहो महेलाण मूढत्तं” ॥ २५ ॥ पंचविहं विसयसुहं उवसुत्तं जेण सह सिणेहेण । त्वेलं विय सोवि हु

स्थितो पायाए कूर्धंभि ॥ २६ ॥ ददूण कूडकवडाहं नूण महिलाण पुधरायाणो । सुत्तुं तणंव ताओ क्षत्ति तवचरणमकरिं सु ॥ २७ ॥ पवगिघ चलसहावा महिला ल्यघ जणियसंतावा । उप्पाइयवसणसया कुर्विंदसालघ पडिहाइ ॥ २८ ॥ सुंदरवआ आमोयमणहरा सुहरसाय भुजंती । महिला किंपागफलावलिघ उप्पायइ अणत्थं ॥ २९ ॥ सूरौवि कयत्थिजाइ खंडिजाइ सघयावि रायावि । राहुसिरीए इव महिलयाए कलुससहायाए ॥ ३० ॥ अंतोहुंतुम्मीलियपकामरसपरिया परिब्भमरी । भयणं व कुलं मदइइ महिला नवमेहमालघ ॥ ३१ ॥ दुइन्ता कुडिलगई परमणियविवज्जिया सुइविहूणा । कस्स न भय-
सुत्पायइ नियंयिणी सत्पिणीघ सया ॥ ३२ ॥ कज्जम्मि जाण कीरइ धणज्जणं चोरियाइ काऊण । ताणेरिसं सरूवं ता “पज्जत्तं ममिस्सीहि” ॥ ३३ ॥ असरिसेवेरगविभावणावसुखसियगुरुतरविवेए । अस्सावहाएपुरिसे एवं परिभावयंतम्मि ॥ ३४ ॥ पविसिय निहंमि गहिऊण हलकुसिं पइगिहे खणइ खत्तं । “किमकजं वा वजियमज्जायाणं महिलियाण” ॥ ३५ ॥ गंतुं मज्जे धाहावाए जइ धाह धाह धाहसि । पविसिय चोरेणं ठकुरो हओ नीयमाभरणं ॥ ३६ ॥ तं सोऊणं सहसा ससंभमा साउहा सपाइया । ठकुरपुत्ता परिवेढयन्ति गिहमुगहफरवा ॥ ३७ ॥ तुरयकुडिप्पमुहाइं ठाणाइं नियंति केवि दीवकरा । अन्ने उ अंसिंसति य चोरपयं पयइनिणनरा ॥ ३८ ॥ ददूण गिहावेढं हयावहारी विचिंताए एवं । मह संक-
डमावडियं छुट्ठिंसं ता कहं इण्हि ॥ ३९ ॥ न तरेमि विणिगंतुं भडपडलावेढियाओ भवणाओ । दुक्कम्मभरावरिओ नरयट्टाणाउ जीवोघ ॥ ४० ॥ जइ देमि गिहा बाहिं निगयसाहाए क्षत्ति झंपमहं । ता वियडे अयडम्मि पडामि सुहडो-
घ निब्भन्तं ॥ ४१ ॥ नूणं मह हयहरणप्पवेसभवपावपडलविडविस्स । इह मरणेणं कुसुमं फलं तु होही नरयपडणं ॥ ४२ ॥ मं दट्ठुमिमे गोसे चोरोत्ति विचिन्तिउं हणिस्सन्ति । ता तमतितोहिओ वडठिओवि अप्पं पयासेमि ॥ ४३ ॥ इय चिन्तिय तेणुत्ता ते तुम्हाणं कहेमि संधंभि । दुत्तंतं मं पच्छा सुंचेजइवा ह्णेजाइ ॥ ४४ ॥ तं सोउं तेहुत्तं इहट्ठि-

ओषि हु कहेसु तो तेण । कहिओ आमूलओ नियओ तीए य बुत्ततो ॥ ४५ ॥ भणियं च जइ न पत्तियह मज्झ ता
नियह कूवयस्संतो । सुहइं धणुतूणीराभरणजुयं संपयं चेव ॥ ४६ ॥ तं सोलं पक्खित्तो तेहिं वरत्ताए दीवओ कूवे ।
सच्चविओ य तरंतो जहकहियगुणो मओ सुहडो ॥ ४७ ॥ कुवाओ तमायड्डिय गहिज्जणाभरणमुज्झियं मडयं । “निज्जीवेण
वि कूलं जेण तयं धिप्पए नन्नं” ॥ ४८ ॥ एयविरहं न सत्ता सहित्तं विचिंतिउं व पुत्तेहिं । लहुमायावि हु वद्धा
सद्धिं मडएण कुएहिं ॥ ४९ ॥ तंवि विणिगहणिज्जो चोरोत्ति पयंपिओ हयहरो वि । “पावन्ति चोरजारा जइ वा किं
कट्थई पूयं ॥ ७५० ॥ नवरं तुमए सबंधि साहियं तेण तं विमुक्कोत्ति । “उवयारओ सदोसोवि सुअए जेणिमा नीई”
॥ ५१ ॥ मडयं चडावियं सूलियाए निद्धाडिया य लहुजणणी । “रोसो न मयरिउम्मि वि गच्छइ किं पुण जियंतंमि” ॥ ५२ ॥
धरिऊण सवहुमाणं दिणत्तिगं अस्सहरयपुरिसं पिउमयकिंचं काउं सम्माणेउं विसजन्ति ॥ ५३ ॥ अप्पं संपइ
जायं व जमसुहा निगयं व मन्नंतो । वचंतो निगामे पत्तो सो इह अरंतंमि ॥ ५४ ॥ पेच्छइ उत्सगडियं मुणिमेगं
मुत्तिमंतमिव धम्मं । पच्चक्खं पसमं पिव संकेयं पिव मुणिगुणाण ॥ ५५ ॥ पुधुपन्नविराओ अवलोइय सो मुणि ठिओ
हेडो(हिडो?) । दारिदभरकंतो नरो व संपत्तरयणनिही ॥ ५६ ॥ तो तं पणमइ तच्छलणकमलमिलमाणभालफलओ सो । सहलत्तं
कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ५७ ॥ आवद्धपाणिपउमो पुरओ उवविसिय जंपए एवं । रत्ते अमाणुसे पडु किं तवइ
तवंति मइ कहइ ॥ ५८ ॥ पारियकाउस्सगो उवविसिउं तस्स साहए साहु । खेयरमुणी महायस अहमिह आयाविउं
पत्तो ॥ ५९ ॥ जेणमिह तिरियविरइयकयत्थणा हणइ मज्झ दुक्कम्मं । वेज्जोवइट्टपरमोसहं व रोयं समगं पि ॥ ७६० ॥
तेणुत्तं पडु मइ कहइ कं पि धम्मं गिहत्थजणजोगं । “तीरइ निवाहेउं जो सो उक्खिप्पए भारो” ॥ ६१ ॥ आह मुणी
गिहिणोवि हु जायइ धम्मो जिणिदूपाए । सा होइ अट्टभेया अट्टमयट्ठाणनिम्महणी ॥ ६२ ॥ नेवज्जधूवदीवयअक्खय-

फलसलिलवांसकुसुमेहि । पूर्यति जे जिणं ते पुज्जा तिजयस्स वि हवन्ति ॥ ६३ ॥ कीरंति एफेक्कावि हरइ गुरुरोगसो-
गदोगे । किं पुण सखाओ वि हु विरइज्जंतीउ भत्तीए ॥ ६४ ॥ सखाओवि असत्तो काउं जइ कुणइ धूवपूयंमि । ता
धूवेण समं सो धुवं नियं दहइ दुक्कम्मं ॥ ६५ ॥ डज्जंतधूवभवधूमधूविओ इव सुयंधसवंगो । जायइ भवंतरेवि हु जीवो
उक्खिवियजिणधूवो ॥ ६६ ॥ तं सोउं सो जंपइ पहु नूणमहं कयत्थजणपढ्ढो । मरणंतवसणविणिगण तं जेण संपत्तो
॥ ६७ ॥ इय भणिय पणमिय सुणी लग्गो सो निययगाममगमि । गच्छंतो संपत्तो गामे सिरिसारनामंमि ॥ ६८ ॥
तंमि तवणीयकलसं नहगलगं जिणालयं नियइ । सिंगगसंगिनवतरणिमंडलं उदयसेलवं ॥ ६९ ॥ तं दहुं सो चित्तइ
दिणदुगसंबलयदविणकीएण । धूवेण जिणं पूइय पुन्नप्पसरं समज्जेमि ॥ ७० ॥ इय परिभाविय गहिउं कप्पूरागरुवि-
मिस्सियं धूवं । पत्तो जिणालए पेच्छिउं जिणं हरिसिओ दूरं ॥ ७१ ॥ उल्लसिरमणो संदंतलयणो वित्थरन्तरोमंचो ।
पसरंतभत्तिभावो धूवं उक्खिवइ जगगुरुणो ॥ ७२ ॥ तयणु मणुयत्तनियजम्मजीवियव्वाण सहलयं कलिउं । वारं वारं
भूमिलियभालमभिनमइ जिणनाहं ॥ ७३ ॥ संचलिओ नियगामे पत्तो य तहिं पमुक्कअन्नाओ । तस्मि वि भवम्मि रिद्धी
जाया से धम्मसाहप्पा ॥ ७४ ॥ संपत्तआउअंतो जातो अमरो सणकुमारं से । नायं च धूवपूयाए अत्तणो तेणममरंतं
॥ ७५ ॥ परिभावइ य जहाहं करेमि जिणमंदिरं जमिक्खेउं । जायइ भवंतरे मे बोहिति विचंतिउं तेण ॥ ७६ ॥
रइयं जुगाइजिणजुयसुहुंगं जिणहरं कणयकलसं । दुट्ठदमयाभिहसुरो आइहो तस्स रक्खत्थं ॥ ७७ ॥ जिणचवण-
जम्मदिकखाकेवलनिव्वाणगमणदिवसेसु । समगममरेसरेणं भत्तीए महूसवे कुणइ ॥ ७८ ॥ इय समुवज्जियसुकओ
सुहुं सुरलोयसंभवसुहाइं । चविय तओ इह जाओ एसो हं तुम्ह पच्चक्खो ॥ ७९ ॥ ता एयं जिणमंदिरमवलोइय
सुमरिया मए जाई । जह जिणधूवुक्खेवो जाओ कल्लणहेरु मे ॥ ८० ॥ तं सोऊणं मंडलियमंतिणो विंति जयइ जिण-

धम्सो । अप्पस्स वि जस्स कयस्स हुंति महईओ रिद्धीओ ॥ ८१ ॥ तयणु कुमारेण रिसहस्स सामिणो भत्तिपुलय-
कलिण्ण । पणमिय विहिओ अट्ठाहियामहो गरुयरिद्धीए ॥ ८२ ॥ तो चउरंगंचमूचयसंचाराअरियक्खमावीढो । अन्नंभलिह-
धवलंहरे संपत्तो नियपुरे कुमरो ॥ ८३ ॥ ऊसियसियद्धयोहे निस्मियमंचाईमंचकयसोहे । पविसइ पुरस्मि कुमरो विल-
सिरासिंगारजियअमरो ॥ ८४ ॥ गंतुं सहाए पणओ पिउणो पयसयदलं तओ तेण । आलिगिऊण कुसलप्पउत्तिमापु-
च्छिओ पुत्तो ॥ ८५ ॥ सो आह ताय मह तुह पसायसुहियस्स सब्बया कुसलं । इय जंपिय उवणीया पिउपुरओ तेण
सत्तुसिरी ॥ ८६ ॥ पणओ सत्तुसुओवि हु तस्स कओ राइणावि सम्माणो । “पणयस्मि वच्छलच्चिय पहुणो सत्तुम्मिवि
निएव” ॥ ८७ ॥ पणयाए बहुयाए भव पुत्तवइत्ति जंपियं रत्ता । “भणइ परे वि हियं चिय गरुओ किं माणुसे न निए”
॥ ८८ ॥ कइवयदिणावसाणे रत्तम्मि निवेसिओ सुओ रत्ता । पुत्तं सुत्तं नत्तस्स होइ सब्बस्ससामित्तं ॥ ८९ ॥ सुवि-
हियसूरिसयासे गहिया दिक्खा निवेण रिद्धीए । “इहलोइयं जहा तह परभवकज्जंपि कुणइ गुरू” ॥ ९० ॥ चरिय तवं
उप्पाडिय केवलनाणं निवो सिवं पत्तो । “किमसज्जं वा दुक्कतवस्स भावेण विहियस्स” ॥ ९१ ॥ नवनिवईवि नयपरो
पयाउ पालइ अभिदवइ दुडे । वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे मत्तए मित्ते ॥ ९२ ॥ साहस्मियवच्छलं कुणइ पयट्ठावए
अमारीओ । किं बहुणा तित्थसमुन्नईकरं कुणइ सबंपि ॥ ९३ ॥ तप्पुत्तपगरिसागरिसियव्व आगंतुमवणिवइणो तं ।
सेवंति सब्बदेसुव्भवावि गुरुभत्तिराण ॥ ९४ ॥ तेणावलोइओ जो मत्तइ सो अप्पगममयसित्तं व । आभासिओ पुणो
तिहुयणेक्खज्जाहिसित्तं ॥ ९५ ॥ एवं बहुकालं पालिऊणमकलंकरज्जमवणिवई । कुमरं पयावसाराभिहं ठवेऊण रत्तंभि
॥ ९६ ॥ निगंगथगुरुसमीवे दिक्खं घेतुं कयुगतवचरणो । उप्पन्नविमलनाणो संपत्तो मोक्खसक्खेवा ॥ ९७ ॥ जह

ध्रुवभवपूया जाया एयस्स मोक्खसोक्खकए । तह अन्नस्सवि जायइ ता भवा तीए उज्जमह ॥ ९८ ॥ धूपपूजा ॥
 ५ ५ ५ ५ ५ एसो हु धूपपूयाए साहिओ धूवुंढरो इहिं । भुवणप्पईवनिवहं दीक्यपूयाए निखुणेह ॥ ९९ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५
 उल्लसियरायसिरिकरणसुंदरं ललियविलयपरिकलियं । अत्थि सरगामजुयं गीयंपिव भुवणविजयपुरं ॥ ८०० ॥
 कलहसियरायभवणं कलहसियविरायमाणसुयणं जं । कलहरियरहियसलिलं कलहरियउत्तप्पहीणजणं ॥ १ ॥ पूरिय
 पडरपयासो सबुत्तमनिद्धपत्तआहारो । दीवोव महीनाहो कुलप्पईवोत्ति तत्थत्थि ॥ २ ॥ सरहोवि विउलवच्छो
 विदीहबाहोवि विलसिरगओवि । सारंगोवि न तिरिओ उत्तमपुरिसोच्चिय सया जो ॥ ३ ॥ गोरीवि अमीमपिया
 सायरतणयावि अजडसयणसिया । तस्सत्थि धारिणिपिया सईवि जाणंदपियभोया ॥ ४ ॥ तीए समत्थि परिपंथि-
 हत्थिकुलदलणकेसरिकिसोरो । भुवणप्पईवनामो कुमरो गिरिसोव गुरुकित्ती ॥ ५ ॥ अप्पवउदयजुत्तो अन्नभ-
 सिअकलोय वीयचंदोव । जो नवरति(वि)व पुवाभासी जयजणसुहकरो य ॥ ६ ॥ समवयवेसालंकारसारसामंतमंति-
 पुत्तेहि । सद्धिं बंधुरकीलं कुबंतो गमइ कालं सो ॥ ७ ॥ कइयावि कसिणअट्टमिनिसीहसमयंमि जगए जाव ।
 तो आयनइ आज्जतालगीयस्सरं कुमरो ॥ ८ ॥ तस्सरमणुसरमाणो दिट्ठिं पक्खिवइ मुक्कपलंको । नियइ दुवालसमुयं
 पेच्छणयपरं नरं तिसिरं ॥ ९ ॥ दोहिं करेहिं पडहं दोहिं मुइंगं च दोहिं तालाओ । वीणं दोहिं वंसं च दोहिं हत्थेहिं
 वायंतं ॥ ८१० ॥ नट्टवसुबेह्लिरमुयकरजुयवित्राससंचरं तत्थ । घणमणिकुंडलमंडियमहिलाएक्काणसणाहं ॥ ११ ॥
 वीएण मणोमयरायवासाणावसविमुक्कफुक्केण । रमणीमुहेण वंसं वायंतेणं विलसमाणं ॥ १२ ॥ तइएण
 महुरसरगाममुच्छणाजणियसवणजुयसोक्खं । उगायंतं गीयं मज्झाट्टियपुरिसवयणेण ॥ १३ ॥ 'कुलयं' ॥ इय अच्च-
 न्मुयअदिट्ठपुवपेच्छणयपेच्छणुत्तालो । वंचितु पमत्ते अंगरक्खमडवेडपमुहनरे ॥ १४ ॥ नवमेहंडवरपरपावरणालक्खि-

शंगसंठाणो । करयलकयकरवालो वासहरा निगाओ कुमरो ॥ १५ ॥ 'जुयलं' ॥ तं पेच्छंतो गच्छइ उच्छलियअतुच्छको-
उच्छरिसो । चिन्तइ य अहो एयं सुवणंतवहिभवं किंपि ॥ १६ ॥ जं कुच्चकलियमेगं नरस्स मुहमिल्लियाण पुण दोन्नि ।
मेवेज्जयमणिकुंडलभालट्टियतिलयकलियाइं ॥ १७ ॥ सुवति इह भविस्सासत्थेसु दसाणणत्तिमुंडादो । नवरं ते
पुरिसच्चिय एसो नरनारिरुवो उ ॥ १८ ॥ इय चिंतंतो पत्तो रायंगरुहो वि तस्समीवंमि । सोवि हु पच्छाहुत्तं गच्छइ
करणक्कमच्छउमा ॥ १९ ॥ थोवप्पसरप्पउरावसरणकरणक्कमे कुणंतेण । तेणाहियहियहियओ दूरं नीओ नरिंदसुओ
॥ ८२० ॥ तइंसिय अवरावरविन्नाणालोयवियलियविवेओ । न सुणइ नयरं दूरे न गणइ मगस्समलवंपि ॥ २१ ॥
एत्थंतरम्मि सहसा सो नट्टवरो सरुवमुज्जेइं । उक्कवायनिसायअसी जमोव जाओ भडो कुद्धो ॥ २२ ॥ जंपइ रे
दुडाहम कुमार तं सरसु देवयं इहं । मा भणसु पमत्तो हं विणासिओ केणइ छलेण ॥ २३ ॥ तं निसुणिइं कुमरो
चिन्तइ सुरअसुरनहयरत्तयो । कोवि इमो मह वेरी छलेण जेणाणिओहमिह ॥ २४ ॥ वीसासिऊणमेवं जो जायइ
घायगो न मोत्तवो । हंतवोच्चिय भन्नइ सो दूणं नीइसत्थेसु ॥ २५ ॥ इय चिन्तिय आयद्धियल्लगो तं हक्कए निवसु-
ओवि । 'निक्करिओ इयरोवि हु रुसइ किं खत्तिओ नेव' ॥ २६ ॥ दोन्निवि वगणकरणक्कमभणुब्भासियासिदुद्धरिसा ।
निप्पसरप्पहरपरा जुज्झंति समच्छरुकरिसा ॥ २७ ॥ दंसेइं सिरघायं मोत्तुं पाएसु विति मुनईओ (?) । निविसिय उच्छ-
लियावसरिइं च दोन्नि वियवंति ॥ २८ ॥ नेगोवि जयं पावइ दोणहवि सत्थस्समप्पवीणत्ता । न समिज्झंति य जं ते
निच्चं चिय विजयसत्थसमा ॥ २९ ॥ अत्तोत्तल्लगसंघट्टमगवारंगखुडियअसिफलया । करकयतिक्खल्लगल्लगवेणुणो ते
पुणो मिडिया ॥ ८३० ॥ सुक्कासिधेणुघायं वंचइ करणक्कमेण कुमरो से । रोसेण कुमरल्लुरियापहारलक्खं हरइ सोवि
॥ ३१ ॥ अवरोप्परवामकरप्पहारपडियासिधेणुणो दोवि । जुज्झंति निजुज्जेणं केसगहवाहुवंधेहिं ॥ ३२ ॥ निदयकेस-

माहात्म्यदुर्गाभक्त्यागज्जालिरियेष्टा । निवर्तयति दयति श्रवति पुणरपि शिञ्जति ॥ ३३ ॥ गिहुरमुमारपायप्यधारय-
च्छय(त्थ)ल्लातिओ सुष्टो । पठिओ भसति मुमान्तनेचओ भूगियद्वस्मि ॥ ३४ ॥ तो तब्बुगजुग उधरि दावं गियपयदुगं
भरियेफेसो । चेत्तुं भराण छुरियं जा तस्सा सिरं लुणइ कुमरो ॥ ३५ ॥ ता तेण नमो अरिंत्ताणं द्वाइं पंचपरमेष्ठी ।
सरिया असारंसारसायकरुत्तारणतसि ॥ ३६ ॥ तं सोवं एा एा साहस्मिगमारणे माहापावं । काऊण नूण नरण
उप्पयंतो दुहोदेहं ॥ ३७ ॥ इय जंणियेण स्वागिग शुको सहासति निवसुण्ण भयो । “अशुक्कियणवि करुणा जायइ जइ वा
कुलीणाण” ॥ ३८ ॥ सो वित्तइ नरस्यणं एसो जगणेण मारणपदेवि । युको चेरीवि आहं “गुरुण गणणा न रिज्जिडे ॥ ३९ ॥
दोइ न सिरस्मि सिंमं आहमाणं पत्तमाण ग नराण । किंतु अक्को क्को य ते गुण्जिंति वट्ठता” ॥ ४० ॥ एएण जीवियदं
दावं विन्नं सगग्गमवि मम्मं । जायइ रज्जार्हणं जं जीवताणमुनओगो ॥ ४१ ॥ शुवणस्मिपि उवगारो न पाणदाणाओ सग-
दिओ जहिण । पणुगयखिजमसात्तेहि निणहत्तिजइ न सो जेण ॥ ४२ ॥ थेवंणि दु उवयारं मंनइ पुरिसो गिदिदगस्सयरं ।
निणद्वइ खलप्पगई पुरिसो उवयारलक्खंणि ॥ ४३ ॥ ता आराहेयतो एस मण देवयाप सुगुरुइ । जणउवा जाव जीवं
पदेवयारप्पसत्तमणो ॥ ४४ ॥ इय निन्तिग उट्ठं पणगिग तं पागपडमजुगलमो । जंपइ माइ अवराहं खमसु माहा-
यसा कयपसाओ ॥ ४५ ॥ जइ न दुगं गुंततो संपइ मं पुरिसारण हुंतो हं । ता मंसगिज्जिआइयाण भक्खं हुंतंताण
॥ ४६ ॥ इण्हिं तं निया सरणं आगरणं तंणि गज्जा वज्जोति । जगहं न एओ तुमए करुणारसपूरियगणेण ॥ ४७ ॥ दहुं
तं स्वागतं जंपइ कुमरो आदो माहासत्ता । तुमए विधेइणावि दु किमिगमचेरेवि पारखं ॥ ४८ ॥ जो जिणमए थिरमणो
सुमरइ गरणंमि पंचपरसिद्धिं । तस्सेयारिसनिग्घणकम्मं जायइ आदो नोळं ॥ ४९ ॥ जइ माइ क्कह्जिज्जिगिणं सुपुरिस
उवयारिय कइसु ता पस्स । आइव अक्कणिज्जं ता अक्कउ दियइच्छियं कुणसु ॥ ८५० ॥ सो भणइ जस्सा तणया पाणावि

हु तस्म किं न कङ्कणिजं । इय जंपिय उवविसिउं सो कहइ निविट्टकुमरस्म ॥ ५१ ॥ गुरुनयपत्तछाओ वणकसिणसुतार-
सारसरलक्को । सुयणोघ भरहखेत्ते वेयड्डो नाम अत्थि गिरी ॥ ५२ ॥ तम्मि 'फुरंतमणिगणरहनेउरचक्कवालरमणि-
यणं । रयणमयं अत्थि पुरं रहनेउरचक्कवालंति ॥ ५३ ॥ दरियरिउवारवणगणकुंभवियारणेक्कवरनहरो । तं परि-
पालइ सिरिरयणसेहरो नहयराहियइ ॥ ५४ ॥ तस्मत्थि सद्यमुद्धंतकंताहिवत्तअहिसिक्का । हारस्सिरिउ हारस्सिरी
पिया वित्तमुत्तगुणा ॥ ५५ ॥ अन्नोन्नरस्मपेस्माणुवंधवद्धंतमणपमोयाण । पंचविठविसयसत्ताण ताण कालो अइक्कमइ
॥ ५६ ॥ कदयावि हु रयणविमाणसेणिसिंसारियंवरो चलिओ । नंदीसरंमि सिद्धप्पडिमानमणाय सयरिंदो ॥ ५७ ॥
दाह्णिदिसिगयणेणं गच्छंतो नियइ सम्मुहमहीण । मणिमंदिरपुरवाहिं निगच्छंतं जणसमूहं ॥ ५८ ॥ तस्संतोनि-
तरलद्धयालिअणहणिरकिंकिणिगणाण । सिवियाए समारुढं अवलोयइ तरुणनररयणं ॥ ५९ ॥ दिंतं कियणवणीमग-
जायगदीणंयदुत्थलोयाण । वंछाविच्छेयकरं दाणे मणिक्कणयरिस्थाइं ॥ ६० ॥ अवलोयंतं पुरतो लउडारसरसाण
सपेच्छणण । उववूहिजंतं जय जीव तं चिरं इय जणासीहिं ॥ ६१ ॥ दाह्णिणपासमदासणनिविट्टजणण । कयलवणत्तारणयं
समलंकिमप्यंतण दाणक्कजम्मि कणयाई ॥ ६२ ॥ वामहाणपरिट्ठियगरिट्ठिविट्ठिरनिविट्टजणीण । कयलवणत्तारणयं
सोयंसुयतंविरच्छीण ॥ ६३ ॥ वजंतदक्कदुक्काभेरीभंकारभरियसुवणयलं । रम्मारासुलाणंमि गुरुयरिद्धीण संपत्तं ॥ ६४ ॥
॥ कुलयं ॥ को एस किं करिस्तइ इद इय बुद्धीण नहयवईवि । तत्थुत्तिन्नो कंचणकमलगं केवलं नियइ ॥ ६५ ॥
पालियसमगासत्तं विरइयल्लजीवकायकलंवि । सोमंमि भित्तरुचं सुरयपुरं वंभयारिंमि ॥ ६६ ॥ दट्ठण केवलं नहयरे-
सरो भत्तिन्निअमरो नमइ । “धम्महतं पविचीओ जइ वा धम्मीण होन्ति सया” ॥ ६७ ॥ सिवियाण समुत्तिन्नो पणयपहू
मादपिअणुजातो । परिहरियाळंकारो संवेगुल्लसियरोमंचो ॥ ६८ ॥ सो विज्जाहरवइणो अवलोयंतस्स भत्तिभरिय-

मणौ । समयविहिता मुनिदेणं दिक्खिअं विहिय सिरलोयं ॥ ६९ ॥ गहणासेवणसिक्खाकहणंते न्हयेरोसरो नमिडं । पुच्छइ किं वेरगं जमिओ मुणिनाह पंढइओ ॥ ८७० ॥ आह पहू आयन्नसु खयरहिब अत्थि एत्थ नयरम्मि । अस-
मप्प्यावसारो पयावसारोत्ति नरनाहो ॥ ७९ ॥ अवरं च एत्थ निवसंति दोन्नि दुन्नयपराओ मंहिलाओ । एक्काए पवं-
चमई नामं बीयाए पुण कुमई ॥ ७२ ॥ भज्जावईण विहडियपेम्माण कुणंति पेम्मसंधाणं । अञ्चंतसुधडियाणवि तं
विहडावंति अन्नसिं ॥ ७३ ॥ उच्चाडणविट्टेसणथंभयवसियरणमारणाईसु । पावकिरियासु सययं वट्टंति पमोयपुंनाड
॥ ७४ ॥ कइयावि दोवि दुन्नयजायत्थारुडगरुगवाओ । रिउसेणाओव सज्जियसराओ विचणीए मिलियाओ ॥ ७५ ॥
अन्नोन्ननिहवुण्णनंमुवसविहियगुरुविवायाणं । ताण सयासे मिलिओ बहुओ लोगो कुतूहलओ ॥ ७६ ॥ महफाडियं न
सफो वि संछेडं तरइ इइ कुमइभणिये । इयराह तहा सीवेमि जह न से होइ संधीवि ॥ ७७ ॥ इय विवयंतीओ जणेण
ताओ नीयातो मंत्तिसंजिञ्जे । विन्नायवइयेरेणं तेणवि नरवइसमीवंमि ॥ ७८ ॥ नाऊण तप्पइन्नं राया विम्भिअमणो
पयंपेइ । कुणह इममिफवारं एयत्थे तुम्हमभउत्ति ॥ ७९ ॥ कुमई जंपइ दिणपंचगत्स मज्झंमि फोडिइस्सामि । सीवि-
स्सामि तमियराह पडु अहोरेत्तमज्जेवि ॥ ८० ॥ इय विरइयप्पइन्नाओ ताओ नमिडं निवं दुयं दोवि । कयजणअच्छरि-
याओ पत्ताओ नियनियहिहेसु ॥ ८१ ॥ कुमईए चित्तिअं एत्थ अत्थि सुप(व)सुरित्थवित्थारो । नामेण अत्थसारो गरिट्ठ-
सिद्धी सरलदिही ॥ ८२ ॥ नाययो बहुलहो वि कित्तिसारोत्ति अत्थि तस्स सुओ । उज्जलमाणसमुत्तिअपत्तसंतावले-
सोवि ॥ ८३ ॥ नवलुब्बणुल्लणाए अभग्गसोहग्गसंगंयीए । कंतिमइए पियाए सह विलसइ सो सया सुहिओ ॥ ८४ ॥
नवरं कंतिमईए सरुवसिंगारगरुगवाए । आलवियाए वि अहं न नया संभासियाविय नो ॥ ८५ ॥ ता तप्पइणो
कीएवि कुरंगनयणीए सह विहिय घडणं । साहेमि निवस्स जहा तीए महंतं दुहं होइ ॥ ८६ ॥ तप्पइणो पुण अयसो

संतोसो मञ्ज निवङ्गो द्रविर्ण । “अहव कयावन्नार्ण अणत्थउप्पायणं सस्स” ॥ ८७ ॥ ता एत्थ धणिधणेसरत्तणया तरुणी धणावली नामा । असई सयंपि ता तग्घडणं सह तेण काहाभि ॥ ८८ ॥ इय धितिय तवेळं पत्ता सा कित्ति-सारसन्नेज्जे । काऊण तमेगंते जंपए मडुरक्खरगिरिए ॥ ८९ ॥ सुहय तुमं पइ जंपेमि किंपि मा कुणसु पत्थणं विहलं । सो जंपइ ता संपइ साहसु सा भणइ निसुणेसु ॥ ८९० ॥ इह अत्थि धणेसरसेट्ठिणो सुया कमलकोमलोरुजुया । नियरुवनिज्जियरई नामेण धणावली वाला ॥ ९१ ॥ नियभवणमत्तवारणगयाए तीए कथाइ सच्चविओ । आगल्लन्तो तं रम्मरुवजियरइवइविलासो ॥ ९२ ॥ सिंगारसस्समवययस्ससंदोहसोहियउवंतो । उत्तमउत्तुंगतुरंगवगणक्खणिय-मणवित्ती ॥ ९३ ॥ अनिलंदोलणविलसिरसिहिपिच्छच्छत्तजायछायसुहो । देलाए कीलयंतो जंपाडंपाहिं हयरणं ॥ ९४ ॥ चलसरलधवलीलालसलोयणजुयलवहलजोण्हाए । परमामयबुद्धिपिव विकिरंतो संमहरं तुरए ॥ ९५ ॥ सियसोणसाम-मणिमयभूसणसयभूरिक्किरणनियरेहिं । रयणाभरणेहिं पिव अलंकरंतो तुरंगंपि ॥ ९६ ॥ दट्ठूण तुमं उम्मीलमाणनव-नेहनिद्धनयणेहिं । आदिट्ठिपहं अवलोइओ वहुं तीए अवियण्हं ॥ ९७ ॥ सोहगरयणरोहण संमोहणमयणवाणसम-तुमए । दिट्ठिपहाइक्कंते वियंभियो तीए विरहभरो ॥ ९८ ॥ चितंमि तुमं चित्ते तुहागिई सुज्झ नाममालवणे । सिविणे समागमो ते सा वाला तम्मई जाया ॥ ९९ ॥ विरहानलजालावलिजलिरसरिए तीए पारद्धो । संसुवयंसीहिं सयं सययं सिसिरोवयारभरो ॥ १०० ॥ सतडक्कारं हारे तणुतावेणं फुडंति मुत्ताओ । सिमिसिमिय सुसन्तिच्चिय नवकुव-लयनालमालाओ ॥ १ ॥ धणचंदणागुरुरसछडाळ छंकारपुवगं तीसे । तचंगसंगमेणं लगंतीओ वि परिसुसंति ॥ २ ॥ गोसावयस्सायस्संदिसाहिसेणिब मुयइ अंसूणि । भंजइ देहं जिंमाउओ भयइ परिभमइ एमेव ॥ ३ ॥ एवमवत्था सा

तस्सदीहिं मह दंसिया तजो तीए । तं साहियं समगंगि तो आहं एत्थ संपत्ता ॥ ४ ॥ ता सुहय बुज्झ संगम-
आसच्चिय धरइ जीवियं तीए । अवहीरियाए तुमए मरणंचिय जेणिमं भणियं ॥ ५ ॥ “दूरयरदेसपरिसंठियस्स पिय-
संगमं वहंतस्स । आसाबंधोच्चिय माणुस्सस्स परिक्खए जीयं” ॥ ६ ॥ ता माह उवरोहेणं अहवा तज्जीवियच्चकरुणाए ।
तं सरसु एकवारं दक्खिन्नदयाजो जं गरुए ॥ ७ ॥ इय जंपंती दंतगघरियपंचगुलं नमिय तस्स । तच्चरणमिलिय-
भाला ठिया चिरं चिंतइ तजो सो ॥ ८ ॥ अकलंकं मज्झ कुलं सावि पुणो पोढराइणी चाला । एसा वि विणयपणया
किं काढं जुज्जाए ता मे ॥ ९ ॥ एवत्थ अकज्जभयं अन्नत्तो मरइ सा मए मुष्सा । पासदुगेवि वलग्गइ उभरुयगंठिच्च
मज्झ मणं ॥ ११० ॥ जं होयधं तं द्योड ताणुरत्ताए विरहविदुराए । काहं समीहियमाहं इय धितेढं तजो तेण ॥ १११ ॥
वज्जेढं मज्जायं मयलेढं निम्मलं जसप्पसरं । मोत्तुं कुलाहिमाणं अणुसरिऊणं कुसीलत्तं ॥ १२ ॥ चइऊणं सच्चरियं
अंगीकाऊण नरयगइगमणं । उज्जेढं सल्लस्मं भणियं जं भणसि तं काहं ॥ १३ ॥ तं सोढं तीउत्तं एसो विहिओ मद्या-
पसाओ मे । इय जंपिऊण पत्ता पासंसि धणावलीए सा ॥ १४ ॥ तं पइरिके काढं पयंपए सुयणु सुणसु वयणं मे ।
सा आह अंब जं किंपि जंपियधं तयं भणसु ॥ १५ ॥ तीयुत्तमत्थि इह अत्थिसत्थपविइन्नअत्थिविद्वधो । नामेण
कित्तिसारो पुत्तो वणिअत्थिसारस्स ॥ १६ ॥ रुवेण मयणमुत्तिं कंतीए कलावइं मईए गुरुं । साकं सिंगारेणं जो
जिणइ धणेण धणयंपि ॥ १७ ॥ तेण तुमं सच्चविया नियमंदिरमत्तवारणासीणा । लीलालोयणलोयणजोण्हाभरपूरिय-
दियंता ॥ १८ ॥ दिट्ठाएवि सुयणु तए मयणसरप्पयरपहरज्जरिओ । भवणम्मि कहंकइमवि संपत्तो सो अणुप्पएसो
॥ १९ ॥ तं विरहज्जरविहुरं दइइ जलइवि जलणजालव । संताविति ससिकरा खयरंगारव तस्स तणुं ॥ १२० ॥
एमेव हसइ बालोव नियइ सुन्नं पिसायगहिउव । नचइ गायइ पलवइ मइरामयमत्तमुत्तिव ॥ २१ ॥ सव्वप्पणा पराय-

तमाणसो दंसिओ वयस्सेण । मह कहिऊणं तुह दंसणाणुरायाओ वियलत्तं ॥ २२ ॥ तो तं संठावेडं तुह पासे हं समा-
गया सुब्बु । ता नरयणस्स तुमं समीहिंयं कुणसु पसिऊण ॥ २३ ॥ तं सोडं सा असई नियमणऊम्मीलमाणउ-
म्माया । जंपइ तुहोवोहा अंव अकज्जंणि हु करिस्सं ॥ २४ ॥ तो तीए जंपियं पुबगोउरदारदेसदेवउले । आगंतुं
सिलियव्वं निसाए पहरस्स तस्स तए ॥ २५ ॥ एवं निसुय तहुत्तीए तीए गंतूण कित्तिसारंते । नीओ देवउले सो धणा-
वलीविय समणुपत्ता ॥ २६ ॥ कुमईए जंपियं इह पविसिय मज्झन्मि रमह सच्छंदं । लोयागमणालोयणपरा दुबारे-
हमच्छिस्सं ॥ २७ ॥ तो मज्झपविट्ठेसुं तेसुकंठाविसंतुलंगेसु । तीए कहियं आरक्खियस्स गंतूण तं ज्ञात्ति ॥ २८ ॥
तो संनद्धधणुद्धरअसिखेडयकरमडेहिं चउपासं । परिवेडिय देवउलं स आह गोसे धरिस्समिसे ॥ २९ ॥ नो निगं-
मप्पवेसा कस्सइ देया इहत्ति मणिय भडे । गंतूण मंतिनिवईण कहिय तवइयरं सुत्तो ॥ ३० ॥ द्दुणं सेट्ठिसुओ
देवउलं घडियमडदढावेडं । उव्भूयभूरिभयवेविंगज्झी विचित्तेइ ॥ ३१ ॥ पेच्छ जहा मज्झ महावसणमिणं
दुस्सहं समणुपत्तं । जीवियमरणसरूवे संदेहे जेण पडिओहं ॥ ३२ ॥ “पुबिह्मवसमुवभवपावप्यप्भारभावओ-
वस्सं । सुनयाणं पि अवाया इति न किं कयअनीईणं” ॥ ३३ ॥ गोसे वंधेउं मं नेही आरक्खिओ विवणिवीहिं ।
जणयाइजणसमक्खं विडंविही विविहवियणाहिं ॥ ३४ ॥ तुच्छतरविसयलालसमणस्स मह केत्तियं इमं दुक्खं ।
पररमणिरमणपावा णए तमणंतसो होही ॥ ३५ ॥ न कयाइ कओ अनओ मए न अनईहिं सह पसंगोवि । एयं
चिय गोतक्खयहेऊ पढमं कयमकलं ॥ ३६ ॥ अप्पविणासाय महापावुळासाय अयसपसराय । खलओकरिसाय मए
एयं दुबिलसियं विहियं ॥ ३७ ॥ मरणं दारिदं वा विएसवासो व सयणविरहो वा । हुंतु वरं एयाइं मा पुण एसो
कुलकलंको ॥ ३८ ॥ न ऊणंति जे परिक्खिय कलं ते दुक्खमंदिंरं हुंति । पहासिजंति जणेणं मइल्लिजंति य अकित्तीए

॥ ३९ ॥ पंक्तिद्वयं तं गुणयुक्तं आरियकस्वेतेषु सुकुलजन्माश्च । राक्षसि मे निरुथय मकज्जकरणुजं मा जायं ॥ १४० ॥ न कओ धम्मो न गुणा रामजिया सजिया न सियकिती । चित्तालिद्धियनरस्स व माणुयत्तं मह सुहा जायं ॥ ४१ ॥ आबालकालओ नंभयारिणो जे कयवया जाया । ते पुत्रपयं न वयं विसण्हिं विहंविद्या इय जे ॥ ४२ ॥ जइ देवगुरु-पसाया एयवसणाउ कहवि छुट्टिस्सं । निगिहस्सं ता नियमेण रावविदधयं सुदयं ॥ ४३ ॥ एयं महाणुभावो चित्तइ सद्धम्ममगमाणुपत्तो । दूरं धणावलीवि य पकंपण भउभयुब्भंता ॥ ४४ ॥ एत्तोय पवंचमइं पहरिसाउफरिसिया कहइ कुमइ । इय फाडियं माण्यं संधसु जइ संधिउं तरसि ॥ ४५ ॥ इय भणिय गयाण तीण सेट्ठिणो कहइ सा तमागंतु । तो सो सुयतघसणो खणं भया निगलो जाओ ॥ ४६ ॥ तियरोघ निजिमेरो निजभरनिहोघ नट्टमणविती । कयमोणो सज्जणो जायगुच्छोघ निषेहो ॥ ४७ ॥ किं कायघविभूदं तं दंहुं जंपण पवंचमइ । किं सेट्ठि गरिट्ठमइं विनट्टबुद्धिघ लक्खियसि ॥ ४८ ॥ किं कायरोघ कंयरि एणरसियमडोघ धीरिमं धरसु । केत्तियमेत्तं कज्जं इमं कुसग्गीयनुद्धीण ॥ ४९ ॥ जइ वि कुमइं कहिण विदिओ रायेण भउदढावेहो । तुह तणओ मरणंतघसणं पत्तो जइवि इण्हि ॥ ५० ॥ तद्ववि तु तद्दा जइस्सं न जहा वधक्खओ ल्हसइ न जसो । न विणस्साइ तुह तणओ जणाणुराओ न जाइ जाइ ॥ ५१ ॥ नवरं नियवहुयं मह अप्पसु तं देवमंदिरे खिविउं । जइ वंचिय समइण सुहडे कुट्टुमि तं असइ ॥ ५२ ॥ गोसे वाह-रिय निवो जंपइ जइ किं पि ता भणेज तुमं । सपिओवि मह सुओ पट्टु निसाण कसिउं कहिं पि गओ ॥ ५३ ॥ पवंति भणिय बहुयं सिंगारिय से समप्पण सेट्ठी । नियराग्गयमदिल्लओ मेल्ह गंतु रागेहे सा ॥ ५४ ॥ वजिरवद्धावणयच्छंद-पणमंततरुणपरियरिया । अयसंकलसंदाणियक्रमकंतिमइण संजुत्ता ॥ ५५ ॥ सह गियमंजुस्सरट्टुरिपिं गायंतकासिणी-कलिया । चलिया मंदं मंदं पत्ता य कमेण देवजले ॥ ५६ ॥ सवणासने ठाउं कित्ती(कंति)मइं जंपण पवंचमइ । अन्तो गंतु

तुमए असईवेसो नियसियबो ॥ ५७ ॥ ठायबं पइपासे होइ अणत्थो जहा न से गोसे । अप्पियनियनेवत्थं मह पासे
पेसियबा सा ॥ ५८ ॥ इज जंप्पिऊण चलिया खलिया य भडेहिं इय भणंतेहिं । लउमइ न इह पवेसो रायाएसो जतो
एसो ॥ ५९ ॥ एत्थ पविट्ठो चिट्ठइ रुद्धो असईजुतो नरो कोई । ता पूइल्लह गोसे देवयमिण्हि पुणो वल्लह ॥ ९६० ॥ तो
तेसि पवंचमई वियरइ सबेसि कुसुमतं बोले । “दूरे इयरे थड्डा वि हुंति दाणेणमण्णुक्खला” ॥ ६१ ॥ पुत्रं मह दुहियाए
उवजाइयमेत्थ तो इमा पत्ता । “अवरावि पूयणिजा देवी सप्पचया किन्नो” ॥ ६२ ॥ अल्ल इमाए तइजो उववासो आसि
जं इमं वणियं । ता तुज्जे करुणाए एकमिमं विय पवेसेह ॥ ६३ ॥ जइ अल्ल इमा अबइ न देवयं ता न मुंजए नूणं ।
ता सुत्तुमिमं एयाए जीवियबं पयच्छेह ॥ ६४ ॥ एत्थ ठिआ वि अग्गे भत्ति देवीए गीयनट्टेहिं । पयडिस्सामो पसिउं ता
कुणह इमंति तीउत्तं ॥ ६५ ॥ तो ते दक्खिन्नदयाहिं पेरिया विति भइणि तं चेव । एक्का गंतुं पूइत्तु देवयं इत्ति निगच्छ
॥ ६६ ॥ तं सोउं कंतिमई पूयापडलं करे कलेऊण । देवउलम्मि पविट्ठा ठिया अणुट्ठिय जहुदिट्ठं ॥ ६७ ॥ नच्चणगाणद्वग्गाण
ताण रमणीण पासमणुपत्ता । कंतिमईनेवत्थप्पच्छाइयतणुलया असई ॥ ६८ ॥ वज्जिरवद्धावणया वलिउ पत्ता पओलिदे
सम्मि । रुवय-अद्धं दाउं विसज्जिया तूरिया तुरियं ॥ ६९ ॥ पहसंतीउ पविट्ठा पुट्ठाओ पउलिरक्खयभडेहिं । किं नो वल्लइ
तूरं पढइ इमं तो पवंचमई ॥ ९७० ॥ अट्ठह तेत्तउं वल्लइ जेत्तउं पोलिहि वारु । अइरुद्धो वि न रुज्भइ सहुं परिणिए भत्तारु
॥ ७१ ॥ रायसमीवंगीकयपुत्तपइत्ता अईव सा तुट्ठा । “थोवावि कल्लसिद्धी तोसक्का किं पुण न ग्रहया” ॥ ७२ ॥ पुरम-
ज्झमागयाओ विसज्जाए सा सहीओ सबाओ । “सिद्धप्पओयणाणं किं कल्लं जणसमूहेण” ॥ ७३ ॥ वद्धाविऊण सेट्ठि गंतूण
निए गिहंमि सुत्ता सा । “निच्चित्ताणं निदा जायइ जइया किमच्छरियं” ॥ ७४ ॥ सूरुगुमसमयम्मि वि संनज्जंतम्मि तम्मि

भडविंदे । सपिओवि कित्तिसारो निगंतुं ते पर्यंपेद ॥ ७५ ॥ किं तुब्भे सन्नज्झइ पिउणा अवमणिओ गहिय भल्लं । इए वसिय निसिविरामे जाव विण्णसम्मि वधिसं ॥ ७६ ॥ ता इह पविट्ठमेत्तोवि वेडिओ कहइ को विणासो मे । ते वेत्ति निवा-
मब्भे पुच्छसु जे तं धरावेत्ति ॥ ७७ ॥ तेणुत्तं मह ताणवि तणओ न भओ जओ विसुद्धोहं । “किं काहि भओ वि हु विज्जो
नीरोयदेह्वाण(ण)” ॥ ७८ ॥ इय भणिरे सेट्ठिसुण आरक्खियमंतिणो समणुपत्ता । दट्ठूण सेट्ठिपुत्तं सकलत्तं विम्बिया दोवि
॥ ७९ ॥ सुहडाण व तेसिं पि हु कहियं सधं पि कित्तिसारेण । रायसयासे नीओ भज्जालुत्तो वि सो तेहिं ॥ ९८० ॥
रायजले निज्जंतं तणयं नाउं समागओ सेट्ठी । “इयरेवि सायरक्खिय सुयणा किं पुण न नियपुत्ते” ॥ ८१ ॥ सुयसेट्ठिसुय-
निवंतियनयणा पत्ता दुयं पवंचमई । “का संका सक्कं रायवयणपत्ताभयाणहवा” ॥ ८२ ॥ असमाणपवंचमइमईए विजि-
यत्ति नागया कुमई । “तत्थ न जन्ति सयन्ना पराजओ जायए जत्थ” ॥ ८३ ॥ गंतूणत्थाणत्थं सधेवि निवं नमिंतु
उवविट्ठा । “विणयप्पणई सस्सा सधत्थवि किं न नमणिज्जे” ॥ ८४ ॥ मंतिसयासा सोउं भणइ निवो कित्तिसार किं एयं ।
सो आह जह पहू सुणइ तह इमं किं अलीण ॥ ८५ ॥ “सयमेव देव विसयाहिल्लासिणो पाणिणो सया तम्मि । जो
पुण परोवएसो घयाहुई सा हुयासम्मि” ॥ ८६ ॥ इय जंपिय कुमइविप्पयारणुप्पन्नरायरसपमुहं । कहियं रत्तो “भन्नइ
पमाणभूसीए नो अलियं” ॥ ८७ ॥ जेण रारीरेण कयं सहइ तयं देव निगइदुहादं । “धेए पच्छवि रिणे सर दधे दिज्जइ
न किं तं” ॥ ८८ ॥ आह निवो सा वीहसु जमेफवारं इमाण महिल्लणं । अभओ मए विदन्नो फाडणसंधाणकोउयओ
॥ ८९ ॥ नामाणुसारिणिकिय कुमईए मई महा अणत्थयरी । “अहवा परिपज्जलिरो दहणो दहणोधिज जहत्थो” ॥ ९० ॥
पेच्छ पवंचमईए भजं पक्खिविय कड्डिया असई । नो विज्जायं केणइ “बुद्धीए अगोयरो नत्थि” ॥ ९१ ॥ सेट्ठिसुय नो
कयाइवि विस्ससियधं तए कुमहिल्लण । जं संपद विस्ससियस्स आगओ आसि तुह मबू ॥ ९२ ॥ विन्नवइ कित्ति-

सारो देवपसाएण जीवियव्वस्स । पत्तस्स चरिय चरणं भवहरणं सहलयं काहं ॥ ९३ ॥ जइ नो देवो देतो पाणे मह
नूण ता अहं इणिह । उभयभवसंभवाणवि चुक्तो चेव सोक्खाण ॥ ९४ ॥ रायाह वच्छ कस्सइ कयाइ भववासमहि-
वसंतस्स । दुक्कस्सेण अवाया हवंति ता मा समुच्चियसु ॥ ९५ ॥ मा कुणसु वयकिलेसं धम्मो संतस्स होइ गिहिणोवि ।
“को नाम कुणइ कट्ठं सइ कले सोक्खसज्झम्मि” ॥ ९६ ॥ सो भणइ सामि एवं विडंवाणा होइ जाण कज्जम्मि । मह
होउ तेहिं विसयहिं वयमहं संपइ गहिस्सं ॥ ९७ ॥ जंपइ सेट्ठी बुज्झवह देव एसेव जं सुओ मज्झ । करहपडियं व
भंडयमिमं विणा फुडइ हिययं मे ॥ ९८ ॥ पुत्तेणुत्तं जइ अज पहु तए हं विणासिओ हुन्तो । हुंता केत्तियमेत्ता ता पुत्ता
मज्झ जणयस्स ॥ ९९ ॥ जणया जणणीउ पियाउ पुत्तया वंधुणो य संसारे । मुक्का भूरिभवेसु ता मोहो कहह को तेसु
॥ १०० ॥ “परमत्थेणं न कयावि वल्लहो अत्थि कोइ कस्सावि । सोयइ सबोवि जणो नियकज्जं चेव सीयंतं” ॥ १ ॥
ता अहमवि नियकज्जप्पसाहणे उज्जओ इयानिपि । ता मा भवह भवंतो सबे धम्मंतरायपरा ॥ २ ॥ गहिऊण वयं
अजं मुजिस्सं अन्नहा महाणसणं । तो नायनिवंचेणं निवेण मोयाविओ सेट्ठी ॥ ३ ॥ जणणीवि तत्थ पत्ता पुत्तेण कमे
नमित्तु विणयपरं । पाएसु लंगिऊणं वलावि मोयाविया अप्पं ॥ ४ ॥ सम्माणिउं विसज्जइ वत्थाईहिं सपियं सुयं सेट्ठि ।
राया पवंचमइयंपि भणिय नायुज्जया होज्ज ॥ ५ ॥ कुमइपि भणइ वाहरिय मा पुणो इय करेज्ज अन्नायं । पुणरुत्तं न
खम्मिस्सं ति भणिय तं पि हु विसज्जइ ॥ ६ ॥ ण्हाणाइसव्वसिंणारसुंदरो सिवियमारुहिय पत्तो । इह एसो सेट्ठिसुओ ।
पव्वइओ तुज्झ पच्चक्खं ॥ ७ ॥ खयरुहिराय वेरग्गकारणं पुच्छियं जमेयस्स । तं कहियं “ता मोत्तुं कुसंगमायरह गुणि-
संगं ॥ ८ ॥ पायं विणस्सइच्चिय पत्तकुसंगो जणो सुवित्तोवि । उयरगओ असुइत्ते जुज्जइ परमोवि आहारो ॥ ९ ॥
सरुणंसि गुणाहाणं पावइ पत्तो जणो अजन्तोवि । रमणिनयणे कलुसंमि कज्जलं सोहसुव्वहइ ॥ १०१० ॥ कायवो

गुणिसंगो तन्हा पुरिसेण उज्झिय कुसंगं । पत्ते सिणिद्धुद्धे मुद्धोवि किमं विलं पियइ” ॥ ११ ॥ खेयरवई पयंपइ पहु
सिद्धिवहूवरो इसो होही । जो एक्कस्मिन्नि एवं पडिमुद्धो आवयाए भवे ॥ १२ ॥ पहु अन्हेवि हु पुनेक्कमंदिरे जेहिं
थावरे तिथे । चलिपहिं जंगमं तिथ्यमुत्तमं तमिह संपत्तो ॥ १३ ॥ एत्थंतरे कोणुक्खंघगओ छत्तअन्तरियतरणी ।
राया चउरंगवलो पत्तो केवलिकमे नमइ ॥ १४ ॥ वंदिय सेसे मुणियो सलाहिउं पणमिउं च नवसाहुं । उवविट्ठो
तो वंदइ तस्संतैउरमवि समगं ॥ १५ ॥ तम्मज्जे निवकत्ता निरुवजियामरी कणयवत्ता । पत्ता मत्तामरहत्थिमंथ-
रक्कमकयागमणा ॥ १६ ॥ लीलाचलच्छिविच्छोहोहोहियासेसत्तरुणनरनियरा । दीवपद्दानामेणं सारसुहासारसियहासा
॥ १७ ॥ दट्ठुण केवलं सा हच्छं मुच्छं गया मयंकमुही । सीओवयारसंपत्तचेयणा पुच्छिया पिउणा ॥ १८ ॥ किं
वच्छे मुच्छागमणकारणं तुह पयंपए सावि । पुच्छसु गुरुणो इय भणिय केवलं नसिय उवविट्ठा ॥ १९ ॥ कयकर-
कोसो नमिऊण केवलं पुच्छए निवो भयवं । किमु मुच्छिया मह सुया भणइ पहु निसुणसु नरिंद ॥ १०२० ॥
सरसाहिट्ठियपडिं सरसाहियसत्तुहउसंदोहं । सरसाहिलसियवासं पुरमत्थि विसालसालंति ॥ २१ ॥ रविउदया-
रद्धदिगंतमुक्कधणिभवणकयकुक्कम्मेण । पत्तारसआहारो अकिंचणो तत्थ अत्थि नरो ॥ २२ ॥ निम्मंसमुही नित्तेय-
कालदुव्वलकरालकाया से । मुत्तिमइचांमुडव भारिया आसि विगयासा ॥ २३ ॥ खंडणंधणपीसणजलवहणगिह-
प्पमज्जणाईहिं । परघरपत्तकुभोयणकयट्ठिई गमइ दियहे सा ॥ २४ ॥ सिसिरे सहंति सीयाइं गेम्हसमयंमि तिघर-
वित्तावं । मलकलयकुचेलाइं दोन्निवि मुणिमंडलाइं व ॥ २५ ॥ जुन्नकुडीरयछायणफजे कइयावि दोवि दब्भत्थं ।
भमिराइं गुरुअरत्ते नियंति आयावयंतं मं ॥ २६ ॥ भणिया अकिंचणं भज्जा नमिमो इमस्स पयपडमं । जेणजेमो
अम्हे अब्भुत्तम-पुन्नपव्वमारं ॥ २७ ॥ तो दोन्नि वि भत्तिवसप्पसरियरोमंचअंचियंगणि । भूमियलमिलियभालयलमणहरं

मञ्ज पणमन्ति ॥ २८ ॥ दृहुं विसुद्धभावं तेसि मए तयणु उवविसेऊण । उवविट्ठाणं दिन्नो दोण्हवि सद्धम्मउवएसो ॥ २९ ॥ आयन्नह मो तुव्भे पंचिदियजाइपमुहसामग्निं । पावेउं नायत्ताइं देवगुरुधम्मतत्ताइं ॥ १०३० ॥ रागदो-
साईहि दोसेहिं अदूसियं मुणह देवं । निगंथं गीयत्थं तत्तरयं जाणह गुरुंषि ॥ ३१ ॥ जइगिहिभेएहिं दुहा बुज्झह
धम्मं जिणेहिं पन्नत्तं । पढमं दसप्पयारं वारसभेयं पुणो वीयं ॥ ३२ ॥ जीवाजीवा पुन्नं पावासवसंवरो य निज्जरणा ।
वंधो मोक्खो य इमं आयन्नह तत्तनवंगंषि ॥ ३३ ॥ देवगुरुधम्मतत्तत्तयसदहाणेण दोइ सम्मत्तं । मूलं सवुत्तमो-
क्खकप्पक्खस्स इममेव ॥ ३४ ॥ फलसलिलधूवदीवयअक्खयनेवज्जंगंधकुसुमेहिं । पूयइ सम्मदिट्ठी इय जिणमट्ठाहिंवि
पूयाहिं ॥ ३५ ॥ सत्ताव वि अतरन्तो पईवपूयं करेइ जइ भवो । ता सा एक्कावि हरेइ तस्स पावाइं भणियं च ॥ ३६ ॥
“लो देइ दीवयं जिणवरस्स पुरओ पराए भत्तीए । तेणेव तस्स डज्झइ पावपयंगो न संदेहो” ॥ ३७ ॥ मणुयत्तं संपत्तं मा
नेह मुहा करेह सद्धम्मं । तुम्हाण हियं कहियं जुत्तमिं चिय गुरुणहवा ॥ ३८ ॥ जंपंति दोवि नियजोगयाणुमाणेण
तुम्हमाएसं । काहामो भयवं जं सुक्कणम्हेहिं तं पत्तो ॥ ३९ ॥ इय जंपिय भत्तीए मं नमिउं दवभमारए गहिउं ।
दोन्निवि गयाइं नेहे भद्दगभावेण वट्ठन्ति ॥ १०४० ॥ नयरएहाणजिणदत्तसेट्ठिणो मंदिरंस्मि कम्माइं । कुब्बताणं
ताणं दोण्हवि दीवूसवो पत्तो ॥ ४१ ॥ दाऊण सेट्ठिणा सालिपूयघयपमुहमेवमुत्ताइं । सगिहे मुंजह जह जाइ तुम्ह
वरिसोवि सोक्खेण ॥ ४२ ॥ ते वित्ति अम्ह दंससु जिणेसरं सेट्ठि जेण तस्स पुरो । काऊण घएणं दीवयं वयं सुक्कय-
मज्जेमो ॥ ४३ ॥ दट्ठण धम्मवुद्धिं जातो तेसिं कयायो सेट्ठी । “गरुयाइं परंसिवि पक्खवाइणो किन्न धम्मपरे”
॥ ४४ ॥ इण्हिपि चलह इय भणिय तेहिं सह जिणहरस्मि संचलितो । “अवरंपि पत्थियं कुणइ सज्जणो किं न पुण
धम्मं” ॥ ४५ ॥ तिन्निवि पत्ताइं नियंति रंइजिणमंदिरं गयणलगं । भूयतरुपत्तंपत्तिचियतोराणसियदुवारगं ॥ ४६ ॥

अनिलचलिरद्धयावलिकिकिणिगघणरणञ्जणारावो । घग्घरयखलहलस्सररिस्सो सुहरइ नहं जत्थ ॥ ४७ ॥ मणि-
जणियदेवचलियामंडलविफुरियकिरणनिवरुंनो । रोहिणगिरिध रेहइ जणपुन्नागरिसिओध जहिं ॥ ४८ ॥ केवलनाणा-
लोओध जत्थ लंबंतमोत्तिओज्जोओ । फलिइमऊहसमूहो भवविवेओ विव विद्दाई ॥ ४९ ॥ डब्बिरकपूरागरुपरिमल-
मांसलियसुमणसामोओ । वित्थरइ जत्थ दूरं धम्मियजणपुन्नपसरोध ॥ १०५० ॥ सेट्ठी तेहिं समेओ पविसंतो तम्मि
नियइ अजियजिणं । जय जय जयत्ति भणइ य सीमंतयसंगिकरकोसो ॥ ५१ ॥ उवसंतकंतरुवं तेसिं तं दंसए
अजियदेवं । बहिरंगअंतरंगारिवगनिगहणपत्तजसं ॥ ५२ ॥ एसो समगसगापवगगसुहसंगदायगो दूरं । ता एयं
पूएवं अप्पहिंयं कुणइ इय भणइ ॥ ५३ ॥ तं सोढं ताइं मणफुरंतगुरुभत्तिभरघरंगाइं । पसरियपरिओसवसुल्लसंतरो-
मंचनिचियाइं ॥ ५४ ॥ उल्लसियअमंदाणदंजाथथोरंसुपूरियच्छीणि । परिकलयंताइं सजम्मजीवियघाण सादलत्तं ॥ ५५ ॥
सुरहिघणं काऊण दीवए ताइं दोन्नि वि गुयंति । जिणपुरओ पणगन्ति य पणुं माहीमिलियमालाइं ॥ ५६ ॥ कुलयं ॥
तयणन्तरं पयाहिणपुरस्सरं नमिय रइयकरकोसो । सेट्ठी अजियजिणिदं भत्तिभरो थोउमारद्धो ॥ ५७ ॥ “जस्सानमंति
सिरिसोणमणिपहापयडभत्तिरायध । अमरेसरा शुणिस्सामि तं पणुं अजियनाहमहं ॥ ५८ ॥ मणवयणनयणहत्था ते
धन्नाणं सुहा अजिय तुज्झ । सुमरणथवणालोयणपूयणकज्जेसु जे सज्जा ॥ ५९ ॥ वइसाहसेयतेरसितिहीणं तं चत्तविजय-
वासोवि । पट्टु विजयोयएवासं अलंकरंतो कुणसि चोजं ॥ १०६० ॥ जायं तिजजुज्जोयं तं माहसियट्ठमीनिसीहम्मि ।
वट्ठूण ससंको लज्जिओध तवेलमत्थमिओ ॥ ६१ ॥ चइय तए चललच्छिं वयं कयं माहसेयनवमीए । इयरोवि
अत्थिराए न रज्जए किं पुण तिनाणी ॥ ६२ ॥ पोसे सियाएफारसीए जेवं चल्लुपहचंदं(?) । लोयालोयपयासं संजाय-
मणंतनानं ते ॥ ६३ ॥ चेत्तसियपंचमीए तं सिद्धिवहूए संगमलीणो । इयरंणि मोहिउमलं रमणी किं केवलविरायं

॥ ६४ ॥ इय जायपंचकलाणमवि पंडुं शुणिय चत्तकलाणं । मन्नेमिचंदपहुनय भवसायरतिन्नमत्ताणं ॥ ६५ ॥ सेट्टिस्स पक्खवाओ जिर्णिदभत्तीए तेसु संजाओ । “अहवायरो गुरूणं सगुणे विगुणे पुण उवेहा” ॥ ६६ ॥ पुणरुत्तं पणयजिणो अकिंचणो सेट्ठिणा समज्जोवि । नेउं नियमवणे दिन्नबहुघओ पेसिओ समिहे ॥ ६७ ॥ तस्मिंवि भवस्मि लिणभत्ति-भावओडकिंचणो धणी जाओ । “अहव न तं कलाणं जिणपूयाए न जं होई” ॥ ६८ ॥ कइयावि आउअंते मज्झिमपरिणामओ मरिय जातो । भुवणप्पर्इवनामो पुत्तो निवकुलपर्इवस्स ॥ ६९ ॥ तेणेवय भावेणं तब्भज्जा मरिउमेत्थ उप्पन्ना । एसेवय तुह तणया जिणदीवयपूयपुत्तेण ॥ १०७० ॥ इह पत्ता मं पेच्छिय जाईसरणेण मुच्छिया एसा । निव पुच्छियं तए जं तं मुच्छाकारणं कहियं ॥ ७१ ॥ नमिय गुरं भणइ सुया रिद्धी पहु तुह पसायओ एसा । मह सपियस्सवि जाया “किंवा न हवइ गुरुपसाया” ॥ ७२ ॥ सोऊण कुमरिचरियं जिणपूयाकयमई जणो सबो । रायाइओ गुरूणं नमिय नियट्ठाणमणुपत्तो ॥ ७३ ॥ नयकेवलिकमो नहयेसरो मणिविमाणविंदेण । नंदीसरंमि पत्तो वलिओयडमिंदिय जिणंइ ॥ ७४ ॥ नवरं रायसुयादंसणाइअणुरायभरपायत्तो । निवपासे संपत्तो पणयपरो पत्थए कंनं ॥ ७५ ॥ रायाह नहयेसर जुत्तमिणं किंतु पुच्छिमो कन्नं । “जावजीवियकले काउं जुत्तो न उवरोहो” ॥ ७६ ॥ तो वाहरिया पत्ता निवं तियं रइयरस्मसिंगारा । बाला लीलससरल्लोयणुल्लासलसिरसुही ॥ ७७ ॥ काउं पसायमाइसह ताय इय भणइ पिउकमे नमिउं । तो से सायरत्थयरिंदपत्थणं साहए राया ॥ ७८ ॥ सा आह ताय लग्गइ अंगे सोहगसंगओ सो मे । पुव्वभुव्भभवत्ता अग्गी वा इह भवे नन्नो ॥ ७९ ॥ नायसुयाअणुवंधो सम्माणिय नहयरं विसजेइ । सोवि गतो वेय्हु “निकलं किं विएसेण” ॥ १०८० ॥ चित्तइ नहयरनाहो हिययगया दूमए मयच्छी मां । विरहजरजलणजालाजलि-रंगं न(त)ट्ठमल्लिब ॥ ८१ ॥ सा मं न मन्नइच्चिय ठाउमसत्तो न तं विणाहमवि । ता हरणमेव जुत्तं महनिवतणयाए

इतिहृदि ॥ ८२ ॥ अह्मता भिन्नेहरेणं राक्ष कुमरे तंगि माह न सा मोक्षी । ता तं पङ्कनं निग एणेति इय भित्तिडं ज्ञप्ति
॥ ८३ ॥ एगोभिय निसि निगंनुतगजो कुमरवासगवणंते । मारणमर्हण अह्मता “इत्थीलज्जाण भिगफजो” ॥ ८४ ॥
सिरिस्तुवाटसशुणफक्तणुलयास्सोच्छणयच्छब्भा । तग्गिष्ठाणीओ तेणं मत्तेणुपाडिय पओल्लि ॥ ८५ ॥ तो राहसा
संजातो सुहृदो आगध्दुमारिसिनुब्बरियो । साहिक्खेवं रइयस्मि रणगरे सो जितो तुमए ॥ ८६ ॥ “जे रासपयडिहूला
जे या नीरासपाइणो कुडिला । निगयेण पडंतिक्कि ते पुरिसा पावपहरइया” ॥ ८७ ॥ ता कुमर सो अहं निगइयाए
इण्णारिद्धेवि जो तुमए । सुकोत्ति मए कहिओ तुह पुरओ निगयनुत्ततो ॥ ८८ ॥ इय जाह सगरओ सुयं ताह कुम-
रेणावि जाइसारेण । सत्तंनिय रागवियं सिरिणयदिद्धंय तरेलं ॥ ८९ ॥ भणियं न सगर तुमए जाह कहिओ ताह
मयधि पुतभवो । दिट्ठो जाइसारेण तगणु तं खेयरो भणइ ॥ ९० ९० ॥ ता नलसु तुमं सुतूण मंदिरेहमनि जागि
राट्ठणे । इय जंभिय तगणुद्धिय नहगरजाहो गजो रापुरे ॥ ९१ ॥ परिभाविगपुगभनवियानुरायपपइक्ककरणसा ।
उगगिलिओ गहंतो अणुराओ रागतणसरा ॥ ९२ ॥ भित्ताइ तेक्किग भक्खा जेरिं निगवक्खोदिं जुत्ताण । विमिद्धयिलासेदिं
सुहुत्तसेत्तगिव जंति दिवसाइं ॥ ९३ ॥ जाह जाइ गहहजणे गणो तह्मा जइ तणूयि यमन्ती । ता नूण न हुंतं चिय
कराह तमिइहविट्ठुस्तं ॥ ९४ ॥ नूणं जागरणाओ दिवदीण नरं समेइ जइ निरा । जा दूइयत गहहसंजोगं कुणइ
राइसति ॥ ९५ ॥ कपुण्णलियाड गणे नगणेसु अलअलक्कमया जागा । माघो वेधे वल्लहअलाओ तसा चित्ताए
॥ ९६ ॥ वल्लहनिरहविणोयणारख्खमयाइगीलक्किरिमसा । गच्छन्ति वारास गिरिगिस्सा कुमरसा चित्त्थेण ॥ ९७ ॥
पइसंतर्दसि गतो कुमरिणिचयेसिओ गह्ममंती । अत्थाणत्तं निवइं नगिडं विजगइ विणण्ण ॥ ९८ ॥ पहु गणिमंदि-
नयरे मयावसारोत्ति नरवइं अल्लिग । धीयपागागलेइहा धीयपागिहसुगा तसा ॥ ९९ ॥ पत्ता केयलिपारं जाइसरणेण

मुच्छ्रिया वाला । निवपुच्छिएण कहिओ केवलिया तीए पुबभवो ॥ ११०० ॥ इय भणिय तेण सव्हं सवित्थरं साहियं नरिंदस्स । ता जा पुबभवुब्भवपिए कुमारेणुरत्ता सा ॥ १ ॥ भणियं च खयरवड्ढा विवाहिं पत्थियावि न तीए । पडिवनं तवयणं कुमरं पइ जायरायाए ॥ २ ॥ तुह तणयअलाहवियोयदाहदुज्जंतगणवणा वाला । लहइ न सुहलवमवि जलिरजलणजालोलिकलियव ॥ ३ ॥ धाईए इव अरईए असुहत्थीए वयंसियाएव । दासीहिं व संगहिया कासुक्कलि-याहिं सा दूरं ॥ ४ ॥ ता पडु पेससु कुमरं परिणयणकए कुरंगनयणीए । जह होइ जीवियं से “गुरूण दुहिए न याहिं सा दूरं ॥ ५ ॥ रायाह सा सइच्चिय जा पुबभवपियम्मि अणुरत्ता । सिविणेवि जं सईणं रमइ मणो नन्नरमणम्मि जसुवेहा” ॥ ६ ॥ इय भणिय समाइहो कुमरो वीवाहिं नरिंदसुयं । वच्छागच्छसु तो सो नमिय निवाणं सिरे धरइ ॥ ७ ॥ सम्मानिज्जण मंतिं संवाहिय नियसुओ समंतेण । चउरंगवचमूचको पट्टविओ हिट्टहियएण ॥ ८ ॥ अणवरयकयपयाणो सो मणिमंदिरपुरंमि संपत्तो । “ठाणं चलियो मंदोवि पावए किं न सिग्घगई” ॥ ९ ॥ पट्टओय(पत्तोय)वत्थकयहट्टसोहगुरुमंचतो-रणघयम्मि । रायंगरुहो रत्ता रिद्धीए पवेसिओ नयरे ॥ १११० ॥ आवासिओ समप्पियपासाए कणयकलसकमणीए । नरवइकारावियमोयणाइगुरुरगोरवमहघो ॥ ११ ॥ लगदिणे हयगयठियसामंतावेडिओ गयारुहो । छत्तद्धयचामरचय-रायालंकारकमणीओ ॥ १२ ॥ वलिरजयआज्जो पत्तो वीवाहमंदिरदुवारे । रइयायारो पविसिय उवविट्टो कंनयापासे ॥ १३ ॥ इहं से तीए करं करेण गहिं पयाहिणियजलणो । उवविसिय रायकुमरेहिं तयणु सम्मानिओ लोओ ॥ १४ ॥ तो नियकलत्तकलिओ चलिओ चडिं करेणुरायम्मि । रिद्धीए नियावासे पत्तो कीलइ सह पियाए ॥ १५ ॥ ससुरय-सम्मानुम्मीलमाणतोसो दिणण दसगं सो । तत्थच्छिय नमिय निवं सकलत्तो नियपुरे पत्तो ॥ १६ ॥ रत्ता रिद्धीए पुरे सहइसोहे पवेसितो कुमरो । नवपरिणीयं पुत्तं मोत्तुं को गोरवट्ठाणं ॥ १७ ॥ पणओ पिउणो पयसयदलम्मि

सपिण्यो विपत्तयासीसो । नगिदं जणनिं चलिओ सुद्धंतेणिय छिया वहुया ॥ १८ ॥ पिणुपयसेवासतस्स तस्स कुमरस्स
जंति दिवसाइं । तं अहिंसिचइ राया रज्जे रिद्धीण कइयायि ॥ १९ ॥ गीयत्थगुरुसयासे पत्तवओ कयतवओ पाइयपवो ।
उत्पन्नविमलनाणो रायहिंसी सिवपुं पत्तो ॥ १२० ॥ नवराया निरवजं पालइ रजं पयासए नीइं । ताडइ चरडे गमइ
सहायणं अज्जइ जसं सो ॥ २१ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे संघमअए निभं । कारवइ विभूईए राजत्ताओ जिणिं-
दाणं ॥ २२ ॥ इय वणंते फाले कयाइ दीवयपइए उपपन्नो । पुत्तो उत्तमलम्बणगणंछिइयत्थपायतलो ॥ २३ ॥
विरयवज्जावणओ रयणपईवोत्ति कुणइ पुत्तस्स । नागं संमाणेदं सवजणं नरवई दिट्ठो ॥ २४ ॥ चरिसाइं पंन
पालित्तु पाडिओ तयणु जोषणं पत्तो । वीवाहिओ य उम्मात्तजोषणाओ निवसुगाओ ॥ २५ ॥ समयंतरम्मि कम्ममिवि
रागा रयाणीए वुरियपइरम्मि । जागरमाणो सद्धगमगमणुचित्तिदं लग्गो ॥ २६ ॥ दीवयमेताएवि मे पूयाए असरिसा
सिरी जाया । सुहुमाउ वि वडदीयातो जायए नदलिदो साही ॥ २७ ॥ थोवावि धम्मफिरिया भावेण कया माहाफला
होई । लहुयावि दीवयसिहा उज्जोयइ मरुयमवि नेहं ॥ २८ ॥ जे पुण कुंति वयं ते सिद्धिवहूवरा धुवं दुन्ति । “अन्न-
बुयकल्लोणे अप्पायत्ते पमाओ को” ॥ २९ ॥ ता दाउं रज्जसिदिं पमायसगए वयं गहिस्सायि । इय चित्तिग सुहलग्गे
रज्जे अहिंसिचइ कुमारं ॥ १३० ॥ आरुहिय रयणसिनिगं दित्तो दाणाइं वजिराउज्जो । सूरीण चरणसारशिधाण पासे
समणुपत्तो ॥ ३१ ॥ सकलत्तो कइवयरायसंगतो तेहिं दिक्खित्तो राया । जातो य साधुसिक्खावियक्खणो तक्खणे
वक्खो ॥ ३२ ॥ उक्खिद्धज्जमासंतवविसेसट्ठियद्विसंहाणो । पडिनोदियभघो जायकेवल्लो मोक्खमणुपत्तो ॥ ३३ ॥
दीवयपूया शुवनपईवरओ जहा माहाफलया । जाया तए अन्नस्सवि संपज्जइ तीए ता जयइ ॥ ३४ ॥ ॥ दीपपूजा ॥

॥ ३५ ॥ शुवनपईवरया धीमपइयाए साहिओ दुम्ह । शुवनपमोयगनिवं निमुणह नेगजपूयाए ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सबुत्तमेक्कारायं समत्थि बहुलसिरारयरणपि । भुवणतिलयाभिहपुरं कुरंगसमनयणरमणियणं ॥ ३६ ॥ जम्मि मणिभवणपरंपरापहापह्यरयणितिसिरम्मि । वासहरडब्बिरागरुधूमो उप्पायइ निसं व ॥ ३७ ॥ परमहिओ सुहयगतो सचंदहासो दुहावि सबत्थ । भुवणाणंदो नामेण नरवई अत्थि तत्थ थिरो ॥ ३८ ॥ तस्सत्थि सबसुद्धंतसारपयसंहिया सलीलगई । कमलमुही भुवणसिरित्ति रायहंसिब पियभज्जा ॥ ३९ ॥ तीए मणं आणंदइ पुत्तो भुवणप्पमोयओ दूरं । भुवणप्पमोयओ नाम कामसमरुवरम्मत्तणू ॥ ११४० ॥ सद्धम्मसरुच्छेइयकुक्कम्मपरपत्तकेवलसिरीओ । अणुसरि-
असासयसुहो जइव जो सहइ समरसिओ ॥ ४१ ॥ कह्या वि सो करेणुक्खंघगतो छत्तअंतरिअतरणी । तरुणीकरसं-
चालिअसिअचामरविअज्जमाणत्तणु ॥ ४२ ॥ नाणाजाण्हियामत्तमंडलामंडलीयक्यवेहो । चलिओ कुमरो आराममुत्तमं पेच्छिउं सबलो ॥ ४३ ॥ भूरिकविजलकलिअं दुहावि जं ठि(वि)उसपासरकुलव । सहइ सुवत्तासणसंगयं सया राय-
भवणं च ॥ ४४ ॥ पत्तो य तम्मि पविसइ तालीहिं तालसालतलकलिउं । कुवलीकयलीलवलवलीलवंगनारंगचंगम्मि ॥ ४५ ॥ अवरावररमणीयारामपरंपरपरिन्वमणखिन्ने । मुत्तुं गयमल्लीणो अंवयवणदक्खमंडवए ॥ ४६ ॥ अंवयसा-
हागयवज्जकिरणभरकिन्नकणयदंडमि । दोलापह्णके तूलियाए आरुहिय उवविहो ॥ ४७ ॥ पारक्कधणुद्धरकुंतकरनरा कुमरपिट्ठिमणुसरिया । पुरओ उवविह्वा मंडलीयसामंतमंतिमुया ॥ ४८ ॥ पडुपडहंजुमइलआलवणीवेणुसइसंसिस्सं । पारद्धं गाएउं चरियं कुमरस्स रमणीहिं ॥ ४९ ॥ कुमरो वि मणोगयरायवासणावसअलद्धलक्खत्थो । इसिप्पकं-
पिरसिरो वीणं वायइ नियकरेहिं ॥ ११५० ॥ एत्थंतरंमि गयणाओ मणिमयाभरणभूसियसरीरो । अवयरिउं संपत्तो कुमरपुरो किंनरीनियरो ॥ ५१ ॥ तम्मज्जाओ उत्तमरूवाए किंनरीए एक्काए । नमिय सविणयं पेच्छण-
यपेच्छमन्वत्थिओ कुमरो ॥ ५२ ॥ संपत्ताएसाए महापसाओत्ति जंणिउं तीए । पारद्धं पेच्छणयं कुमरपुरो परियण-

जुयाए ॥ ५३ ॥ वज्रतवेणुवीणासारणुविद्धेण दिधराएण । हुंफियकंपियकुरलियमुदियकागलियरूपेण ॥ ५४ ॥ गुंजं-
तमद्वल्लुद्दामपडुडुल्लुक्कणुसारियतालरवं । गाएवं पारखं कुमारचरियं मिउसरेण ॥ ५५ ॥ तबेउमुवफंतं तम्मज्झा किंनरीए
पवराए । मणिमयरसणारणझणिरकणयकिंकिणिठलावाए ॥ ५६ ॥ पसरावसरणभमिभुहमंगकरणफमंगहारेहिं । नञ्चइ
सा करविन्नामवसपसपंतनयेहिं ॥ ५७ ॥ निब्भच्छियमिउकलकंठकूश्यं रायमालवेऊण । नञ्जंती सा गायइ कुमरगुणे
चंदकरधवले ॥ ५८ ॥ तन्नट्टगीयदिन्नावहणिया कुमरपमुहसधसद्धा । जाया तदेकदिट्ठी अचलंगी चित्तलिहियघ ॥ ५९ ॥
पसरंतीए पसरंति उच्छलंतीए उच्छलंति समं । तीए जणनयणाइं सययं सेवयकुलाइं व ॥ ११६० ॥ अवहियहियओ
जाओ रायसुओ तीए गीयनहेहिं । दाउमणो नियहारं तमच्छिस्नाए वाहरइ ॥ ६१ ॥ तो सा चलिया रणझणिर-
किंकिणी किंवि कंपमाणथणी । नवनेहरसभरालसनयणेहिं पलोइरी कुमरं ॥ ६२ ॥ सो वि हु नियहत्थेहिं थणत्थले
जाव ठावए हारं । ता तीए श्रुत्ति आलिंमिऊण नीओ नहयलेण ॥ ६३ ॥ सहसस्त्रिय सेसोवि हु तिरोहितो किंनरीजणो
सयलो । कुमरंगरक्खसंरंभभवभुब्भंतनयणोव ॥ ६४ ॥ जावारोवियधनुहा धणुद्धरा तमणुपक्खिवंति सरे । जातुन्छलंति
तं पइ फारणा खगवगकरा ॥ ६५ ॥ तीए ता रायसुओ नरनयणअगोयरे नहे नीओ । जाओ य गयच्छाओ परिवारो
कुमरहरणम्मि ॥ ६६ ॥ गंतुं सहाए कहियं रत्तो भित्तेहिं कुमरअवहरणं । तं सोउं सो जातो मुच्छाए अचेयणो सपिओ
॥ ६७ ॥ सिसिरकिरियासमुवल्लुच्चेयणो रुयइ दुद्धभरणंतो । पागयनरोव सह पिययमाए सुयविरहविहुराए ॥ ६८ ॥
हा सूरकुमर हा धवलचमरवीइयसरीर हा धीर । दुड्ढावत्थं मुत्तूण मं गओ कत्थ तं कहसु ॥ ६९ ॥ हा कुंददसण हा
विगयवसण हा ईसिहसणपरिलसण । हा कोमलकेस हहा सुवेस हा रंजियसदेस ॥ ११७० ॥ हा जणयभत्त हा
सारसत्त हा नायदेवगुरुत्त । हा पुरिसरयण हा गरिमगयण हा अगियसमवयण ॥ ७१ ॥ को जाय तुमं गुंतुं पहाय-

समएवि मे कमे नमिही । को वा रयणाभरणे दाही वंदीण परिउहो ॥ ७२ ॥ सिंगारसुंदरंगो अप्फालितो करेण को कुंभं । आणंदिस्सइ पउरे करेणुकीलारसं पत्तो ॥ ७३ ॥ मंडलियंमंतितामंतमित्तदासंगरक्खपडिहारा । कुमारवहार-गुरुसोयसहिया तत्थ कंदंति ॥ ७४ ॥ एत्थंतरंमि अत्थाणकणयथंभाउ रयणपुत्तलिया । उत्तरिया मणिमंजीरमंजुझंकार-रमणीया ॥ ७५ ॥ लीलाए चंकमंती पत्ता रायंतियं भणइ एवं । आयत्रसु निव सुयहरणकारणं चयसु सोयभरं ॥ ७६ ॥ दट्ठूण सालिहंजियपुत्तलियं विन्दिओ सपरिवारो । भणइ निवो भदासणमलंकिउं कहसु मह देवि ॥ ७७ ॥ तो सालिहं-जिया सा उवविट्ठा तम्मि आसणे अहवा । “कीरइ अन्नस्स वि विणयपत्थियं किं न नरवइणो” ॥ ७८ ॥ अंचंतविन्दिह-मणो सपरियणो सो निसामिउं लग्गो । कलकंठविलसिरसरा रंनो सा साहिउं लग्गा ॥ ७९ ॥ बहुसामो वि सुतारो सुपत्तनयसुंदरोवि नयरहिओ । अचलो विसवयावि हु वेयड्डो अत्थि गिरिराया ॥ ११८० ॥ तत्थत्थिभूरिभूमिगम-वणेहिं एकभूमिगविमाणं । सगंपि निज्जितं रहनेउरचक्कवालपुरं ॥ ८१ ॥ नियतणुतेयविणिज्जियकणयपहो तत्थ अत्थि कणयपहो । खयरवई बहुविजावलदुल्लिओ ललियदेहो ॥ ८२ ॥ चाईकयकणयसिरि कणयसिरिनाम अत्थि से कंता । देवगुरूणं पणया पणयावज्जियसयलसयणा ॥ ८३ ॥ सोहग्गेणं गोरिं रुवेण रइं सइं पडुत्तेण । अणुकुवंती कत्ता समत्थि से भुवणलच्छित्ति ॥ ८४ ॥ उव्वणजोव्वणजुत्ता विलसिरलायनपुनगत्तावि । असईदासीसहियावि च्छेय-निस्सेससहियावि ॥ ८५ ॥ कयउव्वभंडग्गो विनट्ठनिस्सेसरोगसोगावि । विंनाणगुणवियड्डावि थीकलाविसयपोडावि ॥ ८६ ॥ जणयजणणीवयंसीदासीहिं सया भणिज्जमाणावि । ण कुणइ मणयंमि मणो पुरिसं पइ वीयमोहव्व ॥ ८७ ॥ कुलयं । सिंगारिथंमि पुरिसं दट्ठूणं कुट्टियं नयदिट्ठिं । मडलिज्जंतिं वालइ उव्वेयवसेण सहसत्ति ॥ ८८ ॥ चित्तट्ठियं पि-दट्ठुं रुड्डव नरं परंमुही देई । सिविणयसच्चवियंमि हु न नियइ पुरिसं ससुरयं ॥ ८९ ॥ पावकहं व निवारइ कहिज्ज-

माणिं पि पुरिसचरियकाहं । कज्जेवि नरं नालवइ विहियगोवज्झमिव बाला ॥ ११९० ॥ एवंरूवं दुहियं दट्ठण विचित्तए खयरराया । कस्सेसा दायधा मए नरवेसिणी कन्ना ॥ ११ ॥ दंसिज्जाए इमाए जो जो सो सो वरो न पडिहाइ । आहारोष अरोयगरोगफत्तस्स सव्वस्स ॥ १२ ॥ देववसा जइ जायइ सीलब्भं सो इमाए ता होइ । गोत्तम्मि गुरुकलंको पावमिमाए अकित्ती मे ॥ १३ ॥ इय चिन्तासंततो वुत्तो कन्ताए नरवई एवं । मा तम्मसु पिय पुच्छसु वरमइसय-
नाणिमिमीए ॥ १४ ॥ बहुमन्नियपियवयणो तणयं गहिडं गओ विदेहं सो । माणिक्कपुरारामे दट्ठणं केवलं नमइ ॥ १५ ॥ उवचिसिज्जणं सोऊण देसणं पत्तअन्तरो नमिडं । पुच्छइ किं मह दुहिया पटु पुरिसवेसिणी जाया ॥ १६ ॥ तो भणइ विमलनाणी आयन्नसु राय कारणमिमीए । जेणेसा संजाया विहेसपरा पुरिसविसए ॥ १७ ॥ सालीणजणा-
वासे रइरूवकुलंगणे जणियसोहो । हसियसरोवसरोहे सालिपुराभिहपुरे रम्मे ॥ १८ ॥ अत्थि नयज्जियबहुधणदान-
कयत्थी कयत्थिसंघाओ । सालिप्पियाभिद्धानो धणिप्पहाणो धणी विणई ॥ १९ ॥ जुयलं ॥ अवरोवि खत्तिओ तत्थ अत्थि रणसूरनामओ चाई । नवरं तणुविहवो “नो पायं चाइम्मि वसइ सिरी” ॥ १२०० ॥ जओ—चाइयणकरपरं-
परंपरियत्तणजागरुयलेयध । अत्था किविणघरत्था सत्थावत्था सुयंतिव ॥ १ ॥ तस्सोभयद्दावि पिया विणयवई नय-
परा सुसीला य । ईसीसि साहिमाणा “अहव न दोसं विणा कोई” ॥ २ ॥ भत्ता पियमणुवत्तइ पियावि पइणोणुवत्तए चित्तं । वद्धइ दोण्हवि पणओ “जइवा नेहो नयद्धान” ॥ ३ ॥ सालिप्पियस्स कजाइं साहए सो वि देइ दवणं से ।
“न निओ वि कुणइ कजं सुदियाए किं पुनन्नजणो” ॥ ४ ॥ जं किंपि लहइ कत्थइ समप्पए आणिडं पियाए सो । “पाणावि जम्मि देया तत्थ अदेयं किमवि नत्थि” ॥ ५ ॥ सालिप्पिएण कइयावि पेसिओ सो वहुए आणयणे । चलिओ संदण-
पुरनयरम्मगमणुसरिय संनद्धो ॥ ६ ॥ पत्तो अडईए बहुमयसत्ताए वि अमयसत्ताए । जीए सचित्तकथा अमाणसंगावि

तिरियोहा ॥ ७ ॥ तीए सो नियइ वडाइवियडविडवीहिंसकडिछाए । खरतरणिनिहियनयणं आयावंतं मुणिं एणं ॥ ८ ॥
दिट्ठो य तेण उप्पाडियासिरोहो भडो तमभिहणिंडं । जंतो भित्तीए इव खलिओ मुणिओगहमहीए ॥ ९ ॥ उगहमइक्क-
मेडं अंतरंतो चउदिसिं परिब्भमिरो । दिंतोव भत्तिजुत्तो पयाहिणाओ सुसाहुस्स ॥ १२१० ॥ रे मुंड तुंडभंगं काडं तं
निच्छएण मारिस्सं । इय जंपिरो मुणिं पणसिडं च पडिओ अहोवयणो ॥ ११ ॥ पडियं झडत्ति खगं मुक्कं करेण
दूरतरयम्मि । मुणिमारणअज्झवसायजायगुरुपावभीएण ॥ १२ ॥ पच्छाहुत्तं वलियं बाहुजुयं साहुवहनित्तं । गंतु-
मणीहंता इव पत्ता पाया सिरे तस्स ॥ १३ ॥ जातो गीवाभंगो रुहिरं नीहरइ तस्स वयणातो । अहवा जं चित्तिज्झइ
परस्स तं अत्तणो एह ॥ १४ ॥ उद्धट्ठियंमि खगो उच्छलिओ सो तयग्गमारुढो । परिभमइ गुरुरणं वंसारुढो नड-
नरोव ॥ १५ ॥ एत्थंतरे अणवभा विज्जुव नहाओ इत्ति अवइंना । एक्का असरी पिंजरियदिसिमुहा देहदित्तीए ॥ १६ ॥
कुंडलकिरीडकेजरकडयहारोहसोहधरदेहा । तिपयाहिणिंडं नमिडं च सा ठिया साहुणो पुरओ ॥ १७ ॥ दट्ठूण तमच्छरियं
रणसूरो मुणिसमीवमल्लीणो । पणमिय कयंजलिउडो उवविट्ठो समुचियट्ठो ॥ १८ ॥ एत्थंतरे निसंनो उस्सगं पारिऊण
साहूवि । भणियं च देवयाए पुणरुत्तं पणमिऊणमिमं ॥ १९ ॥ पडु अहमिमाए अडईए सामिणी इह समागयेण तए ।
नूणं कया पवित्ता असमप्पसमेक्करसिएणं ॥ १२२० ॥ एसो हु पच्चणीओ पावप्पा कोइ तुम्ह हणत्थं । इंतो एवं-
विहिओ मए अदिस्साए खलिऊण ॥ २१ ॥ भणइ मुणी कयकरुणा देवि इमं मुयसु जाव नो मरई । उवसग्गगहण-
कज्जे आगच्छामो वयं जमिह ॥ २२ ॥ साहूणमलंकारो खंतिच्चिय देवि नो पुणो कोवो । उवसग्गपरे नूणं तीए विसओ
जओ भणियं ॥ २३ ॥ जं खमसि दोसवंते सो तुह खंतीए होइ अवयासो । अह न खमसि को तुह अविसयाए खंतीए
वावारो ॥ २४ ॥ सुत्तं मुणिसज्जायं कोवं थोवंपि जइ जई कुणइ । ता सुयतवाइ सबं निरत्थयं तस्स जेणुत्तं ॥ २५ ॥

पढत सुयं धरत वयं कुणत तवं परत धंभचेराइ । तहवि तयं संधंषिदु निरत्थयं कोववरायसा ॥ २६ ॥ अम्हाण चेवि
पयं वयसघस्सं रिजंषि कुविण्णि । अणोसाइ कुणंते लाहोत्ति विभावणं जेण ॥ २७ ॥ अणोसाहणमारणम्ममब्भंसाण-
वाल्लुसुलभाण । लाभं मअइ धीरो जहोत्तराणं अभावग्गि ॥ २८ ॥ अम्हाण गोक्खलपुरपत्थियाणमेण्ण काडमारल्लं ।
साहेज्जमओ एसो उवयारी गुंच ता पयं ॥ २९ ॥ सोऊण साधुसणमसगप्पसमागयप्पवहसरिस्सं । रंजियहियया देवी
पर्यंषिदं एवमारल्ला ॥ १२३० ॥ धओसि तुमं गुणिरयण तिमतवतेयल्लिजुत्तोवि । काळं खगग्गिमवयारयंणि मितं व
मोइत्तो ॥ ३१ ॥ एवं पसंसिय गुणिं अदिट्ठनंभाउ तं भलं गुणं । धम्ममइ संजाया देवी साइसत्ति सुणिवयणा ॥ ३२ ॥
सोवि भओ पयलमो अवराहं खासए नियं गुणियो । “दूरंणि पाणदाया पुजो अवरोति उवयारी” ॥ ३३ ॥ भणइ य तइ
सोमेवि दु सणविण्ण कल्लुसियं मणो मज्झा । अमारकरे वि दु विट्ठे कमलं संकुयइ जमजोगं ॥ ३४ ॥ मारणपरे रिउ-
स्मिन्नि तुह पडु हियए पवट्ठिओ पसमो । याइकरेवि निवादे सीयं चिय होइ हिमसेले ॥ ३५ ॥ ता मज्झा चेहि विक्खं
पावाओ इमाओ नत्ताआ मोक्खो । “वेरगे जं न कयं नूणं तं दुकारं पच्छा” ॥ ३६ ॥ तो से विज्जा दिक्खा गुणिणा देवीए
अप्पिओ वेसो । धम्मज्जयस्मि जइवा मूलं गोक्खलसा राधेजं ॥ ३७ ॥ नवदिक्खित्थं परंसिय सट्ठाणे देवया गया
घत्ति । वट्ठूण तमच्छरियं भणइ गुणिं नमिय रणसूरो ॥ ३८ ॥ दुत्तरदिक्खाए तो मज्झमसत्तस्स कहरु निदिधम्मं ।
“दिज्जइ न जओ दुल्लं रोइंमि रसादिण्ण अहवा” ॥ ३९ ॥ भणइ गुणी गगरायं देवं आयरसु उज्झिय सारायं । सुत्तूण
कामधेणुं किं निण्हइ गइहिं कोवि ॥ १२४० ॥ नाणालोए गुरुणो निण्हसु रविणोव जयपवित्तकरे । परिहरिऊण कुशुकणो
वहल्लनिसीधेव तामवहुले ॥ ४१ ॥ अंगीकरेसु धम्मं सोक्खलकरं दुइयरं चइय पावं । गुत्तुमजरमरममयं को मणुकरं गरं
गिलइ ॥ ४२ ॥ कप्पदुमंव वंछियफलं आयरसु उत्तमं तत्तं । किंपागं पिय रंमोदकारयं मा पुण अत्तत्तं ॥ ४३ ॥

चत्तारिवि एयाइं सुदेवगुरुधम्मस्तत्तत्तुवाइं । नारयतिरियनरामरगईउ चउरो अवहरन्ति ॥ ४४ ॥ एयं पवयणसारं काउ-
मसत्तो समगमवि भवो । एक्कंचिय जिणपूयं कुणंति भव्वा जिणिंदाण ॥ ४५ ॥ सबाओ वि य सत्तो काउं नेवल्पायमे-
क्कंपि । कुव्वंतो दुक्कम्मं पाणी पडिहणइ सबंपि ॥ ४६ ॥ मुज्झइ जंवा तंवा रविउदयत्थमणमज्झयारम्मि । दिज्झइ जिणस्स
ता भो कयाइ थोवंपि पुन्नकए ॥ ४७ ॥ पाविज्झइ परलोए अणंतमप्पंपि इहभवे दिन्नं । धन्नं ववियं थोवंपि फलइ तं नूण
बहुगुणियं ॥ ४८ ॥ नियविहवससुचिणहिं महुराहारेहिं मोयगाईहिं । जिणमच्चन्ता सासयतिंति पावन्ति भणियं च ॥ ४९ ॥
“खणतिंतिणण लब्भइ नेवज्जेणं जमक्खया तित्ती । तं सासयसिवसुहतिंतिं तित्थनाहस्स माहप्पं” ॥ १२५० ॥ ता जइ
सासयसिवसुहतिंतिं वंछसि अहो महासत्त । ता कुणसु देवपूयं दाउं भत्तीए नेवलं ॥ ५१ ॥ सो आह अज्ज पत्ता चित्ता-
मणिक्कामवेणुक्कप्पडुमा । रंनम्मिवि जं जायं मह पडु तुहदंसणममोहं ॥ ५२ ॥ ता इहपरलोयहिं कहिंयं तुन्नेहिं जं तयं
काहं । को नाम सिरिसुर्विति पहणइ पायप्पहारेण ॥ ५३ ॥ इय जंपिय नमिय सुणिं चलिओ संदणपुरम्मि संपत्तो । मोया-
विय सालिप्पियवहुयं गहिउं तयं वलिओ ॥ ५४ ॥ गुरुवेयवाहणेहिं थेवदिणेहिं पि नियपुरे पत्तो । पणमित्तु मोयगा
सासुयाए बहुयाए उवणीया ॥ ५५ ॥ तीए वि सयणभवणेसु पेसिया समुचियक्कमेणं ते । अहवा उचियायरणं कुलंगणाणं
कुलायारो ॥ ५६ ॥ बहुदक्खेलानालियक्खंडकप्पूरम्मिस्सिओ एणो । दिन्नो रणसूरस्सावि मोयगो माणययमाणो ॥ ५७ ॥
वंधुरगंधं तं गिण्हिऊण लग्गो सगेहमगो सो । अंतो रमतसद्धम्मपरिणइं चित्तए एवं ॥ ५८ ॥ एएण भक्खिएणं जाव-
जीवं न होहिही तित्ती । जाव सुहे ता सुरसो एसो पोहंगतो असुइ ॥ ५९ ॥ ता इमिणा सुरसेणं भक्खेण करेमि
देवनेवलं । जं मह पच्छा दुल्लहो एवंविह उत्तमाहारो ॥ १२६० ॥ इय चित्तिऊण वलिउं चलिओ मग्गे जिणिंदमवणस्स ।
“अहव पमातो काउं किं जुज्झइ धम्मक्कम्मस्मि” ॥ ६१ ॥ गच्छंतो संपत्तो जिणालयं नियइ सुरविमाणंव । अनिलचलद्धय-

रणशणिरकिंकिणीनियररमणीयं ॥ ६२ ॥ जन्मि जिणसम्मुदानिलचालियवलिनिहियसेयकुशाइं । पूरुंवं जिणिइं जंताइं
जवेण सोइंति ॥ ६३ ॥ पुप्फोवहारुंणपरारं बहुचंचरीयचफाइं । जन्मि जिणवंदयवुट्टकम्मनियलाइंवं सहन्तिं
॥ ६४ ॥ तस्मि पविट्ठो पेच्छइ पसंतकंते जिणेसरं रिसहं । जय जय जय तिजयपटुत्ति जंपिरो नमइ भत्तीए
॥ ६५ ॥ चित्तभंंतरअसुखसंतबहुमाणजायरोमंचो । आणंदवसपवित्तं सुविसरजलधोयंगंडयलो ॥ ६६ ॥ तं पाव-
मोयगं मोयगं सरं सुयइ सागिकरकमले । सहलत्तं कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ६७ ॥ पुणरवि पणमिच्छु पटुं
खोणीमंडलमिलन्तभालयलं । पत्तो नियायावसे सो उफंठियगियापासे ॥ ६८ ॥ अन्नोन्नं मिलियाणं ताणुप्पन्नो महासु-
हुकरिसो । “अवरे वि निए मिलिए होइ सुइं किं न कंताए” ॥ ६९ ॥ कइया वि तस्स कंता तुत्ता सालिप्पियप्पिय-
यमाए । किं रूवरसो सो वुइ पियस्स जो मोयगो दिन्नो ॥ १२७० ॥ तं सोउं सा चित्तइ किं मह न पिएण दिन्न-
मद्धंपि । “जइवा न वल्लहेवि हु लोहपराणं हवइ नेहो” ॥ ७१ ॥ नियघरुत्तालुत्ता वत्ता नन्नस्स साहिउं जुत्ता । इय
धितिय तीउत्तं अन्नंतं तस्मि रसवत्ता ॥ ७२ ॥ धणरहियाणवि नेहे लोओ पेसइ जमुत्तमं वत्थुं । किं पुण ससुरकु-
लस्मि वि सेसओ तस्मि वि धणंठु ॥ ७३ ॥ इय जंपिय नियगेहे पत्ता पियविसयजायअवमाणा । विप्फुरियफारअरई
उवविट्ठा दूरमुष्णिगा ॥ ७४ ॥ वामकरक्खित्तमुही सरलस्सासा अलद्धलक्खत्थी । पियगयअणप्पकुवियप्पकप्पप्पन्न-
संतावा ॥ ७५ ॥ चित्तइ पिएणमविमइय मज्झ न कयाइ अत्तणा मुत्तं । अज्जं तु सुयमिं “नो दीसइ किं जीवमाणेहिं”
॥ ७६ ॥ तं चिय निवससिं महाणसंसिं न तरामि तं विणा ठाउं । इय मायावयेणेहिं अहमप्पवसा कया तेण ॥ ७७ ॥
धुत्तपउत्तीहिं नरा एवं रमणीओ वेलेवेऊण । निम्मल्लमालियाउव कयकज्जा ज्झत्ति उज्झंति ॥ ७८ ॥ मंदमईओ अविवेइ-
णीओ तुच्छाओ अपट्टियसुयाओ । वरईओ विप्पयारिय विट्ठा विडंबंति विलयाओ ॥ ७९ ॥ जेतियमेत्ता विज्जा हुंति

पवंधावि तेत्तिया नूनं । तो पुरिसेहिं सवसयाओ सुद्धमहिलाओ कीरंति ॥ १२८० ॥ दुबिलसियाइं काउं कुवियपियाए तमुत्तरं दिंति । नियसच्छयाए सबा(सच्चा) इमेत्ति मंनंति तो ताओ ॥ ८१ ॥ इय चिंतावसअंचंतजायवरविसयविसयविदेसा । तं चैव गरुयवेरगकारणं धरइ हियंमि ॥ ८२ ॥ पइविदेसवसाएवि तीए मुक्कं न विनयकरणिज्जं । “लंघंति न रुद्धाओवि कुलवहुयाओ कुलायारं” ॥ ८३ ॥ तेणेवय वेरगेण भत्तुणो मोइऊणमत्ताणं । पडिवन्ना बालतवं नवरं न मुयइ पिण्णुसयं ॥ ८४ ॥ रणसूरो पुण सरलस्सहावओ सरइ नियगुरुक्कमणे । दीणाइयाण दाणाइं देइ न करेइ अन्नायं ॥ ८५ ॥ एवं मज्झिमपरिणामवससमज्जिनराउ निवरिद्धी । मरिऊण भुवणतिलयाभिहपुरनिवनंदणो जाओ ८६ ॥ तन्मज्जावि तवजियविजाहरिद्धिभोयसंभारा । मरिय सुया तुह जाया रहनेउरचक्कवालपुरे ॥ ८७ ॥ पुबिल(छ)भवम्मि मया पुरिसवेसेण संजुया जमिमा । इह जम्मेवि तमुबहइ तुह सुया निव नरवेसं ॥ ८८ ॥ भणियं केवलिणा नहयरिंद तुह कंनयाए पुरिसम्मि । विदेसकारणमिमं पयासियं पुच्छमाणस्स ॥ ८९ ॥ तं सोउं जाईसरणनाणविन्नायनियभवा भणइ । पटु तं तहेव सच्चं तुब्भेहिं जहा समक्खायं ॥ १२९० ॥ तो सो ससुओ नयकेवली गओ नियपुरे खयरराया । जाया य निडियप्पा नियामिमाणे भुवणलच्छी ॥ ९१ ॥ चितइ महाणुभावेण तेण तइया न विरइयमजुत्तं । जं मोयगेण विहिया पूया देवाहिदेवस्स ॥ ९२ ॥ तइया दइए सरले वि दुबियप्पं पक्कप्पमाणीए । महिलेण मए पयडीकयं धुवं तुच्छपयइत्तं ॥ ९३ ॥ जइ हं तं पुच्छंती ता सो तइयावि मह पयासंतो । जं पुच्छिएण तेणं कयाइ वडोत्तरं न कयं ॥ ९४ ॥ इय चिंतती जाया पियम्मि पोढाणुराइणी बाला । नियदुबिलसियसुमरणडब्बि-विरुपरियरणराया ॥ ९५ ॥ चत्तो रत्तोवि पियो भवम्मि पुवे इमाए कुवियप्पा । इय चितिय कुविएणव कामेण सरेहिं पइया सा ॥ ९६ ॥ दाहो वाहो कंपो हियए नयणेसु देहजडीए । तवेलंचिय तीए संजाया सत्तिया भावा ॥ ९७ ॥

श्रीअनन्त-
नाथचरि-
त्रादुद्धृतं
पूजाष्टकम्
॥ ३७ ॥

अरईसूयगसिक्कारवसविणिक्खतरत्तदत्तपहं । हिययंमि अमायन्तं उवमइ पियाणुरायं व ॥ ९८ ॥ असुहपसरप्पकंपिर-
करजुयनहसुत्तिकंतिपसरेण । धवलंती चंदणरसपंकेणव ताविलं देहं ॥ ९९ ॥ इय पसरियनियपियविरहतावदावगिग-
दब्बमाणातणू । उवैयावेयवसा बाला कट्ठं दसं पत्ता ॥ १३०० ॥ गरुयाणुणयपुरस्सरपुच्छंतसहीण साहिओ तीए ।
पुबप्पियम्मि सुवणप्पमोयगो निवसुए नेहो ॥ १ ॥ भणई य जइ तमहं पुबभवपियं हे सहीओ न लहेमि । देमि धुवं
ता जलणस्स आहुइं नियसरीरेण ॥ २ ॥ नहयरनाहस्स सहीहिं साहिओ तीए निवसुए राओ । तो से तोसो जाओ
सुयाए कुमाराणुरत्ताए ॥ ३ ॥ जंपइ पन्नत्तिं देवयं निवो देवि आणसु कुमारं । अचाहियं न जायइ जा महजीवियस-
मसुयाए ॥ ४ ॥ तो इह देवी पत्ता पत्ते कुमरम्मि रम्मसुज्जाणं । काऊण किंनरीपेच्छणच्छलं तीए हरिओ सो ॥ ५ ॥
नेउं रहनेउरचक्कवालनयरम्मि नहयरिंदस्स । सो उवणीओ तीए सह कुमरीए पमोएण ॥ ६ ॥ कयगोरेवेण कुमरस्स
राइणा कहिय कंनयाचरियं । भणियं पुबभवपियं परिणसु तं वच्छ मह दुहियं ॥ ७ ॥ तं सोउं जाईसरणनायनियपुब-
जम्मवुत्तंतो । जंपइ तए जमुत्तं काहं सबंपि तं किंतु ॥ ८ ॥ हरिए मए ममंवापिऊण जायं भविस्सइ दुहंतं । जेण न
होहिंति पट्ढणि ताणि नियपाणधरणस्स ॥ ९ ॥ तयणु नहयरनिवेणं कुमारकुसलप्पउत्तिकहणकए । तुम्हंतियम्मि पंन-
त्तिदेवया पेसिया एत्थ ॥ १३१० ॥ एयं समहिट्टिय सालिभंजियं कणयथंभयगाओ । अवयरिय मए कहिओ तुह
सुयअवहरणवुत्तंतो ॥ ११ ॥ इय मणिऊणुच्छलिउं सट्ढाणे सालिहंजिया पत्ता । अत्थाणजणो सबोवि विम्भिओ नरव-
इप्पसुहो ॥ १२ ॥ जंपंति सबसामंतमंतिणो देव पेच्छ अच्छरियं । जं जंपंति सजीवारमणीओव रयणपडिमाओ
॥ १३ ॥ देवोच्चिय पुन्नपयं जस्स सयं खेयरी ठिया वहुया । किं कामदुहा धेणू अभइनरगेहमल्लियइ ॥ १४ ॥ एवं
जंपंताणं ताणं सो वासरो वइक्कंतो । माणियसुहनिदाणं झडित्ति रयणिवि अवसरिया ॥ १५ ॥ काऊण दिणयोदय-

नैवेद्य-
पूजायां
सुवन-
प्रमोदक-
कथा

॥ ३७ ॥

करणं रडयरम्मसिंगारो । उवविसइ सहाए निवो नमंतसामंतमन्तिथणो ॥ १६ ॥ एत्थंतरे निलचलइयावलीरण-
झणन्तकिंकिणियं । मणिकिरणभरियसुवणं विमाणविंदं समणुपत्तं ॥ १७ ॥ गयणंगणमुक्कविमाणचक्का नीहरिय नहरय-
निवेहिं । अणुगम्मंतो सालयसुयलंगो आगओ कुमरो ॥ १८ ॥ अत्थाणसन्निविट्ठं जणयं पणमइ महिमिलियमउली ।
तेणवि गाढमालिंरिऊणमायुच्छिओ कुसलं ॥ १९ ॥ पुणरुत्तं पणमिय भणइ ताय कुसलं तुहप्पसाएण । कयजणणिपय-
प्पणई उवविट्ठो पिउपयासन्ने ॥ १३२० ॥ सह नहयराहिवइणा रंना काऊणमुचियपडिवत्तिं । उववेसिओ निए सो
मणिसयसीहासणद्धम्मि ॥ २१ ॥ सेसावि खयरपहुणो पणमिय दिन्नासणेसु उवविट्ठा । पणयाए बहुआए भव पुत्तवइत्ति
भणइ निवो ॥ २२ ॥ तो सा पणमित्तु कुमारत्थारं वासपासमुवविट्ठा । सुयहरणाविणयं खमसु राय इय भणइ खय-
रवई ॥ २३ ॥ जइ न हरावेंतो हं तणयं ता सुया मरंती मे । विहिओ मए अनाओ इमो सुयाजीवणनिमित्तं ॥ २४ ॥
रायाह एस अनओ न होइ खयरिंद नणु इमा नीई । “समयाणुवत्तणं बहुगुणं च जं सो नरिंदनओ” ॥ २५ ॥ खयरा-
हिव बहुसुहमिच्छिरेहिं कट्ठं सहिजाए थोवं । किमणंतसिवसुहत्थे कट्ठं न कुणंति सुणिवसहा ॥ २६ ॥ विणओच्चिय एसो
अविणओवि अहियं नरिंद तुह मन्ने । कन्ना तए विइन्ना जं मह भूगोयरसुयस्स ॥ २७ ॥ इय जंपिय सम्माणो तस्स
कतो राइणा खयरपहुणो । परिवारजुयस्स जहा सविम्हओ सो ट्ठिओ दूरं ॥ २८ ॥ एवं नरवरसम्माणकरणसंजा-
यसमहियसिणेहा । ठाऊणं दिवसदुगं सहाणे खेयरा पत्ता ॥ २९ ॥ नवकंतासंजुत्तो विविहविणोएहिं कीलइ कुमारो ।
उवविसइ य अत्थाणे पिउपासे उभयसंझं पि ॥ १३३० ॥ कइयावि परमवोच्चियसुकज्जकरणुज्जाएण नरवइणा । गुरुरिद्धि-
वित्थरेणं कुमरो अहिसिंचिओ रज्जे ॥ ३१ ॥ तो मोहमल्लनामस्स सूरिणो पायपउममणुसरिउं । गहिया दिक्खा रंना
तविय तवं सो सिंव पत्तो ॥ ३२ ॥ नवनिवई वि नएणं पालेइ पयं विणिग्गहइ दुट्ठे । समुवज्जइ विमलजसं कुणइ य

सद्धम्मकिरियाओ ॥ ३३ ॥ कइयावि रणब्झणमाणकिकिणीगणविमाणमारुहिउं । गंतुं मंदरनंदीसरेसु रासयजिणे
थुणइ ॥ ३४ ॥ सुहसिविणसूइयसुयं कइयावि प्सविद्या भुवणलच्छी । भुवणाभरणोत्ति कयं नामं सम्माणिय जणं
से ॥ ३५ ॥ बालत्तमइक्कंतो गाहियवावत्तरीकलो कुमरो । अच्चब्बुयरूवातो विवाहितो रायकन्नातो ॥ ३६ ॥ समयं-
तरम्मि रत्ते भुवणाभरणं निवेसिउं राया । विहियवओ वरनाणी होउं पत्तो महाणंदं ॥ ३७ ॥ नेवजेणं पूया जहा
कया राइणा इमेण तहा । सासयसिवसुहक्के कळा अवरेणवि जणेण ॥ ३८ ॥ नैवेद्यपूजा ॥ ३९-

५ ५ ५ ५ ५ भुवणप्पमोगलिवो कहिओ नेवज्जपूयमभिसरिउं । इण्हि तु वासपूयाए गंधबंधुरक्कं भणिमो ॥ ३९ ॥ ५ ५ ५ ५ ५
रम्मारासरोवरपुक्खरिणिविरायमाणचउपासं । वसुहासारं नयरं समत्थि वित्थिन्नपायारं ॥ १३४० ॥ नहस-
न्निहफालिहायणलग्गजिणहरसिरगमग्गठिओ । खणमेत्तं लक्खिज्जइ जम्मि रवी रयणकलसोव ॥ ४१ ॥ रयणियर-
किरणसियकित्तिबंधुरो कित्तिबंधुरो नाम । फुरियप्पयावपसरो पयावइ अत्थि तत्थ पुरे ॥ ४२ ॥ धरणिघरइयसेवो
जो विजयाणंदकारओ दूरं । अहिजाइकयविणासो चिरायए गरुडपक्खिव ॥ ४३ ॥ सवुत्तमपत्ताहियच्छायापरमालिया
सुहप्पसवा । लइयव कित्तिलइया समत्थि रत्तो महादेवी ॥ ४४ ॥ तीएत्थि तणुत्थसुगंधंधुरो गंधबंधुरो नाम ।
कुमरो अमरोवमरूवरम्मथारमणिमहरणो ॥ ४५ ॥ सुकया सियवन्नधरं सिरंव उव्वइ जो नियसरीरं । परमहसिय-
गुणजुत्तं सुहमिव रयणाभरणजायं ॥ ४६ ॥ नरनाहमंडलेसरसाभंतमहन्तमंतिपुत्तेहिं । सययं सेविज्जंतो कालं
अइवाइइ कुमरो ॥ ४७ ॥ कइयावि नियप्पासायचंदसालागवक्खमल्लीणो । विविहविणोयक्खित्तो जा चिइइ सह
वयस्सेहिं ॥ ४८ ॥ ताव सहसत्ति एगो कीरो नियपक्खनीलक्कन्तीए । हरियालीकलियंपिव नहं कुणंतो समणुपत्तो ॥ ४९ ॥

अच्छरियं जण्यन्तौ जणस्स कुमरक्खमे नमेउं सो । महुरगिरं पयडक्खरमेवं विन्नविउमारद्धो ॥ १३५० ॥ आरामाहिय-
वासो रायसुओ रत्तवयणविन्नासो । तुममिव कुमर अहंपि हु तेणाहं तं समल्लीणो ॥ ५१ ॥ ता आयन्नसु कल्लेणमागतो
जेण विन्नवेमि तयं । निक्कजाओ पवित्तीओ हुंति जइवा न सउणाण ॥ ५२ ॥ तं सोऊण ययंपइ कुमरो कीराहिराय
उवविसिउं । रयणासणम्मि साहसु तो सो उवविसिय साहेइ ॥ ५३ ॥ अत्थिरयाहियतुरयं अत्थिरयाहियसुवन्न-
वरदाणं । अत्थिरयाहियजणं उदयाणंदाभिहं नयरं ॥ ५४ ॥ तम्मि नमिरनेसरसिरसेणमणिप्पहापिसंगपओ । उदि-
यप्पयावराया समत्थि वित्थरियजसपसरो ॥ ५५ ॥ सच्छप्पयई कालुस्सहारिणी सारसोहसंजुत्ता । उदयावलिद्व
उदयावली पिया अत्थि नरवइणो ॥ ५६ ॥ विलसंतविमलसंखाकयसयवत्तालिचक्कसंखोहा । उदयस्सिरिस्ति उदय-
स्सिरिस्ति तीए समत्थि सुया ॥ ५७ ॥ सरलसहावा नियनासियव सिहणस्सिरिस्ति सुपवित्ता । दूरं रत्तं अहरं व धरइ
जा वयणविन्नासं ॥ ५८ ॥ निरुवमरुवं कमणीयजोवणं तं समगसोहगं । अवलोइउं जुवाणा वहंति दूरं मणुम्मायं
॥ ५९ ॥ दद्धूण तट्टहरिणच्छिपेच्छियं तीए नीइनिउणा वि । मुणिणोवि अणप्पवसा हवन्ति किं निविवेयातो
॥ १३६० ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया सिंगारगारवग्घविया । आरुहिय कणयमणिमयसुहासणं चलिरसियचमरा
॥ ६१ ॥ मुत्तावचूलविलसंतछत्तअंतरियतरणिकरपसरा । सहयारसारमुज्जाणमागया कीलिउं वाला ॥ ६२ ॥ परि-
पक्कफुट्टदाडिमवीयावलिनिद्धदन्तपतीहिं । हसइव जं नरेसरसुयासमागमणतोसेण ॥ ६३ ॥ विलसंतकुमुमलइयासिय-
कलियाचक्कवालकलियं जं । कुमरीसंगवसुल्लसियपुलयपन्मारभरियं ॥ ६४ ॥ अंबयवणकयलीहरदक्खामंडवमणोभि-
रामंमि । तंमि पविट्ठा वहुकुसुमपरिमलव्भमिरभमंमि ॥ ६५ ॥ पेच्छइ अतुच्छअच्छरियकारयं नरमुहं मऊरं सा ।
विलसिरसुतारचंदयविरायमाणं नहयलंब ॥ ६६ ॥ मुत्तावलइयमरायकुंडलकरच्छुरियनिम्मलकवोलं । चंदणमयणा-

हीरेहरइयवहुभंगिपत्तंव ॥ ६७ ॥ भमरउलकालकुंतलधम्मिहुल्लसियसियकुसुममालं । सामचउदसिनिदिसिदिसिमलरय-
णीयरकलंव ॥ ६८ ॥ दहुं कुमरिं नियचरणचारुसंचारणिरघघरिओ । गंतूण संसुहो भणइ कुमरि तुह सागयं एत्थ
॥ ६९ ॥ एहि इहं च वणंतो कयलीहरए सदक्खमंडवए । उवविसिउं आयन्नसु जं किंपि अहं तुह कहेमि ॥ १३७० ॥
तं अवलोइय अचन्नुएक्केहें सहीउ सा भणइ । कोऊहलमवलोयह जमिमो दीसइ नरमऊरो ॥ ७१ ॥ तह वाहरइ
सविणयं मं किंपि हु मज्झ कहिउमिच्छन्तो । ता तं आयत्तेमो उववसिउं साहए जमिमो ॥ ७२ ॥ जंपंति ताउ सामिणि
तुम्हाऽऽणच्चिय पमाणमग्धाण । कजेसु समग्गेसु वि किं पुण एवंविहच्छरिए ॥ ७३ ॥ तं सोउं मुक्खसुहासणावि कुमरी
सुहासणे ठाइ । उवविट्ठासु सहीसुं कहिउं लग्गे नरमऊरो ॥ ७४ ॥ अत्थि गरिट्सुरट्ठाविसिट्ठवसुहावयंसंकासं ।
वसुहावयंसयं नाम नयरमइरम्भरमणिणं ॥ ७५ ॥ रयणावयंसयनिवो तं पालइ जो रणागयं पि रिउं । अस्सत्थ-
सुभयद्वाविहु मुंचइ अस्सत्थमवि सदओ ॥ ७६ ॥ तत्थ निवमाणणिज्जो पुल्लो पउरण पउरणुणभवणं । दीहरदिट्ठी सेट्ठी
निवसइ नयवद्धणो नाम ॥ ७७ ॥ तस्सत्थि भाइपुत्तो सुरूववंतो धणावहो नाम । उवरयजणउत्ति करेइ तस्स
गुरूगोरवं सेट्ठी ॥ ७८ ॥ सुत्तूण नियंगरुहे वियरइ वत्थाइ तस्स परमं से । अहव “गुरूयासयाणं अपपरवियारणा
नत्थि” ॥ ७९ ॥ परिणाविओ य उम्मीलमाणनवजोवणाभिरामतणुं । धणसेट्ठिसुयं नामेण धणवइं सीलकुलभवणं
॥ १३८० ॥ कइयावि हु असुहोदयवसओ सो सेट्ठिमाह मह ताय । वियरसु घरस्सिरीए अद्धं भिन्नो भविस्समहं
॥ ८१ ॥ तं सोऊण पर्यपइ सेट्ठी किं वच्छ एवमुल्लवसि । तं मोत्तुं को अन्नो घरस्सिरीसामिओ कहसु ॥ ८२ ॥
अचन्नुभोयअमाणदाणकले धणवयं कुणसु । अणुकूलंमि मए वच्छ तुज्झ को नाम पडिक्खो ॥ ८३ ॥ अवरं च
तमेगागी पडिवालसु जाव पुत्तउत्पत्तिं । नूनं जं न मुणेमो वियंभियं विहिंविंलासस्स ॥ ८४ ॥ इय जंपिओवि न सुयइ

कुगाहं तयणु ससुरयस्सावि । न कुणइ भणियमजोगाणहवा कत्तो गुणाहाणं ॥ ८५ ॥ तो एगते कंताए जंषिओ नाह
एव किं भणसि । मा पेच्छसु अच्छीहिं हियएण सुदीहमिक्खेसु ॥ ८६ ॥ निश्चितं संपज्जइ सवंपि ठियाण गुरुसमीवंसि ।
लवणंपि सचिंताए भविही भिन्नद्वियाण पुणो ॥ ८७ ॥ कस्सइ पुत्रेण इमा लच्छी उल्लसइ नज्जइ न एयं । ता का
नाम कुबुद्धी तुन्हाणं भवह जं भिन्ना ॥ ८८ ॥ इय तीउत्तो जंपइ तुच्छमई तं न पेच्छसि किमेयं । अहमेगगी एयं
गरुयकुडुवं सिरी जाइ ॥ ८९ ॥ इय जंपिय सेट्टिसयासओ सिरिं विमइउं ठिओ भिन्नो । कारावियं च गरुयं
तिभूमियं तेण धवलहरं ॥ ९० ॥ पारद्धो ववहरिं जलथलमगेसु भूरिदविणे स । बुद्धिमित्तं दितो दवं पडुयाइवी
न लेइ ॥ ९१ ॥ तुरयारूढो माऊरुत्तअंतरियतरणिसंतावो । हिंडइ वणिउत्तवूहावेडिओ रम्मसिंगारो ॥ ९२ ॥ नो
सयणाण न भित्ताण नेव लिंणीण जायगाणवि नो । वियरइ कस्सइ किंपि हु दिंतिं दइयंपि वारेइ ॥ ९३ ॥ कूडब-
वदारेहिं हृत्यं विय वच्छ गच्छिही लच्छी । इय सेट्टिपत्तो भणइ ताय सगिहं विचिंतेसु ॥ ९४ ॥ गहियघणाओ
लोगोवि किंपि से देइ सेट्टिलज्जाए । “दूरे गुरुण आणा तेसिं लज्जावि सिरिज्जणी” ॥ ९५ ॥ देव(ब)वसेणं कालक्कमेण
पंचत्तमुवगओ सेट्टी । पच्छा सो निसंको अहियअरे कुणइ ववहारे ॥ ९६ ॥ अह तस्स असुहवसओ सिरी समग्गवि
नासिं लग्गा । मग्गिजंतो लोगो दुवयणे देइ नो दवं ॥ ९७ ॥ देसंतरेसु वि ठिया वणिउत्ता जायभूरिघणलाहा । दिट्ठावि
लोहिउमलं लच्छी किं नो सहत्थगया ॥ ९८ ॥ सो निक्खिणिही नूणं दाहइ न कयाइ मं सुपत्ताण । इय भीयव
सिरी भिन्नपवहणा सायरे मग्गा ॥ ९९ ॥ देइ न कणंपि कस्सइ एसो बहुधन्नसंगहपरोवि । इय भाविअ कुविएणव
दड्ढा जल्लेण कोट्टारा ॥ १०० ॥ नवि जाओ नयमोगो किमस्स ता निरुवयारिद्विणेण । इय चित्तिज्जणव तयं
नीयं खत्तेण चोरेहि ॥ १ ॥ इंगलच्चिय जाया धणे निहाणीकए कुक्कम्मवसा । अवरद्विज्जणासा कुओ करत्थे विण-

स्सन्ते ॥ २ ॥ सयमवि दिन्नं न लहइ जणाओ कत्तो कलंतरधणं सो । “उयरद्वियतणयासा का अंगुलिलगगसुयमरणे” ॥ ३ ॥ मग्गियजणनीयाइं न मग्गमाणोवि लहइ रित्थाइं । नियवत्थुंपि न लब्भइ जत्थ कहिं तत्थ परवत्थुं ॥ ४ ॥ ससुरेणावि विइन्नं बहुवाराओ धणं तयंपि गयं । “पत्तावि सिरी जिह्जइ नूणमकल्लाणकलियाण” ॥ ५ ॥ किं बहुणा संजायं दब्बं सबंधि से कहासेसं । तो दहुं सीयंतं कंतं कंता विहियविणया ॥ ६ ॥ उल्लवइ दइय तइया न कयं कस्सावि जंयियं तुमए । जइवा दइवाभिहयाण होइ एवंविहकुबुद्धी ॥ ७ ॥ इय जंपिऊण तीए ववहारकए समप्पियं पइणो । निययाभरणं अहवा “पइभत्ता होइ कुलकंता” ॥ ८ ॥ तंप्पि हु कइवि हु दिवसेहिं पेसियं तेण पुबधणमग्गे । अहवा जं जं खिप्पइ हुयासणो दहइ तं तंप्पि ॥ ९ ॥ पच्छारच्छाइंवि विक्किऊण सुत्ताइं तेण सबाइं । आयविहूणे वित्ते वइल्लमाणे कुओ रिद्धी ॥ १४१० ॥ घरहट्टोवरि गहिऊण कंचणे भक्खियंमि तेसिंप्पि । सुक्को अहव अभग्गाण जाइ पिउदिन्न-मवि रज्जं ॥ ११ ॥ जोसिं देयं दब्बं न तेसि पासाउ लहइ अवरत्थ । गंतुं तो तत्थेवय निवसइ अचंतदोगच्चो ॥ १२ ॥ जो वसिओ धवलहरे विचित्तचित्ते तिमूप्पिए सययं । सो वसइ ताव जलसीयधूमिओ जलकुडीरम्मि ॥ १३ ॥ जो मंदपवणपरितरलसिक्किरिच्छायमस्सिओ भमिओ । विक्कयक्कजे सो भमइ कट्टहारकयच्छाओ ॥ १४ ॥ जो संसुत्तो दोलाचलंतपल्लंकतूल्यासु सया । सो सुयइ दब्भसत्थरयमुवगओ बाहुउवहाणो ॥ १५ ॥ पडिजइरंवेरहिं सिंगारो जेण सबया विहिओ । बहुछिदंडियाइं परिहइ सो मलिणवत्थाइं ॥ १६ ॥ जो गरुयतुंगसुहासणेसु आरुहिय सबया भमिओ । परियडइ फुडणखंजंतपयजुत्तो सोणुवाहणओ ॥ १७ ॥ नवरं इस्सरियम्मिव दारिदेवि हु पिया न तं सुयइ । “उदयक्खएसु दइए समचित्ताओ सईउ सया” ॥ १८ ॥ अइसुहिओ होउं सो अचंतं दुहभरं समणुहवइ । पाविय संपुन्न-सिरी किं खंडिजइ नय मयंको ॥ १९ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि वीवाहे सेट्ठिपुत्तकत्राए । पारळे नयरजणो निमंतिओ

भोयणनिमित्तं ॥ १४२० ॥ सो चित्तइ अल्ल निमंतणं इहागच्छिही अओ मज्झ । वत्तणकल्ले जुल्लइ खडाइआह-
रणगमणं नो ॥ २१ ॥ गेहेच्चिय अच्छिस्सं जमिह निमंतयनरो खडफ्फुडिही । इय चित्ततो तत्थ द्विओ दिणप्पहर-
जुयलं जा ॥ २२ ॥ मज्झंदिणेवि जाए जा को वि न से निमंतओ पत्तो । ता परिभावइ एवं नाहं नाओ गिहटि-
ओत्ति ॥ २३ ॥ ता जामि तत्थ सयमवि नियघरगमम्मि मज्झ का लज्जा । अगयस्स पुणो सयणा लहु रुसिस्संति
जा जीवं ॥ २४ ॥ इय कहियं कन्ताए सा जंपइ नाह मोहमूढोसि । धणिणो सहोयेरेणवि दरिदिणा किं न लज्जन्ति
॥ २५ ॥ नाह कुचेओत्ति दरिदिओत्ति ववहारकरणअखमोत्ति । न निमंतिओ धुवं कुणसु नियमणे मा तुमं भंति
॥ २६ ॥ न कयाइ मज्झ भणियं तए कयं कुणसु संपयं पि तुमं । जं पडिहाइ मणे तं जइ जंपिय सा ठिया मोणे
॥ २७ ॥ इय संगयं पि भणिरि अवगंनिय तं गओ स वीवाहे । “अहव्ह हियाहियविसये कुओ विवेओ जडमईणं”
॥ २८ ॥ अब्बुक्खणमद्दासणउववेसणपायसोहणप्पमुहं । विरइज्जंति पेच्छइ पडिवत्ति ईसरजणस्स ॥ २९ ॥ तंचो-
लकरे विरइयविलेवणे पत्तपट्टउयवत्थे । मुत्तरे पलोयइ निगच्छन्ते धणडुनरे ॥ ३० ॥ अब्बुक्खणं पि न ल्हइ आस-
णयसोयणाइ कत्तो सो । तो तंवकडाहिजलेणब्बुक्खिय धोयए णए ॥ ३१ ॥ उवविट्ठो पडिवालइ आमंतणमत्तणो
निरिक्खइ य । वाहरिय गोरवेणं भोइज्जंतं परजणं पि ॥ ३२ ॥ विहिय अदिस्सीकरेण तस्मि दिट्ठिं पि न खिवए
कोवि । दूरे चिट्ठउ पक्कं न वंजणप्पमुहभोजं से ॥ ३३ ॥ तस्स तह संठियस्सवि दिणमद्धप्पहरसेसयं जायं । भोजत्थे
निवसन्ति पेच्छइ पज्जंतपंतिं सो ॥ ३४ ॥ चित्तइ य किं अवन्ना इमाणमहवाउलतमच्चंतं । जं मह नियडा भोयणकल्ले
नीया न चैव अहं ॥ ३५ ॥ ता जामि सममिमेहिं मुंजामि निए गिहंमि का लज्जा । एवं परिभावन्तो पत्तो नर-
पंतिमज्झंमि ॥ ३६ ॥ दोपासरंदमद्दासणोवविट्ठाण ईसरनराणं । मज्झे उवविट्ठो गहियभायणो विट्ठरे नीए ॥ ३७ ॥

पित्तलपङ्क्तिगहद्विगुणपरियलजुयलमिलणअंतरियं । भूमिगयभायणं से नयणामगोयरं जायं ॥ ३८ ॥ खज्जरद-
कखदाडिमअंबयखारफसकराईयं । दिन्नं अन्नाण न दायणेण से भायणं दिट्ठं ॥ ३९ ॥ तह सालिसूवसालणयसप्पि-
पकन्नपेयपगुहाण । किंपि न विखत्तं अदिस्सभूमितलमुकथाले से ॥ १४४० ॥ दट्ठुण दहिविमिस्सं मुंजंतो फुरियगरुय-
अवमाणो । सिरइयभायणो तेसिमगओ नच्चिरो पढइ ॥ ४१ ॥ “हे दारिद्या नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः । जग-
त्पश्यामि येनाहं न मां पश्यति कश्चन” ॥ ४२ ॥ एए मह जणयसहोयरस्स पुत्तन्ति भायरो मज्झ । भाउज्जायाउ इभाउ
भाइणिज्जा इमे सवे ॥ ४३ ॥ जह मंतंतयिज्जाइहिं सिद्धा हवन्ति अदिस्सा । जाणह तहा ममंप्पि हु नूणं दारिद-
सिद्धोत्ति ॥ ४४ ॥ जइ होमि न सिद्धोहं ता दिट्ठो किं निएहिं वि इमेहिं । सयणेहिं सवेहिं वि भोयणकरणेवविट्ठो वि
॥ ४५ ॥ सोजंनं सुहिभावं सयणत्तं परिचयं च दक्खिन्नं । कुणइ धणवुण ससं दरिहिणा नेव सधजणो ॥ ४६ ॥
जे भोयणवत्थाइववहोरे काउमक्खमा नूणं । जह मह तह अन्नाणवि न कीरए कावि पडिचत्ती ॥ ४७ ॥ सुद्धा जाई
सधुत्तसं कुलं निम्मला कलाओवि । धणरहियाण न किंचिवि सयावि जेणेरिसं भणियं ॥ ४८ ॥ “जाई कुलं कलाओ
तिन्निवि पविसंतु कंदरे विवरे । अत्थोच्चिय परिवडुव जेण गुणा पायडा हुंति” ॥ ४९ ॥ केणावि कारणेणं न इमेहिं
पलोइतो इय भणंतो । नीहरिउं सो अवमाणदूमिओ नियगिहं पत्तो ॥ १४५० ॥ पिय मइ वारंतीएवि न ट्ठिओ ता एत्ति-
यस्स जोगो तं । इय जंपिरीए भज्जाए भोइओ सीयरब्बाइ ॥ ५१ ॥ दारिदेणं दूरं दूमिज्जंतस्स तस्स वच्चन्ति । दिवसा
विसायवसयस्स अन्नाया सो गओ रजे ॥ ५२ ॥ पेच्छइ य तरुछायाए संनिविट्ठे मुणीसरे संते । सिद्धंतसुंदरक्खे
दक्खे सिक्खाए साहूण ॥ ५३ ॥ जे समयगंगा इव सहंति आथारवाणसमवाया । विन्नाया धम्मकहापणहवायरण-
परमाया ॥ ५४ ॥ धणनाससयणपरिहवट्ठुसहदोगच्चदूमियगणो सो । ते दट्ठुण सुहोदयवसओ तेसि गतो पासं ॥ ५५ ॥

भक्तिभरनिम्भरंगो पणमिय पयकमलमिलियभालयलो । उवविट्ठो जंपइ पहु गिहिजोगं कहह मह धम्मं ॥ ५६ ॥
आहू पहु आयन्नसु नारयतेरिच्छनरसुरविभेया । भवइ भवो चउभेओ दुहमेवय चउसुवि गईसु ॥ ५७ ॥ पाणि-
वहएसुहमहापावा निवडंति पाणिणेगे । नरएसु तेसु वि सहंति वेयणं विरसमारसिरा ॥ ५८ ॥ तिरियनरभवंतरिया
पुणरुत्तणुभूयसन्नरयदुहा । बहुसो वि तिरिच्छंते सहन्ति ससुवज्जिऊण दुहं ॥ ५९ ॥ सासयविरोहवहवाहदो-
हमंसासिसारणाईणि । असुहाइं समणुहविऊण केवि अजंति मणुयत्तं ॥ १४६० ॥ तम्मि वि धम्मविरहिया दीणा दारिद-
दुहभरकंता । विहलीहूयमणोरहमाला परिभवपयं हुंति ॥ ६१ ॥ देवावि परपेसत्तुसहईसाविसायवियलंगा । अत्ता-
णामकयसुकयं निंदंता दुहमणुहवंति ॥ ६२ ॥ एवं पावंति सुहं न गइचउकेवि धम्मपरिहीणा । धणवज्जियव विवणीए
नियमणोभिमयवरवत्थुं ॥ ६३ ॥ ता धम्मोच्चिय कज्जो दुविहो सो साहुगिहिविभेएहिं । पढमे दसेव भेया भेया
वीयम्मि वारस उ ॥ ६४ ॥ संमत्तजुया दोन्नवि दिति सिवं तं पि मुणसु संमत्तं । गयरायदेव-निगंथसुगुरु-नवतत्तस-
इहणा ॥ ६५ ॥ एयरं पि असत्तो धमं काउं करेइ भावेणं । अट्ठप्पयारपूयं जिणाण जं सा वि सिवजणणी ॥ ६६ ॥
नेवज्जुसुमअकखयदीवयफलसालिधूववासेहिं । इय अट्ठविहा पूया कया जिणिंदाण भवहरणी ॥ ६७ ॥ अट्ठवि काउ-
मसत्तो सत्तो जइ कुणइ वासपूयं पि । तित्थेसरस्स ता जाइ तस्स पावं जओ भणियं ॥ ६८ ॥ धणसारहरिणनाही-
सुयंधवरवासखेयपूयमिसा । जिणपवणसंगमेणव पावरयं दूरसुइइ ॥ ६९ ॥ ता धम्मसील पत्तं मणुयत्तं मा सुहा तुमं
नेसु । ससुवज्जसु वासेहिं वि पूइसु जिणं परमपुन्नं ॥ १४७० ॥ इय सोउं सो सद्धम्मदेसणं सूरिणो नमिय भणइ । पहु
मह मंहापसाओ कओ इमं साहिउं धम्मं ॥ ७१ ॥ नूण निरीहा तुब्भे परोवयारेक्खवद्धवावारा । जं मह दरिदियस्सवि
एवं धम्मं समाइसह ॥ ७२ ॥ इय जंपिय पणयगुरु गहियतणाई गओ गिहे नियाए । कहिओ य भारियाए, पूयाफल-

सवणयुतौ ॥ ७३ ॥ तीव्रतमहन्मफलं पिय तुहः सांनि कुणसु ता भगं । जेण न भवतरेणि दु रिउंणणा गरिशी दोइ ॥ ७४ ॥ देणुराभिगं फाहं जंयेडं गंणियावग्गि गओ । देण भारयसुलेणं गरिया ससुतगा वासा ॥ ७५ ॥ सतो धियज्जन्तारनियंभिजोहमभविपब्भारो । जिणमंदिरंमि चलिओ रयणमणं तग्गि पत्तो य ॥ ७६ ॥ सच्छस्सफालिपयी-
हरदेणिलपरारिया सियघसणा । जग्गि सुरेहिंति नज्जइ सग्गिद्वयं गयणंगंय ॥ ७७ ॥ कंहेहितागालवणेसु जस्सा पविसंति रयणकरदंढा । रागहेरावणाररयणकुणिणरायणाव ॥ ७८ ॥ तो सो पहिट्ठचित्तो तग्गि पविट्ठो विरिह-
जिणभयणे । उवरान्ताफन्तरुवं णवल्लोयइ उवसइजिणनाहं ॥ ७९ ॥ तो निशुतंताणुगाणपरायसमुल्लयकलिगतजुज्झी ।
आणंदंजुजलभरपक्खालिगयणवच्छयलो ॥ १४८० ॥ उल्लसियमणो गियरान्तलोयणो कुणइ सुरदिवारोदिं । पूयं पणुणो निगजम्मासहल्यं मज्जमाणो सो ॥ ८१ ॥ असरियाणुगाणयरो पुणरुतं भूगितलभिलियभालो । पणगिय पलोइय चिंद
जिणेसरं आगतो सग्गिदे ॥ ८२ ॥ फहियं णियाए वासेहि जिणयरो गूहओति हो सति । बंभइ अणुवगपुन्नं पसंरा-
माणी इगं णट्ठं ॥ ८३ ॥ फइयाति मेवि निययाअंतगणुसरिय गरिय जागाइं । अमरतेणं आरणकप्पे सुररायरादि-
साइं ॥ ८४ ॥ एगीसरागाराइं भुणुं सुरलोयलच्छिचिच्छइं । रिद्धायणजिणमणकरणजियसुकयसंभारा ॥ ८५ ॥
नधिय तओ वसुह्मासारपट्टणे किच्चिबंभुरनियस्स । जाओ धणावहसुरो पुत्तो असमाणगुणजुतो ॥ ८६ ॥ भणवइ-
अमरोवि पुणो उदयाणंदे पुरग्गि लप्पणा । उदियप्पयावरओ कज्जा उदयस्सिसरी नाग ॥ ८७ ॥ हुंतो धं पुवभवे तुह
जणओ गरिय बारसमकप्पे । बावीरारायराऊ संजाओ भासुरो अमरो ॥ ८८ ॥ तं जोवणगणुपत्ता पत्ता कीलाकए
इणुज्जाणे । पुवविदेहा चलिओ बंधिय जंगमजिणिदिं हं ॥ ८९ ॥ माइ दिट्ठिपदे पत्ता उल्लसिओ पुवभयभवो नेहो ।
नाया य ओहिणा पुवभवसुया तं तओ ज्जाति ॥ ९० ॥ कयनरमऊररूपेण ग्ह्य उववेसिडं गाइ कुमरि । तुह पुवभवा

देन्निवि कहिया नियभवदुगेण समं ॥ ९१ ॥ तं सोढं कुमरी जाइसरणसच्चवियपुब्वभवचरिया । सिरिगंधवंधुरस्मि
अणुरत्ता पुब्वभवदइए ॥ ९२ ॥ तो इत्ति नरमऊरो चलकुंडलहारकंठकयसोहो । जाओ अमरो बहुरविपयावप-
न्भारदुनिरिक्खो ॥ ९३ ॥ तो सा कयप्पणामा पूयइ तं सुरहिपरमवत्थूहिं । “इयरस्मि वि कुलवाला विणयवई किन्न
जणयंमि” ॥ ९४ ॥ जंपइ य ताय तुमए जह कहियं तह मएवि सच्चवियं । पुब्वभवदुगचरियं सिविणे दिवसाणभूयं व
॥ ९५ ॥ ता तुमए मह कहिओ जो पुब्वभवुन्भवो पियओ कुमरो । इण्हिपि तं वरिस्सं “सईओ न नरंतरमईओ” ॥ ९६ ॥
आह सुरो रिद्धीकरी पूया अणुमोइयावि तुह जाया । फलइ वहुं शेवंपिहु वीयं ववियं सुमूमीए ॥ ९७ ॥ तो दिट्ठपच्चया
तं करेज्ज धम्मज्जमं सया वच्छे । “निच्छइए कल्लणे न पमाओ जुल्लए जइवा” ॥ ९८ ॥ एवं धम्मवएसं दाढं सहसा
तिरोहिओ तियसो । कुमरी वि गंधवंधुरकुमरे रत्ता गया सगिहे ॥ ९९ ॥ न सुणइ छुहं न पावइ निहं न वियाणए
तिसं बाला । जलणज्जालजलियं व विरहविहुरा वहइ देहं ॥ १०० ॥ मन्नइ वीयं व सा चित्तसालियं मुम्मुरंपिव मुणालं ।
आभरणं दुम्मरणं पावपूरं व कप्पूरं ॥ १ ॥ एवमवत्थं कुमरिं दइण सहीओ तीए नरवइणो । साहिंति पुब्वभवभवद-
इए रत्ता तुह सुयत्ति ॥ २ ॥ नाऊण निवेणवि सहिमुहेण दुहियाए पुब्वभवदइयं । कन्नपि जाणिढं पियविओयसहणा-
सहं दूरं ॥ ३ ॥ तवेलंचिय मंडलियमंतिसामंतथाइसंजुत्ता । बलकलिया पट्टविया संयवरा कन्नया तुज्झ ॥ ४ ॥ तीए
अहं सत्थकहाकवविणोएसु सवया सचिवो । तो तं मोयावेचं तं वद्धाविजमिहं पत्तो ॥ ५ ॥ चउपंकदिवसमञ्जे सावि हु
तुह पुब्वभवपिया एही । इय विन्नविढं कुमरं कीरो मोणं समल्लीणो ॥ ६ ॥ तं सोढं जाइसरणनायनियपुब्वभवदुगो
कुमरो । कुमरिं पइ जायदढाणुरायवसपरवसो जाओ ॥ ७ ॥ चितइ तइया दइया निचंपि हियं पयंपमाणीवि । न
मए तिणं व गणिया अहो अहंकारमुढेण ॥ ८ ॥ दुहंतोवि दरिहोवि दुम्महोवि हु सईए तीए अहं । ईसरसेट्टिसुयाएवि

पुत्रभवे नेव परिहरिओ ॥ ९ ॥ ताहमवि पुत्रभवभवकतं मोचुं न काहमन्नमियं । रजिज्जइ इहभविएवि किं न परभवभवे-
रत्ते ॥ १५१० ॥ इय परिभाविय विज्जावणठ नियसुद्धियाउ कीरस्सा । निक्खिवइ चरणजुयले कंठमि पुणो रयणकडयं
॥ ११ ॥ भणइय कीर तुमं उभयहावि सखणो कहेसि कल्लणं । नहि निग्गुणण एवंरुवपवित्तो हवइ नियमा ॥ १२ ॥
ता तं गंतुं कुमरीए कहसु कीरेस इय मह पइत्रं । तीए जहा संपज्जइ मह विसए मणसमाहाणं ॥ १३ ॥ आएसोत्ति
भणित्ता तयणु सुओ उड्डिऊण संपत्तो । कुमरीपासे सोऊण तं ठिया सावि संतुडा ॥ १४ ॥ कुमरवयंसेहिं इमं सबंभि हु
साहियं नरिदस्स । तं सोढं तेणुत्तं किमजुत्तमिमस्मि कल्लणे ॥ १५ ॥ जं गुरुयरायकुमरी सयंवरा एइ गुरुनिवसुयस्स ।
इहभवभववावि किं पुण भवन्तरुपत्तअणुराया ॥ १६ ॥ इय जंपिय कारविया पुरसोहा राइणा पहिट्ठेण । मोचुं वीवाहमहं
निहीण परमूसवो नन्नो ॥ १७ ॥ पच्चोणीए तीए पेसइ सामन्तमंतिमंडलिए । “नोरवमियरेवि गुरू विरयइ किं नोणुरायपरे”
॥ १८ ॥ आवासदाणसम्माणकरणससुहपसागयं तीसे । विहियमियरोवि अतिहि पुज्जो किं पुण नरिंदसुया ॥ १९ ॥
उत्तमलग्गे कुमरो कुमारिं वीवाहिओ नरिंदेण । कुलजुड्डिकरे कज्जे किं कोइ पमायमायरइ ॥ १५२० ॥ तीए सह विसय
सोक्खं माणइ कुणइ य सुधम्मकम्मं सो । इहलोइयपरलोइयकज्जेसु समुज्जया गरुया ॥ २१ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि
कुमरं रज्जंमि ठविय नरनाहो । कयपबज्जो संजायकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ २२ ॥ नवनिवई नीईए पालइ रज्जं अभि-
इवइ दुट्ठे । सिंहे पूयइ मन्नइ महायणं गुणिगुणे थुणइ ॥ २३ ॥ एवं निरवज्जसरज्जकज्जकरणुज्जयस्स नरवइणो ।
जंति दिणाइं दिणमणिकरभरसरिसप्पयावस्स ॥ २४ ॥ जाओ कयाइ देवीए तीए सुहलक्खणो सुओ तस्स । काढं
वद्धावणयं नामं गुणवंधुरोत्ति कयं ॥ २५ ॥ लालिजंतो धाईहिं वड्ढिओ जाव पंचवरिसाइं । परिपाढिओ य अज्झा-
वयहिं सद्वाउ वि कलाओ ॥ २६ ॥ पत्तो य जोव्वणं तरुणकामिणी नयणमणहरं रंता । परिणाविओ नरिंदाण रम्मरूवाओ

कन्नाओ ॥ २७ ॥ दहुं तं रत्नमहाभरधरणसमत्थमुत्तमे लग्ने । अहिसिंचइ नियरत्ने राया रिद्धिप्पवंधेण ॥ २८ ॥
काराविज्जण जिणइंमंदिराईं गिरिंदरुंदाईं । सूरीहिं पइड्ढाविय मणिमयतिथेसरे तेसु ॥ २९ ॥ सिद्धंतपोत्थयाईं लिहा-
विं पूइउं च सिरिसंघं । घोसाविउं अमारिं मोयाविय सबगुत्तिनरे ॥ १५३० ॥ आरुहिय रयणसिवियं दिंतो दाणाईं
दीणदुत्थाण । गुरुरिद्धीए गंतूण सुगुरुपासंमि पवइओ ॥ ३१ ॥ अहिगयसुयसब्भावा पाउब्भूयप्पभूयसंवेगो । निम्मू-
लुम्मूलियघाइकम्मवसपत्तनवनाणो ॥ ३२ ॥ महुरस्सरसेसणपडिवोहियमूरिसव्वसंधाओ । संपत्तो सो सासयसोक्ख-
समिद्धीए सिद्धीए ॥ ३३ ॥ एयस्स वासपूया जह जाया सिद्धिसोक्खसंजणणी । तह अन्नस्सवि जायइ जइयव्वं ता सया
तीए ॥ ३४ ॥ ऋ वासपूजा ॥ इय तिहुयणसामिअणन्तनाहहियम्मि अट्ठपूयफले । बहुमाणपसअकलिओ कयंवपरिमल-
महीनाहो ॥ ३५ ॥ ॥ इति श्रीअनंतनाथचरित्रगतपूजाष्टककथानकानि । समाप्तोयं ग्रन्थः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥
॥ श्रीः ॥ यादृशं पुस्तकं वीक्ष्य तादृशं लिखितं मया ॥ हीनाधिक्यैः स्वैर्वर्णैरस्माकं दूषणं नहि ॥ १ ॥ * * ॥

धम्मधरुद्धरणमहावराहजिणचंदसुरिसिस्साण । सिरिअम्मएवसूरीण पायपंकयपरेणेह ॥ १ ॥ सिरिविजयसेणगणहर-
कणिट्ठजसेदेवसूरिजेडेहि । सिरिनेमिचंदसूरीहिं भव्वलोओवएसट्ठा ॥ २ ॥ सयमेव कयाउ अणंतसामिजिणरायचारु-
चरियाउ । पूयट्ठगमुद्धरियं तं नंदउ तिहुयणं जा उ ॥ ३ ॥ पच्चक्खरगणणाए सिलोगमाणेमेत्थ जायाईं । पूयट्ठगम्मि
सयरीसमहियअट्ठारससयाईं ॥ ४ ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं १८७० ॥ छ ॥ श्रीः ॥ * ॥ ॥ श्रीः ॥ * ॥ ॥

ॐ संपादकीय निवेदन ॐ

अनंत कल्याणकारी श्री अनंतनाथप्रभु प्रसादित अतिसुन्दर कथाओंसे युक्त श्री पूजाष्टक पाचकोंके करतमहोत्से समर्पण करते अति आनंद होता है, इस परिणामी प्रेसकापी संग्रह १९९४ में सूरत में श्री वैगार हो चुकी थी, परंतु प्रकाशित करनेका सौभाग्य तो इस वर्ष पंन्यासप्रवर श्री सुमति रिजयजी गणिवर्माविकी प्रेरणा द्वारा इन मुद्दस्योने प्राप्त किया है,

सहायक नाम	शुक्राम	नकल	सहायक नाम	शुक्राम	नकल
शाह रायचंद गुलाबचंद	अच्छारी	२००	शाह धनजी ज्वेरभाइ	चापी	२९
" वलाजी जेताजी	कोपरली	१२५	" नगीनचंद धूठाजी	"	२५
" धनराज शीमचंद	चापी	१२०	" रायचंद प्रागजी	"	२५
" रायचंद घरखचंद	"	१००	" पुनमचंद धीरचंद	"	२५
" छगनलाल प्रेमचंद	"	५१			
" कस्तुरचंद धनाजी	अच्छारी	५१	विद्वाय पापक और व्याख्याता इस ग्रंथरत्नसे अनंतलाभ		
" मगनीराम रामसुख	चापी	५०	उत्तमों इति नाम		
" घरखचंद वालाजी	"	५०			
" नूनीलाल जसरूपजी	"	५०			
" ज्वेरचंद प्रेमचंद	वेगाम	५०			
" कैसरीचंद परागजी	कोपरली	५०			

आ. विजयक्षमाभद्रसूरि

मोरी भेडा (मारगाड)

अक्षयवृत्तीया सं. १९९७

